।। ग्रभ चिंतावणी ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ग्रभ चिंतावणी ग्रंथ लिखंते ||

|| दोहा ||

गुरू सा दाता को नहीं || तीन लोक रे मांय ||
करता कूं सुखराम कह || सतगुर दिया बताय ||१||

सतस्वरुपी सतगुरुके समान ३ लोक १४ भवन तथा ३ ब्रम्हके १३ लोगोमे कोई भी दाता नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है सतगुरुने सतस्वरुप का लोक पकडकर ३ ब्रम्ह के १३ लोक तथा ३ लोक १४ भवनका जो करता है उसेही मुझे मेरे ही घटमे प्राप्त करा दिया ।।।१।।

चवदे तीनुं लोक रे || सब वाँ का धन होय ||
सो करता सुखराम के || गुरां बगसिया मोय ||२||

इस करता का ३ लोक १४ भवन यह धन है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा धनवान करता मुझे सदा के लिये बखसीस मे दिया ।।।२।।

दीया भेद सहेत ले || राम नाम तत सार ||
याँ बिन सब गुण ओर हे || सो सब माथे मार ||३||

सतगुरुने मुझे करता याने केवल रामनाम जो ८४ लाख योनीसे पार होनेका तत्तसार अखंडीत ध्वनी है उसका भेद दिया । इस तत्तनाम के भेद के गुणसे मै होनकाल पार हो गया । इस केवल रामनाम के भेद सिवा अन्य सभी नामो का भेद यह जीव के सिरपर ८४००००० योनी का ४३२०००० सालतक का भारी मार है ।।।३।।

ब्रम्हा बिसन महेस ले || सगत सुन्न अस्मान ||
पाँच तत्त तां सु परे || सो गुर कहया बखाण ||४||

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती तथा पांच तत्व याने आकाश,वायू,अग्नी,जल,पृथ्वी के परे के पराक्रम का जो तत्तसार शब्द है उसका भेद मेरे सतगुरु ने मुझे बताया ।।।४।।

आगे पाछे मधले || जे तिरिया जुग मांय ||
सो मंतर हरि नाम हे || दूजा भरम कहाय ||५||

आज दिनतक मतलब आदि मे बिच मे तथा आजतक जो भी संसार मे से भवसागर से तिरे वह मंत्र हरीनाम है । हरीनाम छोड्के आजदिन तक दुजे सभी मंत्र भवसागर से तिरने के लिये भ्रम रहे मतलब झूटे रहे ।।।५।।

सिव सनकादिक सेंसजी || ध्यावत हे दिन रात ||
सो मंतर हरि नांव हे || सुण सिष मेरी बात ||६||

हे जगत के नरनारीयो इसी हरीनाम मंत्र को शिव,सनकादिक तथा शेषजी ने धारण किया और वे सभी इसी हरीनाम को रात-दिन भजते है यह मेरी बात ध्यान से समजमे लावो ।।।६।।

बेद भागवत पुराण ले ।। साख भरे सब कोय ।।
केवळ सत्त हरि बीज हे ।। दुजी सब बन होय ।।७।।

हरीनाम यही माया के परेके केवलका सत्त बिज याने भवसागर से पार करने का बिज है और अन्य सभी नाम सत्त बिज रहीत नुकसान पहूँचानेवाले जहरीले पौधों के समान काल के मुख मे रखनेवाले है । ऐसा वेद भागवत पुराण ये सभी साक्ष भरते है ।।।७।।

रिष मुनि जोगेसरा ।। हरिजन सिध अवतार ।।
सब बाणी सायद भरे ।। केवळ ब्रम्ह बिचार ।।८।।

ऋषी,मुनी,जोगेश्वर,प्रल्हाद,ध्रुव जैसे हरीजन,सिध्द,अवतार आदि ये सभी अपने अपने बाणी मे केवल ब्रम्ह यही मोक्ष पाने के लिये तत्तसार है यह साक्ष भरते है ।।।८।।

मो कूं गहे समजावियो ।। सतगुर समरथ आय ।।
मै बूज्यो सो सब कयो ।। भर्म न राख्यो मांय ।।९।।

मेरे बुध्दी के समजके बल को समजकर समर्थ सतगुरुने मुझे केवल ब्रम्ह का ज्ञान मुझे समजे ऐसे शब्दो मे समजाया । केवल ब्रम्ह का जो जो ज्ञान मैने पूछा वह सभी ज्ञान भाँती भाँती से बताया और मेरा मायामे राम नही है और काल कैसे रचमच है इसका एक भी भ्रम नही रखा । ।।९।।

तीन लोक निर्णा कीया ।। भाँत भाँत गुर देव ।।
तब मेरा मन समजिया ।। लग्या ब्रम्ह की सेव ।।१०।।

मेरे सतगुरु ने ३ लोक मे काल कैसे है और सतस्वरुप ब्रम्ह काल से मुक्त कैसे है यह निर्णय समजने का ज्ञान भाँती भाँती से मुझे समजाया तब मेरा निजमन माया,होनकाल ब्रम्ह से निकलकर सतस्वरुप ब्रम्ह के भक्ती मे भिना ।।।१०।।

जां दिन सुं सिवरण लग्या ।। निस दिन धारो धार ।।
चेतन हुवा पल दोय में ।। जागी नाड बिचार ।।११।।

जिस क्षणसे मैने केवल ब्रम्हका नामका धारोधार स्मरन करना शुरु किया उसके कुछ ही पलो बाद मेरी नाड नाड याने रोम रोम नाम से जागृत हो गई ।।।११।।

सब किमत इण सबद की ।। कहाँ लग कहुँ बणाय ।।
पख च्यारा जुग अेक में ।। गिगन पहुँता जाय ।।१२।।

नाड–नाड,रोम–रोम जागृत होना यह सब हिकमत इस रामनाम की है । यह हिकमत मे (मायाके)शब्दो मे वर्णन नही कर सकता । रात–दिन स्मरन करने से मै इस हिकमती शब्द के पराक्रम से बारा साल दो महिने मे गिगन जा पहुँचा ।।।१२।।

जब हम चडया अस्मान में ।। देख्यो जुग बिचार ।।
सब नर बूहा जाय हे ।। मोहो माया की लार ।।१३।।

मेरे गिगन मे चढने पर मुझे सभी संसार के लोग मोहमाया मे बहे जा रहे और काल के

मुख मे पड रहे यह प्रगट दिखा ।।।१३।।

इतनी हम कूं सूजगी ।। अरस परस दिल मांय ।।
बिन भगती जुग जीव सो ।। नरक कुण्ड मे जाय ।।१४।।

गिगन मे चढ जाने पे मुझे अरस परस याने साफसुत्रा इतना जरुर सुजा की केवलब्रम्ह के भक्ती के सिवा सभी जगत के जीव होणकाल के महादु:ख के कुंड मे जा जाकर पड रहे है । ।।१४।।

सुण लीज्यो नर नार सो ।। मैं कहुँ दुख लगाय ।।
हर लेखा तब मांगसी ।। काहा कहो जे जाय ।।१५।।

हे जगत के सभी नर नारीयो,मै दु:खीत होकर तुम्हे पुछ रहा हुँ की,जब तुम्हारा अंतकाल आयेगा,चित्रगुप्त लेखा जोखा जमराज को सौंपायेगे तब काल से मुक्त होनेवाली हरी की भक्ती नही की इसका क्या जवाब दोंगे ? ।।१५।।

जिण कारण हरि भेजिया ।। दीवी मिनखा देहे ।।
से बायक क्युँ भूलग्या ।। या मुख पडसी खेहे ।।१६।।

हरी ने तुझे काल के मुखसे निकलने के कार्य के लिये मनुष्य देह दिया और तुझे मृत्युलोक मे भेजा । तू ऐसा भारी मनुष्य देह को काल से मुक्त होने के हरी के चाहना के बचन भुलकर उलटा काल के मुख मे ले जानेवाली माया मे लगाया । इस हरी के चाहना के बचन भुल जाने से तेरे मुख मे ४३,२०००० साल तक ८४,००,००० योनी मे दु:खो की धुल पडेगी ।।।१६।।

धरम राय दरबार में ।। तोय सुणाया बेण ।।
सो बायक जड भूल के ।। क्युँ कर रहयो केण ।।१७।।

धर्मराज के दरबार मे तुझे मनुष्य देह देने के पहले जो बचन समझाये थे,वे बचन भुलकर तू मन से ही माया की करणीयाँ क्यों कर रहा है ? ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने जीव को कहाँ ।।।१७।।

दु:ख पावेगो प्रणियाँ ।। लख चोरासी मांय ।।
हर को खूनी ठेरसी ।। जुग जुग गोता खाय ।।१८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजकहते है,हे प्राणीयाँ इस भूल के कारण हर का खुनी ठहरायेगा और ८४००००० योनी में युगानयुग याने ४३२०००० साल तक गोते खायेगा और अनेक प्रकार के दु:ख पायेगा ।।।१८।।

शिष वायक ।।

जब गुरूदेव कूं बूजियो ।। अति लघुता सुं आण ।।
हर दरगा में कोल हुवा ।। बिध बिध कहो बखाण ।।१९।।

यह सुनकर शिष्य ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको अती नम्रता से पुछा की मनुष्य

देह मिलने के आदि हर दरगा मे जो करार हुवा उसका बिधी बिधीसे वर्णन करके मुझे समजाईये । ।।१९।।

भेद सबे हम भूलग्या ।। कोल बचन सब कोय ।।
तम सम्रथ हो गुरदेवजी ।। बरण बतावो मोय ।।२०।।

मैने हर दरगा मे जो करार किये थे तथा वचन दिये थे यह मै भूल गया । आप सतगुरुदेवजी मैने क्या करार किया तथा वचन दिये यह बताने के लिये आप समर्थ हो इसलिये आप मुझे भाँती भाँती से वर्णन करके समजावो ।।।२०।।

गुर वायक ।। छंद उधोर ।।

हे सिष तूं सुणो हित्त चित लाय ।। जद ओ कोल कीनो जाय ।।
करडो कोल ओ तम कीन ।। रे सुं राम सूं लव लीन ।।२१।।

हे शिष्य तूं ने हर दरगा मे जो करार किया था वह करार तुझे बताता हूँ वह तू प्रिती से चित्त देकर सुन । बहुत कड्क करार तो तुने यह किया था की मै सदा के लिये राम नाम से लिव लगाकर लिन रहूँगा ।।।२१।।

रत्त कर भगत कर सुं राम ।। सत्त अब मेल जुग मे शाम ।।
मिनखा देह दीजे मोय ।। जद मैं भगत कर सुं जोय ।।२२।।

हे श्याम,मुझे मनुष्य देह मिलते ही मै रामनाम मे रचमच होकर रामनाम की भक्ती करुँगा । ये मेरे वचन सत्य मानकर मुझे मृत्युलोक में भेजो । और इसलिये मनुष्य देह दो । यह मनुष्य देह जब मुझे मिलेगा । तबही मै राम की भक्ती कर पाऊँगा । इसलिये मुझे मनुष्य देह दो ।।।२२।।

तीर्थ धाम हर जिग जाग ।। तपस्या तरक कर सुं त्याग ।।
ताळी नहिं मेटुं तोय ।। मानव देह दीजे मोय ।।२३।।

तिर्थ,धाम,होम,यज्ञ,योग,तपस्या तथा मायावी सभी भक्तियाँ इन सभीसे अलग रहकर सभी का त्याग करुँगा । आपसे जरासी भी ताली नही तोडूँगा इसलिये हे रामजी मुझे मनुष्य देह दो । ।।२३।।

कर सुं जीव दया मैं जाय ।। रे सुं राम सुं रत्त राय ।।
बोलुं साच मुख सुं बेण ।। सब सुं होय रे सुं सेण ।।२४।।

मै सभी मनुष्य देह पकड्कर अन्य सभी ८४००००० योनी के दु:खीत पिडीत जीवोपर दया करुँगा तथा रामनाम से रचमच लगा रहूँगा । मुख से मै सदा सत्य वचन बोलूँगा और सभी से सज्जन याने अपना बनके रहूँगा ।।।२४।।

साची करूंगा नित सेव ।। दिल मे देख सुं सत्त देव ।।
जैसो जीव जुग में जोय ।। हर को रूप जाणु होय ।।२५।।

मै नित्य सच्चे सतस्वरुप देव की सेवा करुँगा और दिल मे जो कल भी था,आज भी है

और कल भी रहेगा ऐसे सत्त देव को देखूँगा । जो संसार मे जीव है उन सभी जीवों के रुप को मै मेरे समान परमात्मा के ही जीव है इस रुप से जानूँगा ।।।२५।।

कर सुं साद गुर की सेव ।। तज सुं राम बिन सब देव ।।
भज सुं अेक अणघड़ नाथ ।। कर सुं सुभ सारी बात ।।२६।।

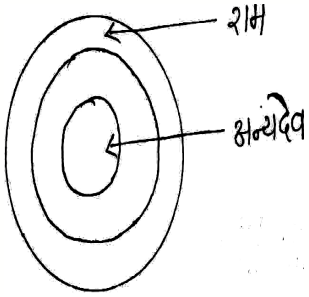

मै रामजीके साधूकी सेवा करुँगा तथा रामजीके सिवा अन्य सभी देवतावोंको छोड दूँगा । मै सिर्फ एक अनघड नाथका भजन करुँगा और रामजी मिलाने की सभी शुभ शुभ बातें करुँगा ।।।२६।।

करणी करूँगा मैं ओर ।। हरजी मेल उत्तम ठोर ।।
गाँ सुं शब्द हरजस जाय ।। दे सुं दान जुग के माय ।।२७।।

मै रामजी पाने की सभी अच्छी अच्छी करणीयाँ करुँगा । इसलिये रामजी मेरा मनुष्य देह उत्तम घर मे याने रामजी प्रगट कर सकुँगा ऐसे घर में दो । मै मनुष्य देह मिलने पे आपके जस के याने पराक्रम के शब्द गाऊँगा और साहेब पाने की चाहना रखनेवाले दु:खीत पिडीत को दान दूँगा याने मेरेसे जितना जादा बनेगा उतनी तन,धनसे मदत करुँगा और ८४००००० योनी की निरअपराधी प्राणी मात्र को खाने-पिने और रहने का दान करुँगा ।।।२७।।

चल सुं नित मारग माय ।। राम भूलुं छिन भर नाय ।।
चल सुं नित मारग राम ।। तज सुं धेक निंद्या काम ।।२८।।

मै आपके बताये मार्गपर नित्य चलुँगा और आपको पलभर भी नही भूलूँगा । मै दुजो का द्वेष, निंद्या ये काम त्याग दूँगा ।।।२८।।

कर सुं भगतरा मै लाड़ ।। तज सुं मद मगजी गाड़ ।।
अब के इसो कर सूं धरम ।। बगसो आगला सो करम ।।२९।।

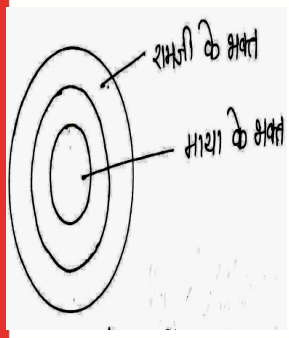

मै रामजीके भक्तोका लाड करुँगा और सभी तरह के मद और मगरुरी तथा सभी तरह का कड्वापन छोड दूँगा । इसबार के मनुष्य देह में मै रामजी आपका धर्म पुरे नियम के साथ पालन करुँगा । इसलिये रामजी मेरे आज दिन तक के निचकर्म माफ करके मुझे मनुष्य देह अच्छे जगह दो ।।।२९।।

सांसो सास सिरजण हार ।। ले सुं नाँव दम की लार ।।
अेकी निमक भूलु नाह ।। हर कूं राख सुं ऊर माह ।।३०।।

मै सिरजनहार का नाम हर दम मे याने हर साँस-उसाँस मे लूँगा । मै हर को हदय मे सदा के लिये रखूँगा,याने मै आपको पलभर भी नही भुलूँगा ।।।३०।।

अब जुग मे मेल सिरजण हार ।। हर भज ऊतरूं ज्युं पार ।।
आतर हुंवो हे बोहो भाँत ।। जलदी करे अरजा खाँत ।।३१।।

हे सिरजनहार अब मुझे मृत्युलोक मे अच्छे जगह मनुष्य देह देकर भेज । मै मनुष्य देह पाते ही हर स्मरन करके भवसागर पार उतरुँगा । इसप्रकार जीव रामभजन करके भवसागर पार करने के लिये अनेक प्रकार से आतुर हो गया और जल्दी-जल्दी बार-बार सिरजनहार से अरज करने लगा ।।।३१।।

भगती करूँगा मै जाय ।। अब तो भेज त्रिभण राय ।।
भज सुं नांव केवळ एक ।। दूजा छाड सुं सो भेष ।।३२।।

हे त्रिभुवन राय,मै तेरी ही भक्ती करुँगा । मै तिर्थ,धाम,होम,यज्ञ,योग,तपस्या तथा मायावी सभी भक्तीयाँ इन सभी से अलग रहकर सभी का त्याग करुँगा । मनुष्य देह पकड्कर अन्य सभी ८४००००० योनी के दु:खीत पिडीत जीवोंपर दया करुँगा । मुख से मै सदा सत्य वचन बोलूँगा और सभी से सज्जन याने अपना बनके रहूँगा । मै रामजी के साधू की सेवा करुँगा और सिर्फ एक अनघड नाथका भजन करुँगा तथा रामजी मिलाने की सभी शुभ शुभ बातें करुँगा । साहेब पाने की चाहना रखनेवाले दु:खीत पिडीत को दान दूँगा याने मेरे से जितना जादा बनेगा उतनी तन,धनसे मदत करुँगा और ८४००००० योनी के निरअपराधी प्राणी मात्र को खाने-पिने और रहने का दान करुँगा । मै आपके बताये मार्गपर नित्य चलूँगा । मै दुजो का द्वेष,निंद्या ये काम त्याग दूँगा । मै रामजी के भक्तो का लाड करुँगा और सभी तरह के मद और मगरुरी तथा सभी तरह का कड्वापन छोड दूँगा । मै सिरजनहार का नाम हर साँस में लूँगा । मै हर को हृदय में सदा के लिये रखूँगा । इसके अलावा अन्य किसी देवता की भक्ती नही करुँगा ।।।३२।।

ओरूं फेर कहिये आप ।। जां को जपुंगा मै जाप ।।
तेरा बचन टारूं नाह ।। अब तुं मेल जग के मांय ।।३३।।

ये सभी पक्के वचन मै आपको देता हूँ । इन वचनोमें जरासी भी कसर नही रखूँगा यह विश्वास करकर मुझे मनुष्य देहमे अच्छे जगह भेजो । निश्चित ही मै मनुष्य देह पाते ही एक केवलनामका भजन करुँगा और अन्य मायाके नाम अभीतक हर मनुष्य देहमे जो धारन करते आया था,वे सभी त्याग दूँगा । हे सिरजनहार इसके परे और भी कुछ कहना है तो मुझे कहीये मै वह जाप जपूँगा और उन नियमो से रहूँगा । अभीतक मैने मनुष्य देह पाकर तेरे बचन टालते गया ऐसा मै इस वक्त नही टालूँगा,इसलिये अब तू जल्दी से जल्दी मुझे जगत मे मनुष्यदेह देकर भेज ।।।३३।।

कीया कोल बोहो इण रीत ।। हरजी करो मेरी चीत ।।
मै तो दुखी हुँ अब मेल ।। झगड़ो करूँगा नहिं झेल ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्य को कहाँ की इसतरह से जीव ने हर के साथ ऐसे बहुत से करार किये और हरजी को विश्वास करने को कहा । मै बहोत दु:खी हूँ अब मुझे भेजो । मै जाकर किसीसे किसी प्रकार का झगड़ा नही करुँगा तथा दुसरो के लिये

झगडा भी मोल नही लूँगा ।।।३४।।

तन मन अरप दियो तोय ।। मुख सूं बोल कहिये मोय ।।३४(२)।।

मैने मेरा निजमन और मिलनेवाला मनुष्य तन मिलने के पहले आपको आजही अर्पण कर दिया हूँ । अब हरजी मुझे मनुष्य तन अच्छे जगह पे दे रहा हूँ करके मुखसे बोलकर कहो ।३४(२)।।

दोहा ।।

धरम तब बोलिया ।। सुणो जीव अे बेण ।।
राम बिना संसार मे ।। नही तमारा सेण ।।३५।।

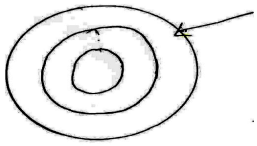

हर के बचनो को ध्यान मे रखकर धर्मराय ने जीव को समजा के बोला की, हे जीव, इस संसार में रामजी के सिवा तेरा हितेषी कोई नही है ।।।३५।।

मै भेजुं हुँ जुग में ।। सुणो बेण अे आय ।।
बिन भक्ति मै नाख सुं ।। फेर नरक के मांय ।।३६।।

हर के कृपा से मै तुझे मनुष्य देह का चोला देकर जगत मे भेज रहा हूँ । मेरे बचन अच्छे ध्यान मे रख । मनुष्य देह मे भेजने के पश्चात रामनाम की भक्ती नही की तो मै हर के आज के आदेश से तुझे नरककुंड में डालूँगा ।।।३६।।

शिष वायक दोहा ।।

जब सतगुर कुं सिष कहत हे ।। दया करो गुर देव ।।
ग्रभ वास मे जीव का ।। भिन भिन कहो दुख भेव ।।३७।।

हर हुकूम से धरमराय ने जीव को मनुष्य देह दिया । मनुष्य देह देवतावों के तेजपूंज के काया के समान एकदम नही बनता । यह देह प्रथम गर्भ में बनता फिर जगत मे प्रगट होता । गर्भ मे जीव नही डाला तो यह मनुष्य देह बनता ही नही । शिष्य सतगुरु देवको ऐसे गर्भवास मे जीव को भाँती भाँती के क्या क्या दु:ख पडते ये दया करके शिष्य बताने को कहता ।।।३७।।

गुर वायक ।। छंद ।। उधोर ।।

हे सिष सुणो हित चित लाय ।। अे दुख ग्रभ का हे माय ।।
तो सुं कहुँ सो सुण अेह ।। दुख अे जीव पावे देह ।।३८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्य को बोले की हे,शिष्य तुम प्रिती से चित्त लगाकर सुनो । जीव को गर्भ मे देह बनाते वक्त जीव पे क्या क्या दु:ख पडते ये मै भाँती भाँती से बताता हूँ वह सुन ।।।३८।।

झूले मुख ऊंधे जोय ।। मुण्डो मेल मळ में होय ।।
आवे दम अबखा जोय ।। अर ज्युं जीव जळ में होय ।।३९।।

उस गर्भ मे जीव के देह के पैर उपर और सर निचे ऐसे उलटी स्थिती मे झुलते रहता ।

उसका मुख गर्भ के मैले पानी मे डूबा हुवा रहता । गर्भजल मे जीव को मुश्किल से साँस लेते आता । जीव का देह पूर्णत: पानी मे रहता ।।।३९।।

राखे मास ले नव मांय ।। खासा मेल मळ मुत्तर खाय ।।
चमके चले जल्दी चाल ।। हूवो दुखी बोहो बे व्हाल ।।४०।।

इसप्रकार मनुष्य देह पूर्ण होने के लिये गर्भ मे नौ मास रखे जाता । उसमे माँ के पेट का मैला पानी तथा जीव ने किया हुवा मुत्र तथा तट्टी जीव के मुख मे बारबार घुसते रहता। गर्भवती माता जल्दी जल्दी चलती तब गर्भ का जीव सहे नही जाता ऐसे बेहाल होता ।।।४०।।

सुण ले बोज मेहेरी सीस ।। जब उ दुखी बिश्वा बिस ।।
आहार करे बघ तो आय ।। जब देह गळे तन के मांय ।।४१।।

गर्भवती माता बोझा उठाती तब जीव को बिस्वाबीस याने भारी दु:ख होता । गर्भवती माता ने किसी कारण अधिक रोटी खाई तो गर्भ मे के जीव का देह गलते रहता ।।।४१।।

नर सुं बेग बोले नार ।। पल पल दुखी पेले पार ।।
आवे क्रोध मा में धेख ।। दुख बोहो जब पावे देख ।।४२।।

गर्भवती स्त्री जब पुरुष के साथ भोग करती तब उस गर्भस्थ जीव को पलपल मे सहे जाने के परे के दु:ख पड्ते । गर्भवती स्त्रीको क्रोध आता या द्वेष आता तब उस गर्भस्थ जीव को भारी दु:ख पड्ता ।।।४२।।

ऊँधो सीस ऊँचा पाँव ।। झुले ग्रभ के युँ मांय ।।
अग्नि झठर को कुंड होय ।। जां मे पडयो प्राणी जोय ।।४३।।

इसप्रकार जीव निचे सिर और उपर पैर ऐसा गर्भ मे नौ मास तक झुलते रहता,गर्भकुंड जठर को लगके ही है । इसकारण जठर के अग्नी से गर्भकुंड का पानी गरम हो जाता । ऐसे गरम गर्भकुंड मे मुलायम चमडी के देहसे प्राणी उलटा नौ माह लटका रहता ।।।४३।।

लागे आँच ताती लाय ।। मानव जोर दुखिया मांय ।।
अे दुख गर्भ का अेहे ताण ।। ज्युं जळ नाज सिजे जाण ।।४४।।

जठर के कारण गर्भकुंड्के गरम पानीके गरम आँच से जीव को बहोत दु:ख होते रहता । जैसे उबलते पानी मे अनाज सिजता मतलब उबलते पानी मे अनाज की जो स्थिती बनती वैसे जीव के देह की गर्भके जलके आँचसे बनती । गर्भ का जल उबलते पानी के तापमान का नही रहता,वह कम गरम रहता परंतु जीव का देह अनाजके देह के सामने बहुत नाजूक रहता । इसकारण जठर के अग्नी से हुवावा गरम पानी भी उसे अनाज को उबलते पानी का जैसे तापमान का मालूम पड्ता वैसे मालूम पड्ता ।।।४४।।

कर चल बांध ले चसकाय ।। अेसो गहयो गाढो आय ।।
चिगस सके नहि तिल अेक ।। दुखी हे जोर अेसो देख ।।४५।।

जैसे किसी के शरीर के हाथ,पैर पक्के कसकर बाँध देते वैसे जीव का देह गर्भ मे हाथ,पैर कसकर बाँधे स्थिती मे रहता । इसकारण हम जैसे खुल्ले खुल्ले इधर उधर हिल सकते वैसे वह जीव हिल नही सकता ।।।४५।।

बोहोत दुख झीणा ओर ।। अबखी ग्रभ की सुण ठोर ।।
अेसी नहीं दुजी मार ।। प्राणी देख इण सेंसार ।।४६।।

तुम्हे मुखसे बता नही सकता ऐसे छोटे छोटे दु:ख बहोत है । ऐसे कठीण जगह मे जीव मनुष्य देह बनने के लिये नौ माह रहता । इसप्रकार हे प्राणी,इस संसार मे गर्भ के मार समान दुजा कोई मार नही है ।।।४६।।

काहां दुख ग्रभ का कहुँ तोह ।। अेसा फेर कुण्ड में होय ।।
हरजन ऋषी जोगी जाण ।। धूज्या ग्रभ में सोहो आण ।।४७।।

गर्भकुंड्मे गर्भ को क्या क्या दु:ख है यह संसार के दाखले देकर क्या क्या बताऊँ ? मतलब दु:ख बताने को दाखले नही है परंतु यह ध्यान मे लावो की बडे बडे हरीजन,ऋषी,जोगी ये सभी समजकर गर्भ मे आने से डरे और डरते ।।।४७।।

भगजे पडे ग्रेह के भेद ।। खरची खाय काढे खेद ।।
तब सो तजे जुग ब्योहार ।। लेवे नाँव मारो मार ।।४८।।

जीव मनुष्य तन पानेके लिये गृहस्थीके भेदसे भगद्वारा गर्भकुंड्मे आ पडता । वहाँपे खरची खाय याने विव्हल होकर अती खेदके साथ नौ मास निकालता । तब वहाँ जीव संसार की सभी मायावी भक्तीयाँ याद भी नही करता तथा रामनाम सदा लेता ।।।४८।।

सुण सिष ग्रभ का दुख अेह ।। छुछम कैया नाँही छेह ।।
करणा भगत साची कीन ।। लिव बंध भजन में होय लीन ।।४९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्यको कहते है की गर्भके दु:ख बहोत है । मैने उन दु:खोमें से जरासे दु:ख बताये । भक्तने सच्ची करुणासे गर्भके दु:ख पुछे । उसमे से मुझे जगतके दाखले देकर जितने बताते आये उतने बताये । अब गर्भ के दु:ख देखकर सभी नर–नारीयो लिव बाँधकर भजन मे लिन हो जावो और गर्भ से सदा के लिये मुक्त हो जावो ।।४९।

दोहा ।।

गुर सिष कूं समजाय के ।। कहया ग्रभ दुख आय ।।
अे दुख पाछे प्राणिया ।। अब नर भूला जाय ।।५०।।

इसतरह से गुरु ने शिष्य को समझाकर गर्भ के दु:ख आकर बताया । ये दु:ख जिस जिस प्राणीने मनुष्य देह धारन किया है ऐसे सभी प्राणीयों पे गर्भ में पहले पडे परंतु गर्भ से निकलने के पश्चात ये सभी मनुष्य प्राणी इन दु:खो को भुल गये है ।।।५०।।

सोरठा ।।

अब नर भूला जोय ।। मार पडसी सिर भारी ।।

सुण सिष अे दुख होय ।। सोज मै कैया बिचारी ।।५१।।

अभी जो जो मनुष्य प्राणी इन दु:खो को भुले जा रहे और राम नाम न लेते माया के अन्य देवतावों की भक्ती कर रहे उन सभी के सिरपर होनकाल के भारी मार पडेंगे । हे शिष्य ऐसे दु:ख पडते ये मै देखके बताया हूँ वह समजकर तू चेत जा ।।।५१।।

सिष वायक ।। दोहा ।।

हो गुरदेवजी अे दु:ख छुटे केम ।। ग्रभ कैसे नहिं आवे ।।
सो गुर कहो उचार ।। कोन ओषद जडि खावे ।।५२।।

शिष्य आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से पूछ्ता है कि ये गर्भ के दु:ख कैसे छुटेंगे? गर्भ का रोग छुटने के लिये कौनसी औषध बुटी खावे जिससे यह रोग मिटेगा? ।।५२।।

गुरू वायक छंद ।। उधोर ।।

अब ओ ग्रभ छूटे अेम ।। परचित नाँव सूं व्हे प्रेम ।।
मन हर बुध अेको माय ।। करिये नहीं दूजी काय ।।५३।।

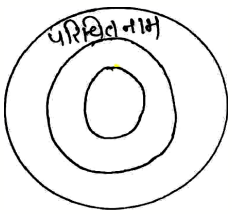

यह गर्भ का रोग सभी का आज दिनतक रामनाम से छुटा । ऐसे गर्भ का रोग मिटानेवाले परिचीत रामनामसे प्रेम होता और मन तथा बुध्दी उस नाममे लिन होती और इसके अलावा मायाके दुजे उपाय से मन तथा बुध्दी निकल जाती और जीव को माया से अप्रीती आती तब गर्भ का दु:ख छुटता ।।।५३।।

अेसो पच राखे जोय ।। माने आन नाहिं कोय ।।
आठुं पोहोर ओही काम ।। जूंझे नाम ले मुख धाम ।।५४।।

ऐसा पथ्य जो राखता और रामजी छोड्कर अन्य देवता को जरासा भी मानता नही और आठो प्रहर मुख से रामनाम लेने मे जुंझता और रामनाम लेने का एक ही काम करता तब उसकी गर्भ में आने की रित छुटती ।।।५४।।

सिमरे अेक सिरजण हार ।। दूजा सरब काने टार ।।
लेवे नॉव निरगुण अेह ।। गाळे पांच तत्त बिन देह ।।५५।।

एक सिरजनहार का स्मरन करता तथा दुसरे सभी मायावी देवतावोंका स्मरन दूर कर देता। एक निर्गुन याने सतस्वरुप ब्रम्ह का नाम धारन करके शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध पाँचो आत्मा पाँच तत्व के देह को जरासा भी न गलाते खतम् कर देता उसका गर्भ टलता ।।।५५।।

राखे एक सुं इकतार ।। लेवे नाँव नितपत सार ।।
खोंजे आत्मा में देव ।। लागे सास सिंवरण सेव ।।५६।।

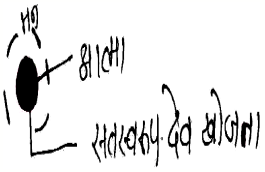

ऐसे सतस्वरुप ब्रम्हसे एक तार(बनता)लगाता याने पूर्ण विश्वास करता और नित्यप्रती जो गर्भ टालनेवाला सार नाम है उसे मुखसे लेता ।

खुदके आत्मा में सतस्वरुप देव खोजता और साँसोसाँस में उसके नामका स्मरन करता ।।।५६।।

साजे भक्त मारग जोग ।। भूले तीन चवदे भोग ।।
आसा मेल रेहे निरास ।। राखे देहे जग रे पास ।।५७।।

ऐसे भक्तीयोगका मार्ग साधता और ३ लोक १४ भवनके मायावी भोगोकी चाहना भूल जाता और माया के सुखो की आशा छोड्कर उन मायावी सुखो से निराश रहता । अपना पांच तत्व देह जगत के कार्यो मे रखता और अपने हंस का निजमन जगत के कार्यो मे न रखते सिरजनहार मे रखता ।।।५७।।

त्यागे सेंग अेसी रीत ।। हूवा हरष आगम चीत ।।
बेसें नित आसण मार ।। लेवे नांव धारोधार ।।५८।।

इस तरीके से गर्भ मे डालनेवाली सभी मायावी विधीयाँ त्यागता और हर्षायमान होकर अगम याने सतस्वरुप मे चित रखता । नित्य आसन मारके बैठता और नाम धारोधार लेता ।।।५८।।

मन कुं घेर राखे माह ।। आठुं पोहोर खसता जाह ।।
दूजा ग्यान बोहोता होय ।। सब सुं रहे बिरच्यो जोय ।।५९।।

मायामे जानेवाले मनको घेरकर रखता । मन मायामे नही जावे इसलिये आठो प्रहर मेहनत करता । गर्भमे रखनेवाले दुजे ज्ञान जगतमे बहोत है उन सभी ज्ञानसे एकदम विरुध्द रहता । ।।५९।।

माने अेक गुर की आण ।। दूजी सरब त्यागे बाण ।।
अेसो होय रहे लवलीन ।। दादर मोर बिरखा चीन ।।६०।।

एक सतस्वरुप सतगुरु की बाणी मानता और सभी मायावी साधूवो का ज्ञान त्यागता । जैसे मेंढक और मोर बरसात आने पे हर्षायमान होकर मगन हो जाते वैसेही गुरु की बाणी मे लवलीन हो जाता ।।।६०।।

लेवे भेद गुरू के पास ।। खोजे पिंड छोडे आस ।।
काया साझ ले अस्थान ।। चिने तत्त पाँचु मान ।।६१।।

सतस्वरुपी गुरु से गर्भ छुटने का भेद लेता और मायावी सुखो की आशा छोड्कर पिंड मे सिरजनहार साहेब खोजता । काया में सभी स्थानो को खोज लेता और पाँच तत्व के देह मे गर्भ से मुक्त करानेवाला सतस्वरुप तत्त खोजता ।।।६१।।

चाडे प्राण उलटो माह ।। पूरब छोड़ पिछम जाह ।।
खोले बंक को मुख जाण ।। पीवे प्रेम वाँ घर आण ।।६२।।

अपना प्राण पिंड को खंड-ब्रम्हंड बनाके पूर्व दिशा त्यागता और पश्चिम के बंकनाल के रास्ते से उलटता । बंकनाल के रास्ते से उलटने के लिये बंकनाल का मुख खोलता और

घट मे प्रेमरस पिता ।।।६२।।

छोडे हद घर अवतार ।। जावे सिष्ट पेले पार ।।
सोऊँ सास ओऊँ जाण ।। काढे शब्द न्यारो छाण ।।६३।।

हद का घर और अवतार यानेही मायावी सृष्टीके देवी–देवता और अवतार त्यागता और मायावी सृष्टी के परे का शब्द मतलब सोहम और ओअम से न्यारा शब्द छान निकालता । ।।६३।।

सुण सिष फेर कूं समजाय ।। धुर दिन पेड की सब लाय ।।
बरणु लछ का अे नाण ।। सुण सिष सांभळो सत्त बाण ।।६४।।

शिष्य मै ओअम सोहम से न्यारा शब्द छाननेवाले की सर्व प्रथम की मुळ पेड की हकीकत लाकर तुम्हें बताता हूँ । उसके लक्षणोके चिन्ह वर्णन करके बताता हूँ । वह सत्य लक्षण सुन । ।।६४।।

बोले बेण मधुरा जोय ।। छूटे प्रेम देवे रोय ।।
ब्याकुळ जीव मन उगताय ।। के कब मिलुं हर सूं जाय ।।६५।।

जिसे सतगुरु से भेद मिला है ऐसा वह शिष्य बचन सोच बिचार कर मिठे बोलता और उसे परमात्मा से प्रेम आता । उसका जीव याने निजमन माया से उब जाता और रामजी के मिलने के लिये व्याकूल हो जाता ।।।६५।।

अेसो प्रेम लीयां लीन ।। चेंटे नाँव सुं कस कीन ।।
लागे भगत करडा बंध ।। सासा सुरत मन सूं संध ।।६६।।

वह शिष्य निजनाम से प्रेम मे लवलीन हो जाता और निजनाम को कसकर चिकट जाता । उसके निजभक्ती से करडे बंधन बन जाते और साँस मे सुरत और मन का मेल होता ।।।६६।।

दूजी सरब मेले आस ।। के दिल काट सुं जम पास ।।
गाढो होय रचमच जीव ।। सिंवरे अेक निर्मळ पीव ।।६७।।

दुजी सभी मायावी सुखो की आशाये,त्याग देता और निजदिल मे जम की फाँसी काटूँगा यह दृढ निश्चय करता । निजनाम मे रचमचकर मजबूत होता और माया से मुक्त ऐसे एकमात्र निर्मल मालिक का स्मरन करता ।।।६७।।

पीया प्रेम बिष छिटकाय ।। देवे ग्यान मन कुं लाय ।।
अेसो मतो राखे मॉय ।। दूजो ग्यान माने नॉय ।।६८।।

वैराग्य विज्ञान से प्रेम लगाता और पाँचो विषयो के रस त्याग देता । मन को ऐसा ज्ञान देता की उसका मन विषय वासना के ज्ञान मे जरासा भी नही जाता और वैराग्य विज्ञान के मत मे प्रेम लगाता ।।।६८।।

मंत्र ओर सारा छाड ।। राखे नाँव लिव को गाढ ।।

किरिया करम साजन देख ।। छाडे झूट जग कूं पेख ।।६९।।

दुसरे सभी मंत्र छोड्कर रामनाम से गाढी लिव लगाकर मजबूत रहता । माया की करणीयाँ, कर्म साधना तथा उस साधना मे रचमचे जगत का संग झूठा समजकर छोड देता ।।।६९।।

बाँधे पाँच मन मस्काय ।। रोके अेक घर में लाय ।।
खेले खेल सूंळी सीस ।। पाले तीन जोधा तीस ।।७०।।

पाँचो वासनाको तथा मनको ज्ञानसे समजाकर रामनाम के घर मे लाकर रोकता । जैसे सुली के उपर खिलाडी खेल खेलता वैसे ३ गुणोके पाँच इंद्रियोके तथा २५ प्रकृतीके मायावी विकारो के साथ खेल खेलता ।।।७०।।

बाँधे मूळ अेसो जाण ।। तां मे पडे सब ही आण ।।
लेवे लछ सारा सोझ ।। चीने तत्त काया खोज ।।७१।।

जिन जिन सभी मूल कारणो से जीव गर्भ में पड्ता उन सभी कर्मो को जीव सतज्ञान से बांध लेता,जिससे जीव गर्भ मे नही पड्ता । और काया खोजकर सतस्वरुप तत्त चिनता ।।।७१।।

सोजे सेंग दिल बेराट ।। लेवे आद घर की बाट ।।
छोडे सरब ऊला गाँव ।। भांजे बिच बिषम धाम ।।७२।।

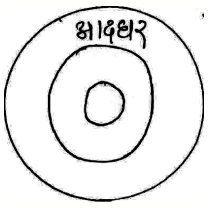

निजदिलसे संपूर्ण बेराट खोजता और आदघरके रास्तेसे चलने लगता । आद घरके रास्तेके सभी गाँव याने स्वर्ग आदि त्यागता तथा आदघर पहूँचने के लिये बिचमे विषयोके जो घाट बँधे है उनको भांगता और आदघर पहूँचता ।।।७२।।

नव घर लंघ दसमों जाय ।। बिन मुख राम रेहे लिव लाय ।।
गंगा मिले सुषमन घाट ।। जमना सर्सती की बाट ।।७३।।

माया के नौ घर याने नौ दरवाजे रहते ऐसे घर को लाँघकर सतस्वरुप के दसवे घर जाता। दसवे घर जाने पे मुख से रामनाम न लेते सतशब्द से लिव लगाकर रहता । गंगा, जमुना तथा सुषमना जिस घाट पे मिलती ऐसा आद घर का रास्ता पकड्ता ।।।७३।।

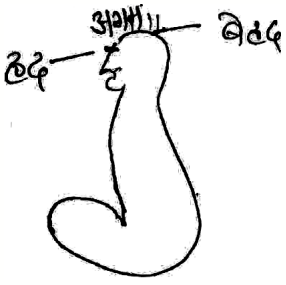

न्हावे जाय नित पत कोय ।। जॉ को ग्रभ छूटे जोय ।।
हद घर लंघ बेहद जाय ।। मेले सुरत पद के माय ।।७४।।

जो देह मे बंकनालके रास्तेसे लगनेवाले गंगा,यमुना,सरस्वती मे नित्य स्नान करता उसका गर्भ छुटता ।(जगतके गंगा,यमुना,सरस्वतीमें न्हाने से गर्भ नही छुटता)। जो हद का घर त्यागकर बेहद जाता और उस पद मे अपनी सुरत गाढता उसीका गर्भ छुटता ।।।७४।।

ज्याँ सुण चंद सूरज नाह ।। ज्याँ घर खोज बेसे माह ।।

सेहेजा जाय अनहद घोर ।। बोहोती सुणे उद बुद ओर ।।७५।।

जहाँ पे चाँद सुरज नही पहुँचता है ऐसे घर को खोज उसमे सुरत लगाकर बैठता । वहाँ अनहद शब्द का घोर आवाज सहज मे सुनता और अनहद शब्द के समान बहोतसी अद्‌भूत ध्वनीयाँ सुनाई देती ।।।७५।।

जावे अगम आगे देख ।। ज्याँ हर आप अबगत पेख ।।
वां सुण ध्यान सुमरण नाह ।। सो घर सोज बेसे मांह ।।७६।।

आगे ऐसे अगम में पहुँचता जहाँ हर और हंस एक हो जाते । वहाँ पे हर का ध्यान तथा स्मरन नही रहता । ऐसा अगमघर खोजकर उसमे जा बैठता ।।।७६।।

लागे सेज ज्याँ समाध ।। वो घर जाय लेवे साध ।।
पेले ग्यान सो सुण च्यार ।। चाले सुरत आगे धार ।।७७।।

अगम घर में सहज समाधी लगती । ऐसा अगम घर हर की साधना कर प्राप्त करता । मायाके मतज्ञान,श्रुतज्ञान,अवधीज्ञान,मनपर्चेज्ञान से सुरत निकाल ने:अंछर ध्वनी के केवल ज्ञान में सुरत गाढता ।।।७७।।

भूले नहिं ऊला मांय ।। केवळ ग्यान कुं ले ध्याय ।।
निरगुण भक्त धारे कोय ।। जाँ को ग्रभ छुटे जोय ।।७८।।

इन मायावी चारो ज्ञान मे भूलता नही और आगे के केवल ज्ञान को दौड्कर धारन करता । जो शिष्य ऐसे सतस्वरुपी निरगुण को धारन करेगा उसीका गर्भ छुटेगा ।।।७८।।

आपो आप होय किरतार ।। छुटे ग्रभ की सो मार ।।
सुण सिष अेह निर्भे ग्यान ।। तो कूं कहयो सब ही आण ।।७९।।

वह शिष्य आपोआप करतार बन जाता । जैसे करतार गर्भ मे कभी नही आता वैसे करतार बनने के बाद शिष्य भी गर्भ मे नही आता । हे शिष्य मैने तुझे काल के परे का सभी निर्भय ज्ञान बताया हूँ ।।।७९।।

या बिध जीव निर्भे होय ।। आवे ग्रभ मे नहिं कोय ।।
तो कूं कहयो मै समजाय ।। सुण सिष मान साची आय ।।८०।।

इसा निर्भय ज्ञान से जीव करतार सरीखा निर्भय होता और करतार सरीखा निर्भय बनने के कारण शिष्य गर्भ मे नही आता । मैने तुझे गर्भ मे आनेकी की सभी बात समजाई यह तू सत्य समजकर मान ।।।८०।।

दीयो भेद ओही जाण ।। बाष्ट रामजी कूं आण ।।
गीता बेद गावे जोय ।। निर्भे नाँव लीयाँ होय ।।८१।।

वशिष्ठ मुनीने रामचंद्र को गर्भ मे न पड्ने का जो भेद दिया था वही भेद मैने तुझे बताया हूँ । गीता,बेद ये सभी ने निर्भय नाम लेने से गर्भ मे आना टलता यह बताया है वही निर्भय नाम मैने तुझे बताया हूँ ।।।८१।।

सुण सिष साच अहे अेनाण ।। निर्गुण ग्यान घारे आण ।।
ध्यावे नाम सासो सास ।। छूटे ग्रभ की सो पास ।।८२।।

हे शिष्य,निर्गुण ज्ञान धारन करके साँसो में निर्भय नाम का रटन करता उसकी गर्भ की फाँसी छुटती यह मेरा भेद सच्चा है यह समज ।।।८२।।

हरकिशन वाच ।। दोहा ।।

हो गुरदेवजी इसी भगत हर नाम हे ।। ताहि भूले किम लोय ।।
सो गुर कहो बिचार के ।। भेद दिजे सब मोय ।।८३।।

हे गुरुदेवजी जगत मे हर नाम की गर्भ से छुटकारा करानेवाली ऐसी भारी भक्ती है फिर भी जगत के लोक उसे क्यों भूल जाते है?हे गुरुदेवजी इसका बिचार करके मुझे भेद दो । ।।८३।।

गुरू वायक ।। छंद उधोर ।।

अब सिष सुणो सब ही आय ।। युँ नर भूल गया जुग मांय ।।
आवे ग्रभ में सो जीव ।। वांहाँ लग याद राखे पीव ।।८४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्य को कहाँ की गर्भ मे जबतक जीव रहता तबतक वहाँ मालिक की याद रखता । जैसे ही गर्भ से बाहर आता वह मालिक को कैसे कैसे भूलता वह भेद चित लगाकर सुन ।।।८४।।

आवे ग्रभ तज सेंसार ।। बाजे ढोल बरघु बार ।।
हर्षे बेन भूवा तात ।। हुवे कडुम्बा में बात ।।८५।।

जैसेही गर्भको छोड्कर ये जीव संसार मे आता । उसकी बहन,भुवा तथा पिता को हर्ष होता । यह आनंदकी बात कुटूंबमें फैलती और आनंदके चलते कर्णको भानेवाले ढोल बाजे बजाते । ।।८५।।

धिन धिन आज जायो पूत ।। बांधे बाप मईया सूत ।।
गावे जाय म्हेरी गीत ।। हुवे हर्ष सब के चित्त ।।८६।।

आज पुत्र जनमा इसलिये आज का दिन धन्य है,धन्य है समजकर आनंद मनाते । माता,पिता बालक जन्मते ही बालक के सुख के लिये माया के आगे के बिचार बांधने लगते । महिलाये बालक जनम के उपरोक्त गित गाते और सभी के चित्त मे हर्ष होता ।।।८६।।

देखे बाल कुं सब जाय ।। लेवे गोद झेले मांय ।।
देखे रूप मेहेरी आण ।। लागे हेत मां सुं जाण ।।८७।।

सभी लोक बालक को आ आकर देखते । बालक को गोद मे लेते,हाथो पे झेलते । महिलाये आ आकर बालक का रुप देखते । बालक को माँ से प्रेम हो जाता ।।।८७।।

पीवे दुध गुर की आय ।। माया अंस बरते माय ।।
पीवे हाँचळा थण दूध ।। दिन दिन इन्द्रियाँ व्हे सुध ।।८८।।

माँ के दूध के घूँट पिने से बालक के शरीर में माया का अंश बरतने लगता । माँ के दूध से बालक के इंद्रिया दिन प्रतिदिन चेतन होने लगती ।।।८८।।

चोंगे नेण देवे पोय ।। सखण सांभळे सुध होय ।।
दिन दिन बधे काया जाण ।। ब्यापे सुध सुरती आण ।।८९।।

आँखो से टक लगाकर देखता है और नजर एक सरीखी एक ही तरफ लगा देता है । कानो से सुनने लगता है । सुनने की समज हो जाती है । दिन प्रतिदिन शरीर बढने लगता है । सुध तथा सुरती बढने लगती है ।।।८९।।

चेतन बुध पलटे जोय ।। निजमन उलट अप मन होय ।।
तब मन भ्रम उपजे माय ।। चमके डरे अन जळ खाय ।।९०।।

जैसे जैसे चेतनता आती वैसे वैसे बुध्दी पलटती हुई दिखाई देती है । और उसके निजमन का अपमन हो जाता है । तब मन मे भ्रम उत्पन्न होने लगता है और चमकने लगता है,डरने लगता है । अन्न खाने लगता है और पानी पिने लगता है ।।।९०।।

हर्षे हसे फूले रोय ।। इन्द्रियाँ पाँच चेतन होय ।।
अब सुण जीभ बोले बाल ।। आवे प्रेम रामत आल ।।९१।।

कभी हर्षित होके हँसता है,तो कभी दु:खित होके रोने लगता है । पांचो इंद्रिया चेतन हो जाती है । धिरे धिरे बालक बोलने लगता है । खेलने मे,चिजे गिराने में,उठाने मे,फेंक–फाँक करने में प्रेम आने लगता है ।।।९१।।

हर्षे खेल सुं सुण जोय ।। बाळक थुड़े ऊभो होय ।।
चाले पावंड़ा दस बीस ।। बरते हरषं तीनुं तीस ।।९२।।

खेल–खेलने मे हर्षित होता है और बालक खडा होने लगता है और खडा होकर दस–बीस कदम चल भी सकता है । तीन गुण(रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण)इनको व्यवहारमे लेने लगता है । पांचो विषय अपना अपना भोग लेना चाहते है,इसीतरह से २५ प्रकृती उसमे बर्तने लगती है । ।।९२।।

जावे साइना के साथ ।। खेले रमे भर भर बाथ ।।
घर सुं चीज लेवाँ जाय ।। मांडे खेल रामत आय ।।९३।।

अपनी बराबरी के साथीयों के साथ जाता है और उन साथीयों मे खेलने लगता है । साथीयों के साथ कुस्तीयाँ खेलता है । घर मे से वस्तूये ले लेकर जाता है और उन वस्तूवो से खेल बनाता है ।।।९३।।

लागे जीव रामत मांय ।। बिसरे सुध या बिध जाय ।।
मोटो हुवो अब जोसाय ।। इंद्रि दस बरते आय ।।९४।।

उस बच्चे का जीव खेलने मे लगा रहता है । इसतरह बालपन मे सभी सुध भूल जाता है । रामभक्ती याद नही आती । अब बडा हो जानेपर जोश,मगरुरी और मस्ती मे आता है

और दसो इंद्रिया पांच कर्मेद्रिया(हाथ,पैर,लिंग,मुख,गुदा)और पांच ज्ञानेंद्रिया(आँख,नाक, कान,जीभ,त्वचा)ये अपना अपना व्यवहार करने लगते है ।।।९४।।

रामत खेल पेले जाण ।। माया काम ब्यापे आण ।।
देखे नेण म्हेरी गात ।। लागे भूक इंद्रीयाँ मांय ।।९५।।

बचपनके परेके जवानीके खेल खेलता है । माया और काम व्यापने लगता है । आँखोंसे औरतोके शरीर देखने लगता है और दुसरी सभी इंद्रियोको अपनी अपनी विषयरस की भूख लगती है ।।।९५।।

ब्यापे माहि अे सुण जोध ।। तो सुं केहुँ सब ही सोध ।।
चवदे तीन मोठा जाण ।। घेरे आत्मा कूं आण ।।९६।।

अंदर ये योध्दा आकर फैल जाते है । उन योध्दावो मे चौदह और तीन बडे है । ये आत्मा को घेर लेते है । ये मै तुझे खोजके बताया हूँ ।।।९६।।

याँ मे च्यार बांका होय ।। ज्याँ संग भूलग्या सब लोय ।।
----------।।----------।।९७।।

इन योध्दावो मे चार(काम,क्रोध,लोभ,मोह)बहुत बाके है । इनके कारण सभी लोक भजन भक्त करना,सुमिरन करना भुल गये है ।।।९७।।

वॉरी दोड भारी जाण ।। पूंचे लाखा कोसा आण ।।
करले प्राण कुं आधीन ।। भूले सुध सारी चीन ।।९८।।

इन योध्दावो की दौड बहोत भारी है । ये लाखो कोसो तक पहुँचते है । ये प्राण को अपने आधीन कर लेते है । जिससे यह प्राण रामनाम के भक्ती की सुध भुल जाता है ।।।९८।।

बरते बिष काया आण ।। बोले बेण काला जाण ।।
दुजी ओर भी बोहो मांय ।। माया झीण बरते आय ।।९९।।

ये विषय रस शरीर मे आकर रहने लगते है । इसी मे पागल की तरह वचन बोलने लगता है और भी दुसरे सुध भुलानेवाले घट के अंदर बहोत से रहते है । अनेक प्रकार की झिनी माया घट में बरतने लगती है ।।।९९।।

त्रिषा लोभ चिन्ता होय ।। यां संग राम भूला जोय ।।
भारी भरम बादळ कोट ।। भूले सरब यांरी ओट ।।१००।।

तृष्णा,लोभ,चिंता यह घट मे निपजती है । इनके संग सभी लोक राम को भूल जाते है । जैसे भारी बादल आने के पश्चात सुरज दिखाई नही देता । इसीप्रकार घट मे भारी भ्रम उपजने के कारण गर्भ से मुक्त करानेवाला सत्तराम दिखाई नही देता ।।।१००।।

करणे लगे सो ब्योहार ।। भूला राम सिरजण हार ।।
हुवे इन्द्रियाँ बस जीव ।। प्रगट क भूल ज्यावे पीव ।।१०१।।

ऐसे भारी भ्रमो के कारण माया के अनेक व्यवहार करने लगता । इसमे सिरजनहार राम

भुल जाता । जीव शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन इंद्रियोके बस हुवा और जो मालिक गर्भ मे प्रगट रुप से समज रहा था । उसे जीव भूल जाता है ।।।१०१।।

चावे सुख इण सेंसार ।। भूले अेम सिरजण हार ।।
आवें जोस अहुँ पद मांय ।। या बिध राम भुला जाय ।।१०२।।

इस संसार मे त्रिगुणी माया के सुख जीव चाहता इसप्रकार सच्चे सुख देनेवाला सिरजनहार भूल जाता है । जीव मे जोस उत्पन्न होता जिससे अहंपद याने मै ही सृष्टीका मालिक हूँ,मेरे से बलवान सृष्टी मे कोई नही ऐसी झूठी समज कर लेता । इसकारण गर्भ मे प्रगट समज मे आये हुये राम को भूल जाता ।।।१०२।।

जोरे चले इन्द्रयाँ देह ।। बिषिया खाय बिके अेह ।।
पीवे मद अेमख खाय ।। या बिध राम भूला जाय ।।१०३।।

देह के जोर से याने जवानी मे आने से इंद्रियाँ जोश मे आकर चलायमान होती है और इन इंद्रियो के विषय रस खाने से जीव में विकृती आ जाती । दारु पिने लगता । मांस,मच्छी खाने लगता । इसतरह से रामनाम को भूल जाता ।।।१०३।।

हुवो जोध ही जवान ।। मगजी कुबद ब्यापे आन ।।
वाँ सुं पडे परबस जीव ।। लेऱ्याँ खाय भूले पीव ।।१०४।।

शरीर मे जवानी का जोश आने से योध्दा याने जिससे उससे झगडे करता । जवानी के जोश से देह मे मगरुरी तथा कुबुध्दी आकर व्यापती । इसकारण जीव उनके वश होकर परबस हो जाता । इन कुमती के लहरो मे मालिक को भूल जाता ।।।१०४।।

तनी आण ब्यापे मांय ।। खांच्योइ दिसो दिस ने जाय ।।
सुण सिष सांभळो धर कान ।। जुग सूं लाग बिसरे ग्यान ।।१०५।।

यह नशा इतनी घट मे व्याप्त हो जाती जिससे माया मे चारो ओर खिंचे जाता । हे शिष्य तुम कान लगाकर सुनो । इसतरह से इस संसार मे लगकर गर्भ मे हुवावा मालिक का ज्ञान भूल जाता ।।।१०५।।

षड़ रस जीभ मांगे सवाद ।। ब्यापे चाय चिंता बाद ।।
होवे सकळ को आधीन ।। उपजे सोग सांसो कीन ।।१०६।।

यह जीभ सभी छ प्रकारके स्वादोका रस माँगती । जीवको मायाकी चाहना व्यापती,वह प्राप्त करनेकी चिंता उत्पन्न होती और प्राप्तीके लिये विवादी स्वभाव प्रगटता । चाहना पुरी होनेके इच्छासे सभी प्रकार के मायाके आधीन हो जाता । मोहमायासे जुडे हुये व्यक्तीकी मौत हो जाने पे सोग याने जिससे मोह था वह मर जानेसे दु:खी होता । चाहनानुसार सुख न मिलने पे उन सुखोके लिये फिकीर करता तथा सहे नही जानेवाले दु:खसे निपटने की फिकीर करता । ।।१०६।।

सरवण भूख लागे मांय ।। मांडे कान बातां जाय ।।

पाचुँ भूत अेसा जाण ।। बिकळे पड़े जुग मे आण ।।१०७।।

कानो को बाता सुनने की तथा राग रागीनी सुनने की भूख लगती । इसकारण अपने कान बाता सुनने मे तथा संगीत सुनने मे लगाता । इसप्रकार आँखो से देखने का,नाक से सुंघने का तथा स्पर्श सुख की भूख लगती । यह सुख पाने के लिये संसार मे व्याकुल होकर रहता । ।।१०७।।

भूले सुध सबही लार ।। बांधे जुध घर सुं प्यार ।।
अेसी प्रीत उपजे माय ।। परणु ब्याव कीजे जाय ।।१०८।।

इनके पिछे जीव सभी सुध भूल जाता । उसे घरसे प्यार हो जाता । परीवारके सदस्योको किसीने कष्ट पहुँचाया तो उससे झगडा करनेके लिये कमर कसने लगता । ऐसे अलग मायावी वस्तूवोसे घटमे प्रिती उत्पन्न होती । अभी जाकर शादी कर लेनी चाहिये ऐसी प्रिती आती । ।।१०८।।

सोभा सुख जग में मान ।। अेसी चाय उपजे आन ।।
कीजे जग सोभा देह ।। माने गोत भाई एह ।।१०९।।

मेरी जगत मे शोभा होनी चाहिये तथा मुझे सभी तरह के सुख होने चाहिये ऐसी जीव मे चाहना उत्पन्न होती । ऐसी बात बने की जिससे सभी संसार के लोग शोभा करेगे और मुझे मेरे गोत्र के सभी भाईबंध बडा मानेगे ।।।१०९।।

अेसी ऊपजे हे मन मांय ।। सब सुं संग हुईये जाय ।।
लाजे लोक कुळ सुं जीव ।। छाड़े नहिं जग री सीव ।।११०।।

ऐसा मन मे उत्पन्न होता की सभी कुटूंब परीवार,रिश्तेदार,दोस्त मित्रो में जाकर सभी के संग मे रहूँ । यह जीव लोगोसे और कुलसे लजाकर जगत के लोगो की मर्यादा छोडता नही ।११०।

पूजे आन कूं तब जाय ।। पलटे बुध सेंसा खाय ।।
नानाँ बिध का बोहार ।। फेल्या जग इण संसार ।।१११।।

और रामजी छोड्कर राक्षसी देवो की जाकर पुजा करने लगता । राक्षसी देवो की पुजा करने से बुध्दी पलटती और चिंता फिक्र खाने लगती और अन्य नाना तरह के व्यवहार जो इस संसार मे फैले हुये है उसे करने लगता ।।।१११।।

चूपां चीज बोहोती होय ।। झाड़ा मूठ मंत्र जोय ।।
तां में पाँच गुण प्रवाण ।। बरते तुरत साज्याँ आण ।।११२।।

अन्य जगत की दुसरी बहोतसी चतुराई,चिजें सिखता । झाड–फूँक,मूठ चलाना तथा अन्य मैले मंत्र सिखता । (तामे पांच गुण प्रवाण–अर्थ नही समझता)इस मंत्र तथा झाड–फूँककी साधना साधने से मंत्र का तुरंत ही परीणाम होने लगता ।।।११२।।

अेसे जीव लालच लाग ।। धारे जग क्रिया जाग ।।

ज्युँ सुण पिंजरा कें मांय ।। तो तो पड्यो बोहो दिन आय ।।११३।।

इसतरहसे जीव माया के सुखके लालच मे पड्कर जगत की क्रिया धारन करने लगता । जैसे पिंजरे मे तोता बहोत दिनतक पडा रहता ।।।११३।।

समियो एक बरतो आय ।। तो तो मिल्यो भायाँ मांय ।।
भूले सरब बोली जोय ।। धारे गोत कुळ ज्युँ होय ।।११४।।

परंतु एक बार ऐसा आता की वह तोता पिंजरे के बाहर आता और उड्कर अपने भाईयो मे जाकर मिलता । भाईयो मे मिलने से वह जो बोली पिंजरे मे सिखा था वह भूल जाता और अपने कुल मे जाकर कुल के जैसा हो जाता । वैसेही गर्भ मे रामजी की जो बोली जानता था वह बोली गर्भ छुटते ही भुल जाता,कुल की माया की बोली धारन कर लेता और उसके अनुसार चलने लगता ।।।११४।।

सुण सिष अेह परसंग आय ।। भूले जीव यूँ जग मांय ।।
भूले कोल इण बिध आण ।। पकडे चाल कुळ की बाण ।।११५।।

हे शिष्य,यह तोते का प्रसंग पुरा सुन । जैसे तोता भाईयो मे जाकर भूल गया वैसेही यह जीव गर्भ का करार संसार मे भूल जाता । यह अपने देह के कूल की चाल पकड लेता और रामजी की चाल भूल जाता ।।।११५।।

करणे लगे सो बोहार ।। लागे कर्म काया लार ।।
पहली करे हुँसा आय ।। पिछे पड़े परबस जाय ।।११६।।

यहाँ संसारमे आकर ये जीव सभी प्रकार के मायावी व्यवहारी कर्म करने लगता । उन व्यवहारो से शरीर के पिछे कर्म लगते है । पहले हौंस–हौंस से कर्म करते है बाद मे इन किये हुये कर्मो के कारण ये जीव कर्म याने काल के वश हो जाता है ।।।११६।।

घेरे आत्मा अग्यान ।। बांधे करम पूजे आन ।।
दिन दिन मन मेला होय ।। करणी नहिं सूझे कोय ।।११७।।

आत्माको अज्ञान आकर घेर लेता । जीवीत प्राणीयोकी बली चढती ऐसे देवतावो को पुजकर उलटे नरकमे पहुँचनेवाले कर्म बांध लेता । ऐसे भेरु,बिजासन,कालिका,खेतपाल इनको बली देकर पुजा करनेसे दिन दिन मन मैला होता । परमात्माकी अच्छी करनी करना सुझता नही । ।।११७।।

सुख दुख पड़े बे परवाण ।। जब जीव होय कायर आण ।।
पूछे बेद भोपा देव ।। लागे पाहण की जग सेव ।।११८।।

ऐसे बली पानेवाले देवतावो की भक्ती करने से दु:ख बेप्रमाण याने जिसका प्रमाण नही ऐसे पड्ने लगते । इन बेप्रमाण दु:खो के कारण जीव कायर हो जाता । ऐसे कायर बनने से जीव बली मांगनेवाले देवता शरीर मे प्रगट कर खेलनेवाले भोपा को पुजने लगता और भोपा के शरीरमे प्रगट हुये देवताकी भक्ती करता और जगतमे के पत्थरके खंडोबा,म्हसोबा

सरीखे मूर्ती की सेवा करने लगता ।।।११८।।

अेसा भर्म उपजे माय ।। बांधे धर्म न्यारो जाय ।।
पूजे मन मान्या देव ।। गुर मुख नाहिं माने सेव ।।११९।।

इसतरह से मनमे रामजी के प्रती भ्रम उत्पन्न हो जाता और रामजी से न्यारा धर्म बली मांगनेवाले देवतावो का चलाना लगते । अपना विकारी मन जिसे मानता उसे देवता मानकर पुजता और गुरु के मुख से बताया हुवा रामजी का धर्म नही मानता और रामजी की सेवा नही करता ऐसा भ्रमित हो जाता ।।।११९।।

हे सिष कहुँ कहाँ लग तोय ।। या बिध सरब भूला लोय ।।
काया भर्म बादळ माही ।। युँ सब दुख सूझे नाही ।।१२०।।

हे शिष्य,कहाँतक रामजी भूलने की बातें तुझे बताऊँ । इस विधी से सभी जगत के लोग रामजी को भूल गये । जैसे बादल मे सुरज दिखाई नही देता वैसे विकारी माया के भ्रमो से काया मे का रामजी दिखाई नही देता । ऐसे भ्रम मे अटक जाने के कारण गर्भ के तथा मनुष्य गर्भ में आने के पहले के ४३२०००० सालतक के ८४००००० योनी के आवागमन के दु:ख जीव को सुजते नही ।।।१२०।।

अजहुँ सोच नहिं मन मांय ।। युं जग सर्ब भूलो जाय ।।
पच पच मिरगव्हे हेरान ।। भूले प्रतबंब मे जान ।।१२१।।

इसप्रकार विकारी मायामे भ्रमित होनेके कारण जीवके मनमे कालके दु:खसे मुक्त होने की चिंता नही रही । इसप्रकार सभी जगत रामजीको भूल गया है । जैसे प्यासा मृग जल के लिये रेतीले धरतीमे जल का प्रतिबिंब देखकर जल पाने के सोचसे झूठे जल के प्रतिबिंब मे भागते रहता वैसेही जीव माया मे सच्चे सुख समजकर झूठे माया मे सच्चे सुख खोजते रहता ।१२१।

हे सिष केहुँ कहाँ लग तोय ।। गुरां बिन भेद भूले लोय ।।
साची अेक आहि जाण ।। गुर बिन भगत भूले आण ।।१२२।।

हे शिष्य,मै तुम्हें कहाँतक बताऊँ,ये सभी लोग सतस्वरुप के गुरु के भेद बिना भूल गये । सच्ची बात तो एकही समज सतस्वरुप के गुरु न मिलने के कारण ये सभी लोग रामजी की भक्ती करना भूल गये ।।।१२२।।

भेदी गुरा बिन ओ जीव ।। हे सिष बिसरे इम पीव ।।
दिसा भूल व्हे नर कोय ।। गुर बिन सरब अेसे होय ।।१२३।।

गर्भ के दु:ख से मुक्त करानेवाले भेदी सतस्वरुपी गुरु न मिलने के कारण ये सभी लोग रामजी को भूल गये । जैसे कोई मनुष्य मुंबई सरीखे बडे शहर मे जाता और दिशाभूल हो जाता वैसे ही पुरे सतस्वरुप के गुरु न मिलने के कारण सभी जगत के लोग विकारी माया मे सुख खोजने मे सच्चे रामजी को भूल गये ।।।१२३।।

माया मोह बरते आय || या बिध कोल भूला जाय ||
काया देह बादळ जाण || तां ते छिपे सो जीव भाण ||१२४||

सभी जीवो मे माया और मोह ये आकर बरतने लगते । इसतरह से ये सभी जीव गर्भ मे किया हुवा करार भूल जाते । जैसे जगत के नासमज मनुष्य को बादल आने पे सुरज सुजता नही । सुरज तो बादलो के परे आदि ही उदित हुवा रहता परंतु सुरज उदित हुवा है यह नासमज मनुष्य को समजता नही । इस प्रकार से काया याने देह मे माया मोह बरतनेके कारण जीव को गर्भ मे समजा हुवा रामजी छुप जाता वह सुजता नही ।।।१२४।।

गेलो भगत सुझे नाह || उलटा करम बंधे जाह ||
भूलो जीव यूँ जग मांह || सत्तगुर बिना बिषिया खाय ||१२५||

इन मोहमाया के विकारो से रामजी के भक्ती का रास्ता सुजता नही उलटे माया के विकारो मे रचमचकर त्रिगुणी माया के साथ आगे काल से दु:ख होनेवाले कर्म बांधता । इसप्रकार जीव जगत मे भूल जाता । जीव को सतस्वरुप के सतगुरु न मिलने के कारण ये जीव शब्द,स्पर्श, रुप,रस,गंध ये विषय भरपेट खाता ।।।१२५।।

सिष वायक || दोहा ||

हो गुरदेवजी || बिष जग जो खावे तहाँ || भगत जहाँ नहिं जोय ||
वाँ री कुण गत होवसी || भेद बताओ मोय ||१२६||

शिष्य ने गुरुदेवजी से पुछा कि हे गुरुदेवजी,जगत मे जीव विषय रस खाते और विषयरस मे रमकर उन जीवो से रामजी की भक्ती नही होती उनकी आगे क्या गती होती यह भेद मुझे बतावो ।।।१२६।।

गुर वायक छंद मोती दान ||

तको सिष भेद बताऊँ तोय || जुगे जुग जीव दुखी युँ जोय ||
अठे करे करम पहुँचे हे आय || जके सुण जीवन छूटे हे जाय ||१२७||

जिसने जिसने माया मे रचमचकर विषयरस खाता है वे होनकाल मे ही रहे है मतलब ही अमरलोक नही गये मतलब ही जुग जुग से काल के दु:ख भोग रहे है यही उसका भेद है यह शिष्य तू समज । शिष्य ने जो जो कर्म इस मनुष्य देह के पहले किये वे सभी कर्म जीव भोगने के लिये देह के साथ पहुँचते है वे कर्म जीव के भोगे बिना नही छुटते ।।।१२७।।

टळे नहि अेक कियोडा हा जाण || युँ ग्रह जीव आगाऊँ हुं आण ||
सुणो सिष दुख पड़े बोहो मांय || बिना हरि नाँव चोरासी ही जाय ||१२८||

इन किये हुये कर्मो मे से भोगे सिवा एक भी कर्म नही टलता । ये किये हुये कर्म अगाऊ आकर जीवको ग्रास लेते है । हे शिष्य,इन कर्मो के कारण जीवपे बहोत दु:ख आकर पड्ते है । हरी का नाम नही लिया और कर्म करते रहे,इसकारण सभी जीव ४३२०००० साल के लिये ८४००००० योनी मे जाते है ।।।१२८।।

कुटी जेहे जीव जमा केहे हाथ ।। नहीं कोहो संग न बूजे हे बांत ।।
देवे सो हो मार इसी बिध जाण ।। कियोड़ा हा करम जतावे हे आण ।।१२९।।

यमोके हाथमे जीव कुटे जाते है । वहाँ जब यम मारता है तब वहाँ कुटूंब परीवारवाले तथा देवी देवता जिनकी भक्ती की थी वे कोई साथमे नही रहते और मार खानेके बाद होनेवाले दर्द की तकलीफ कैसी है यह बात भी पुछनेवाला कोई नही रहता । वहाँ सहे नही जाता ऐसा मार यम जीवको देते है और किये हुये कर्म जता-जताकर कर्मके अनुसार जीवको मार देते है ।१२९।

गिरे सो दूत अगाऊं हु आय ।। बिना हरि नांव न माने हे काय ।।
सबे सो देव मनावे हे लोय ।। बिना हरि नाव नहिं सुख होय ।।१३०।।

जीव को मार देने के लिये यम अगाऊ मार देने के तयारी से आ पड्ते है । ये यम सिर्फ हरी का नाम लिया हो तो ही शांत रहते और मार न देने से मानते है,मन्नत कर करके जगत के लोग अनेक देवतावो को मनाते है परंतु यम इन देवतावोको मानता नही और जीवको कर्मो के अनुसार मार देते रहता । सिर्फ हरीका नाम लिया तो ही जीवको मार नही मिलता उलटा रामजी के देश का सुख मिलता ।।।१३०।।

सुणो शिष करम तणो बोपार ।। कुटीजे हे जीव घरोघर बार ।।
जमाके हाथ बिकावे प्राण ।। करे सोहो लाय खडो जमराण ।।१३१।।

हे शिष्य,जीव ने किये हुये कर्मो के बेपार से बना हुवा तोटा समज । इन कर्मो के कारण जीव घर-घर मे दर-बदर तीन लोक मे कुटे जा रहा है । इस कर्मी जीव का प्राण कर्मो से हुयेवे तोटे के कारण जम के हाथ गुलाम के सरीखा बिक गया है । जीव ने हरी का नाम न लेने के कारण और माया के कर्म करने के कारण ये जम जीव को जमराज के सामने खडा करते है । ।।१३१।।

देवे सोहो मार जताय जताय ।। कियोडा कोल क्युँ भूलो हो जाय ।।
अबे सोहो कूण तमारा हा सेण ।। केहे युँ जम सुणावे हे बेण ।।१३२।।

जमराज जीव ने किये हुये कर्मो की यादी सुनकर जीव को कर्मो के नुसार जता जता के मार मारता है । जमराज जीव को कहता है कि अरे जीव,तुम यहाँ से रामजी ने ठहराया था वैसा करार करके गया था । वह करार जाकर तू क्यों भूल गया ? करार के नुसार रामजी को याद नही किया अब तुम्हारा सज्जन याने कर्मो के मार से बचानेवाला कौन है ? इसतरह के बचन यातना से भरा कुवा नर्ककुंड बताते हुये जीवो को यातनावो का विवरन सुनाता है ।।।१३२।।

डरावे हे जम कुण्डा के हे मांय ।। वांहा सिष करम कियोड़ा हा खाय ।।
बिना हरि नाँव पड़े दुख अेह ।। जमा घर जीव नरा बिच देह ।।१३३।।

जीव को जम नरककुंड मे डालता है । वहाँ वह जीव ने किये हुये निचकर्म से उपजे हुये

दु:ख भोगता है । हरीनाम न लेने से इसप्रकार जीव दु:खो मे पड्ता है । इसप्रकार जीव जमो के हाथ के जुलूम भोगता और जीव निकल जाने के बाद रहा हुवा देह कुटूंब परीवार के लोगो मे पडा रहता । उस देह को घर–परिवार के लोग जला देते ।।।१३३।।

जिके सुण जीव बिषे मथ खाय ।। चोरासी ही कुण्ड भुगते हे जाय ।।
करे जे कर्म न गावे हे राम ।। तिके सुण जिव बंधे धम धाम ।।१३४।।

जो जीव विषय रस भोगते है,वे नर्कके ८४ प्रकारके कुंड मे अपने अपने निच कर्मो के दु:खो के भोग भोगते है । जो जीव विषय रस के निच कर्म करते है और रामनाम का स्मरन करते नही वे जीव इस जम के धाम दु:ख भोगने के लिये जम के स्वाधीन बांधे जाते है ।।।१३४।।

पूजे सोहो भेरूं खेतर पाळ ।। तके सुण जीव बणे जम काळ ।।
करे सो बाद बिवाद अजाण ।। इसा सोहो जीव हुवा जड़ आण ।।१३५।।

जो जीव भेरु,क्षेत्रपाल की पुजा करते उस जीव को जम का दूत याने काल बना देते है और कोई जीव यहाँ अज्ञान मे ने:अंछ्री संतो के साथ वाद विवाद करते है उस जीव को जड बुध्दी के जम के दूत बनाते है ।।।१३५।।

भळे बेहे जाय चोरासी ही बीच ।। जुगे जुग जीव किया करम कीच ।।
पडेसो हो दुख अनंता हा आय ।। बिना हर नाँव व्हे जख जाय ।।१३६।।

पुन: वे जीव लक्ष चौरासी योनी मे जाते है । जो युगों–युगोंतक जीवोनें चिकट कर्म किये उन चिकट कर्मो से निपजे हुये अनंत तरह के दु:ख जीव पे आकर पड्ते है । हरी का नाम लिये बिना जीव राक्षस होते है ।।।१३६।।

भुगते हे जीव चोरासी ही लख ।। पड़े बोहो व्हाल मिले नहिं भख ।।
प्रगटे पितर भूत पलीत ।। बिना हरि नाँव दुखी इण रीत ।।१३७।।

और वे जीव ८४ लाख योनी भोगते है,उन जीवो के बडे बुरे हाल होते है । उन जीवो को खाने के लिये भक्ष्य भी नही मिलता ऐसे भूखे–प्यासे रहके कठीन दु:ख भोगते रहते । निच कर्मो के कारण अकाली शरीर छुटता जिससे जीव भूत,पलीत तथा पितर ऐसे अती कष्टदायक शरीर पाकर प्रगटते । इसप्रकार से हरीनाम न लेने के वजह से जीव चौरासी लाख योनी तथा पितर, भूत बनके दु:ख भोगते रहते ।।।१३७।।

हुवे सो हो राकस दाणव गुघ ।। पंखी सोहो कीट हुवे खर बुध ।।
पितर अगत गत न काय ।। लिया बिन नांव भवें जग मांय ।।१३८।।

इसतरह से राक्षस याने दानव देह पाकर दु:ख भोगते है । उल्लू बनके जनमते है । पक्षीयो के योनी मे जाते है । किडे–मकोडे के योनी मे जाते है,गधा बनते है,पितर बनते है,यह अगती योनी है । इनकी गती भारी दु:खो से भरी रहती है । रामनाम लिये बिना इसप्रकार जीव संसार मे अनंत दु:ख भोगते भ्रमन करता है ।।।१३८।।

हुवे सो हो स्वान सिसांग सलेस ।। बथीजे हे जीव सुनाय बळेस ।।
भटके हे जीवन पावे हे मोख ।। सदा दुख होय काहुँ नहि पोख ।।१३९।।

कुत्ता बनता है । सिसांग नाम का जानवर बनता है । सर्प बनकर जनम लेता है । बथीजे हे जीव सुनाय बलेस–जीव आपसमे झगड्ते है और हम बलवान है ऐसा दिखलाते है । इसतरह सभी जीव दु:ख भोगते भटकते है । इन जीवो को इन दु:खो से मोक्ष याने छुटकारा नही मिलता । हमेशा उन्हें दु:ख ही दु:ख होते रहता । कभी भी उनको शाश्वती मिलकर पोषन नही होता ।।।१३९।।

पड़ी जेह देहे अनंतु जाग ।। लिया बिन नाँव करे जग काग ।।
हुवे अंध रोग चुडेलम माह ।। सलीटा हा साप स विच्छु हु कहाय ।।१४०।।

इन कर्मी जीवो के ८४ लाख बार देह बनते है और मिटते है । रामनाम लिये बिना उस जीव को जगत मे कौवा बना देते है,जीव अंधे बनते है,शरीर से भारी रोगीट जनमते है । महिलाये चुड़ैलनी बनती है । पेट घिसते हुये चलनेवाले सर्प जैसे प्राणी तथा बिच्छू बनते है ।।।१४०।।

पडे सों हो देह अनंता बेर ।। भले सो ही आण बंधे मोहो घेर ।।
करे सो हो कर्म जिसो सुण जीव ।। तिसी सो हो मार दिरावे हे पीव ।।१४१।।

अनंत बार देह मिलता है और वह देह मरता है । वही फिर घर के घर मे मोह मे बंधे हुये कारण लौटकर मनुष्य देह छोड्कर घर मे ही अलग योनी मे जनम लेते है । ये जीव जैसे जैसे निचकर्म करता है वैसे वैसे उन कर्मो के हिसाब से मालिक संसार मे मार दिलाता है।।।१४१।।

दोहा ।।

कर्म जीव जो करत हे ।। हर भक्ति नहिं होय ।।
ते नेहचे दु:ख पावसी ।। जम लोक में जोय ।।१४२।।

जो जीव निच कर्म करते है और हरी भक्ती नही करते है,वे निश्चित ही जमलोक मे जाकर दु:ख भोगते है ।।।१४२।।

सरब दुख भुगते सही ।। बिन भक्ति बिन भेद ।।
कहाँ लग दुख बताय कूं ।। ज्याँ त्याँ जीव सिर खेद ।।१४३।।

हरी के भक्ती से जम के मार छुटते यह भेद न पाने के कारण और विषय वासना के निचकर्म करने के कारण सभी जीव दु:ख भोगते है । मै कहाँतक इनके दु:ख बताकर कहूँ । जहाँ तहाँ जीव के सिरपर भारी दु:ख पड्ते रहता है ।।।१४३।।

सिष वायक छंद मोती दान ।।

कहे सो सिष सुणो गुरूदेव ।। कहीजे छाँट सबे दुख भेव ।।
किसी सो हो जूण किसी बिध होय ।। तको गुरू भेद बतावे हो मोय ।।१४४।।

तब शिष्य ने गुरुदेव से कहाँ की,हे गुरुदेव,सुनिये इन सभी दु:खों का भेद मुझे अलग–

अलग छाँटकर बताईये । कौनसी योनी किसतरह से होती है,वह सभी भेद मुझे बताईये ।।।१४४।।

कहो गुरू भेद बिचार बिचार ।। किसो सो हो कर्म किसा दुख लार ।।
कहो गुरूदेव कृपाल दयाल ।। किमे जुग जीव मंडयो हे ख्याल ।।१४५।।

हे गुरुदेवजी,इसका भेद सोच–बिचारकर मुझे बताईये कि कौनसा कर्म करने से कौनसे दु:ख जीव के पिछे लगते है । हे गुरुदेवजी,आप कृपालू और दयालू हो । तो यह मुझे कृपा करके, दया करके बताईये कि जीवों का इस जगत मे किस तरह से खेल बनाया है ।।।१४५।।

कुणा के बस केर ओ काम ।। तको गुर सोज बतावो हो राम ।।
कहो जम रूप किसो यक होय ।। तिका सब मांड पछाड़ी हे लोय ।।१४६।।

हे गुरुदेवजी,ये जीव किसके वश होकर काम करते है यह सब शोधकर मुझे राम दिखलाईये । इस यम का स्वरुप कैसा और किस तरह का है जिस यम ने इस सारी सृष्टी के लोगो को पिछाडा है ।।।१४६।।

कहो जम लोक कुण्डा प्रवाण ।। किसी बिध जीव गहे जम आण ।।
पडे सो देह किसी बिध बेग ।। कहो गुरूदेव सबे दु:ख सेंग ।।१४७।।

उस जमलोककी सारी हकीकत मुझे बताईये और नर्ककुंड का प्रमाण कैसा है उसे मुझे बताइये । ये यम इन जीवों को किस तरहसे आकर पकडते है वह भी मुझे बताईये और यह देह जल्दी किस तरह से पडती है,हे गुरुदेवजी,ये सभी दु:ख मुझे बताईये ।।।१४७।।

मेरे सो हो बुध कछु नहिं मांय ।। सबे दुख बात न बूझी ही जाय ।।
कहो गुरूदेव सबे दुख आप ।। कहाँ लग जीव भुगते हे पाप ।।१४८।।

मेरे अंदर पूछने की कुछ बुध्दि नही है । सभी बात और सभी दु:ख मुझे बुध्दि नही होने के कारण मै पूछ नही पाता हूँ । तो हे गुरुदेवजी,आपही मुझे ये सभी दु:ख बता दो की कहाँ तक ये जीव पाप भोगते है ।।।१४८।।

भुगते हे जीव काहाँ लग कर्म ।। कोहो गुरूदेव मिटावो हो भ्रम ।।
कोढी सो कलंकी होवे किम आय ।। जके कोहो कर्म किस्यो जग माय ।।१४९।।

यह जीव अपने किये हुये कर्म कहाँतक भोगते है । हे गुरुदेवजी,यह बताकर मुझमे जो भ्रम है वह मिटा दो । ये जीव इस जगत मे आकर पिछे किये हुये कौनसे कर्म से कोढी होते है और वह कैसे होते है यह मुझे बताईये ।।।१४९।।

हुवे सो हो अंध गुंगो किम जाण ।। तके गुर कर्म बतावो आण ।।
अंगे अंग हीण किसी बिध होय ।। तके गुरू कर्म बतावो हो मोय ।।१५०।।

हे गुरुदेवजी,पहले के किस कर्म के कारण जीव यहाँ अंधे होते है तथा पहले के किस कर्म के कारण जीव गुँगे होते है वह मुझ बताईये । कोई अंग से अंगहीन किस कर्म से होता है

वह कर्म मुझे बताईये ।।।१५०।।

पडे सो हीण निचे कुळ जाय ।। तके कोहो कर्म किस्यो जग मांय ।।
रहे सो हो बांझ किमे गुरू देव ।। कृपा कर आप बतावो हो भेव ।।१५१।।

और पहले के किस कर्म से जीव हिनकुल मे याने निच जाती मे जाकर जनम लेता है । तो ये संसार मे कौनसे कर्म है,कि जिससे जीव हिनकुल मे जाकर जनम लेता है । हे गुरुदेवजी,ये स्त्रियाँ बाँझ किस कर्म से रहती है । यह भेद मुझे कृपा करके बताईये ।।।१५१।।

क्रोधी अंग करूपी देह ।। किसे गुर पाप बणे अंग एह ।।
घणा सो बाळ आवे हे खुक ।। किसे गुरू कर्म सदा रहे भूख ।।१५२।।

हे गुरुदेवजी,किस पाप से ये क्रोधी और कुरुपी देह होती है,वह मुझे बताईये और किसी–किसी स्त्री की कोखसे याने पेटसे बहुतसे बच्चे जनम लेते है,वे किस पाप से होते है,वह मुझे बताइये । और गुरुजी पहले के किस कर्म के कारण हमेशा भूख लगी रहती है ।।।१५२।।

हुवे सो पंग अपंग अधीश ।। तके कर्म किण कोहो गुरू ईश ।।
गिरे सो ग्रभ अधूरा बाल ।। तके गुर कर्म कहो ज बड़ाल ।।१५३।।

कोई पंगू होते है तथा कितनेही अपंग अधीश याने अपाइज होते है । इन्होंने कौनसा कर्म किया जिससे ये ऐसे हुये । गुरुजी,आप ईश्वर मुझे सब बताइये । कितने ही स्त्रीयों का गर्भपात होकर अधूरे बालक पड जाते है तो गुरुजी,ये कौनसे कर्म से ऐसे होते । ये ऐस बडाल याने बडे कर्म मुझे बताईये ।।।१५३।।

जणे सोहो बोहोत न जीवे हे एक ।। तिके गुरू पाप किस्या जुग पेख ।।
दलद्री होय कहो किण पाप ।। तके गुर मोय बतावो हो आप ।।१५४।।

किसी–किसी औरतो को बहुतसे बच्चे होते है परंतु बच्चे होकर मर जाते है । गुरुजी,ये कौनसे पाप से होते है वह देखकर मुझे बताईये । और मनुष्यने पूर्व जनम में कौन से पाप किये जिससे वह दरीद्र हो गया । यह गुरुजी आप मुझे बताईये ।।।१५४।।

कमी वाहाँ बुध कोहो किम होय ।। तके गुर कर्म कहीजे मोय ।।
पडे किम लछ कुं लछण देह ।। किसे गुरू कर्म बणे अंग अेह ।।१५५।।

हे गुरुदेवजी,कमीना बुध्दि याने नीच बुध्दि किस कर्म से होते है वह मुझे बताईये तथा कौनसे कर्म से इस देह मे लक्षण–कुलक्षण पडते है । ये पहले के कौन से कर्म से ऐसे लक्षण होते है उसे गुरुदेवजी मुझे बताईये ।।।१५५।।

लंपटी ही होय न बोले हे साच ।। इसा गुर अंग बणे किण पाँच ।।
काणुं किण पाप हुवे गुरू देव ।। तको मुझ आप बतावो हो भेव ।।१५६।।

पहले के कौनसे कर्मसे मनुष्य लंपट(स्त्री लंपट)होते है तथा बोलने मे सत्य नही बोलते

है, यह किस कारण से होता है । गुरुजी यह बताईये । एक आँख का काना किस पाप से होते है, हे गुरुदेवजी,इसका मुझे भेद बताईये ।।।१५६।।

लुलो सोहो मांजर बाडो खेब ।। किसे गुर कर्म पड़े यह अेब ।।
बोळो किम बाळ रण्डिजे हे नार ।। तके कर्म कोहो किसा संसार ।।१५७।।

और किन पापो से लुला याने हाथ,पैर तुटे हुये ऐसा होता है और किस पाप से मांजरा याने बिल्ली जैसे आँखोवाला होता है और बाडा याने तिरछा देखनेवाला और आँखे बैठे हुये किस पापसे होते है,पहले किये हुये कौनसे कर्म से ऐसा पड्ते है और गुरुजी,बहरा कौनसे कर्मसे होते है और औरते बचपन से रंडेली होती है । तो इन्होने पहले संसार मे कौनसे कर्म किये यह बताईये ।।।१५७।।

मरे सो हो नार जोड़ो खण्ड होय ।। परणे हे फेर न जीवे हे कोय ।।
पड़े सो धेक नारी नर मांय ।। कलह सो हो नित्य अबोल्या हा जाय ।।१५८।।

आदमी की पत्नी मर जाती है तो जोडा खंड्ति हो जाता है,वो आदमी और शादी करता है और वह भी मर जाती है । ये कौनसे कर्म से होता है और पती–पत्नी में दोष पड्ता है यह किस कर्म से होता है और पती–पत्नी में किस कारण से कलह होता है जिससे वे दोनो आपस मे बोलते नही । यह किस कर्म से होता है ।।।१५८।।

पडे सो हो बाल बिछोवाहा लोय ।। किस्या गुर कर्म किया एह होय ।।
पड़े सो हो बंध बिके नर नार ।। किसा गुर कर्म किया सेंसार ।।१५९।।

बचपन मे ही अपने माता–पिता से बच्चे का बिछोड होता है तो गुरुजी,पहले उसने कौनसा कर्म किया जिससे बिछोड हुवा । स्त्री और पुरुष गुलाम सरीखे बंधन मे बांधे जाते और पुरुष तथा स्त्री बिक जाते है । हे गुरुदेवजी,इन्होंने संसार मे कौनसे कर्म किये थे जिससे वे बिक कर परतंत्र हो गये ।।।१५९।।

दासी दर चाकर चुकर खाण ।। किस्या गुरू कर्म किया हुवे आण ।।
दवागण पीव न बुझे हे सार ।। किस्या गुरू कर्म किया उन लार ।।१६०।।

पहले के किस कर्म से दासी होती है तथा दूसरो के घर मे चाकर–चुकर,नीच खाणी में कौनसे कर्म से होते है । अब ऐसी खाणी मे जाते है,तो पहले जनम मे इन्होने कौनसा कर्म किया था किये ऐसे हो गये । हे गुरुदेवजी,यह मुझे बताईये । और गुरुजी दवागण याने उस स्त्री का पती उसे अमान्य कर देता है । उसका सार–सम्हाल नही करता । उसको त्याग देता है । तो उसने पिछ्ले जनम मे कौनसा कर्म किया था,कि जिससे उस स्त्री को दवागण कर देता है । ।।१६०।।

हुवे किम नाजर खोजा हा हीज ।। किसे गुरू कर्म पड़े यह बिज ।।
पलटे पुरष हुवे किम नार ।। तके कर्म कोण क होनी बिचार ।।१६१।।

पुरुष पहले के किस कर्म से नाजर(हिजडे)और खोजे होते है । तो गुरुजी,ये पहले के

किस कर्म से इनकी माँ के गर्भमे ऐसा बीज पडता है । पुरुष से पलटकर स्त्री होती है । तो यह पुरुष से स्त्री बनने का कौनसा कर्म है वह विचार करके मुझे बताईये ।।।१६१।।

किस्यो कर्म कियाँ किसो दुख होय ।। तिका बिध सरब कहीजे मोय ।।
मरे सोहो मोत कुमीचां बदेस ।। किस्या गुरू कर्म कहो सब रेस ।।१६२।।

और कौनसा कर्म करनेसे कौनसा दु:ख होता है उसकी सभी विधी मुझे बतावो और अकाल मौत किससे होती है । बुरी तरहसे दुर्घटना से किस कर्मसे मरता है और विदेश मे मृत्यु किस कर्म से होती है । इन्होंने कौनसा कर्म किया था हे गुरुदेवजी,उसका भेद मुझे बताईये । ।।१६२।।

किसे सोहो क्रम कियां हुवे काग ।। किणे गुरू दोष फुटे नर भाग ।।
दासी के पेट लहे अवतार ।। किस्या गुर कर्म किया उण लार ।।१६३।।

और पहले कौनसे कर्म किये जिससे कौवा हुवा और पहलेके कौनसे कर्मसे भाग्यहीन हुवा । पहले कौनसे कर्म किये उससे दासी के पेट से पैदा हुवा । तो इन्होने पूर्व जनम मे कौनसे कर्म किये । गुरुजी,यह बताईये ।।।१६३।।

हुवे सो हो भंगी मेहत्तर स्वान ।। किस्या गुर कर्म किया व्हे आन ।।
डुमा घर घोड़ स ऊँठ कतार ।। किस्या गुर कर्म किया आ हां मार ।।१६४।।

गुरुजी,पहले कौनसा कर्म किया था जिससे भंगी और मेहतर होता है । किस कर्म से कुत्ता बनता है । ये किस कर्मसे आकर होते है । डोमके घर का घोडा तथा कतार का उँट किस कर्म से होते है । इन्होंने पूर्वजनम मे कौनसे कर्म किये थे जिससे इनके उपर यह मार पडती है । हे गुरुदेवजी यह बताईये ।।।१६४।।

दशरावे हे जेम मेहे की सुत होय ।। किसे गुर कर्म से डाकण जोय ।।
बालदा बैल रिखां घर गाय ।। किसे गुर कर्म बंधे अे आय ।।१६५।।

और दशहरा के दिन भैंसा काटा जाता है, तो वह भैंसा किस कर्म से होता है और किस कर्म के कारण औरते डाकिनी होती है । हे गुरुजी,यह बताईये । गुरुदेवजी,बालदा याने बैल की पीठ पर माल इधर का उधर ले जानेवाले । ऐसे बालदा के घर का बैल किस कर्म से होते है तथा ऋषियों के घर पर गाय बनकर किस कर्म से बंधी जाती है ।।।१६५।।

तेली घर बेल गाड़े तीही जाण ।। किस्या गुरू कर्म कियां हुवे हे आण ।।
किसबण लार भडवा हा होय ।। तिके गुरू कर्म कहीजे मोय ।।१६६।।

गुरुजी,तेली के घर का बैल होता है तथा पांचाल की गाडी का बैल बनते है तो ये कौनसे कर्म से आकर हुये यह बताइये । कसबिन के पिछे भड्वा होते है ये ऐसे पहले के कौन से कर्म से आकर बनते है हे गुरुजी,वो कर्म मुझे बताइये ।।।१६६।।

मेहेरी के बस हुवे भरतार ।। काहा उन कर्म कियो गुरू लार ।।

हुवे किम पितर भूत चुडेल ।। तके गुरू कर्म किसा जुग खेल ।।१६७।।

गुरुजी, पिछ्ले जनम मे कौनसे कर्म के कारण पुरुष अपनी पत्नी के वश मे हो जाते है । किस कर्म से मनुष्य पितर तथा भूत होते है और औरते चुडैल बनती है । ये किस कर्म से जगत मे आकर होते है ।।।१६७।।

ऊंधे सो सीस आकासा हा पाव ।। किसे गुर कर्म बणे ब्रछ आव ।।
हुवे किम डुंगर पत्थर पांण ।। तके गुर कर्म कहो मुज मुज आण ।।१६८।।

निचे सिर और आकाश की तरफ पैर इस तरह से ये पेड किस कर्म से होते है । किस कर्म से डोंगर याने परबत होते है और किस कर्म के पाप से पत्थर और पाषाण होते है । हे गुरुजी,ये सभी कर्म मुझे लाकर बताइये ।।।१६८।।

सदा अंग रोग लकुबा होय ।। तके गुर कर्म कहिजे हे मोय ।।
सदा दुख हार सला नहिं जीत ।। तके गुर कर्म किसा किण रीत ।।१६९।।

गुरुजी,अंगो मे हमेशा रोग रहता है । ऐसा रोगी किस कर्म से होता है और पूर्व जनम के किस कर्म से लकवा होता है । हे गुरुजी,यह देखकर मुझे बताईये और हमेशा दु:खी रहता है और जहाँ–तहाँ हमेशा उसकी हार होती है,उसकी सलाह से कही भी विजय नही होती है,हमेशा हार होती है । ये ऐसा किस कर्म से किस रीती से होता है ।।।१६९।।

हुवे जग भूप न जमे हे राज ।। तके गुरू कर्म किसा किम बाज ।।
पिण्डत होय के आवे हे रीस ।। काहा उन करम किया गुरू ईस ।।१७०।।

जगत मे राजा होकर उस राजा का राज्य नही जमता है तो गुरुजी,ये कौनसे कर्म बाजे जाते है । पंड्ति होकर क्रोध आता है । तो उसने पूर्वजनम में कौनसा कर्म किया था । हे गुरुजी,मुझे बताईये ।।।१७०।।

जोगी ही होय न आवे हे बिचार ।। काहा गुर कर्म कियो उन लार ।।
हुवे सो हो साध संतो कन मांय ।। काहा गुर पुरब पाप कहाय ।।१७१।।

हे गुरुदेवजी,योगी होते हुये भी उसने पूर्वजनम मे कौनसा कर्म किया जिससे उसे योग का विचार नही सुझता है । और साधू हो गया परंतु उसे संतोष नही है । ऐसा उन्होंने पूर्वजनम मे कौनसा पाप किया था यह मुझे बताइये ।।।१७१।।

भजे सो हो नाँव नहिं इतबार ।। काहा गुरू करम कियो उन लार ।।
बणायर भेष कमावे हे खेत ।। काहां उण कर्म कियो जुग हेत ।।१७२।।

हे गुरुदेवजी,राम नाम की भजन करते तो है,परंतु राम नाम का उन्हें विश्वास नही होता है,तो उन्होंने पूर्व जनममे कौनसा कर्म किया था और शरीर पर साधू का भेष लेते है और खेतीका काम करके,खेती की कमाई करते है तो उन्होंने पूर्व जनम में कौनसा कर्म किया था,कि वे इस जगत से प्रिती करते है ।।।१७२।।

कथे सो हो ग्यान न सूजे हे भेद ।। काहा गुरू कर्म किवी जग खेद ।।

पढे नित अरथ न सुजे हे कोय ।। काहा कर्म पूरब वाँ उर होय ।।१७३।।

गुरुजी,ज्ञान कथन करके दूसरी को बताते है और स्वयं उन्ही को ही वह भेद दिखाई नही देता है तो उन्होंने पिछ्ले जनममे कौनसा कर्म किया था कि वो इस जगतमे खेद करता और रात–दिन ज्ञान करता और उसका अर्थ नही दिखता तो उसके हृदय में कौनसे कर्म है यह मुझे बताइये ।।।१७३।।

कै सिष सूर नहिं पत मांय ।। काहा गुर कर्म कियो जग आय ।।
ग्यानी सिष होय नहिं गुर धर्म ।। काहा गुर लार कियो उन करम ।।१७४।।

गुरुजी,शिष्य शुरवीरो के जैसी बाते करता है परंतु उसके अंदर(हंसके उर)मे वैसा मत नही है तो उसने पूर्व जनम मे कौनसा कर्म किया कि उसे मत नही आता है याने वह शिष्य मत धारण नही करता है । शिष्य ज्ञानी हो गया और उस शिष्य को गुरुधर्म नही है तो उसने पूर्व जनम मे कौनसा कर्म किया था कि इससे गुरुधर्म पालते नही आता है । हे गुरुदेवजी,यह सब मुझे बताईये ।।।१७४।।

पहुँचे हे जाय सबे लछ नाय ।। कहो गुर दोष किसो जन मांय ।।
ओरां कुं हुँ ग्यान न साजे हे आप ।। किसा गुर कर्म किया उण पाप ।।१७५।।

जाकर पहूँचे हुये है परंतु उनमे सभी लक्षण नही है । तो उन जनोंमे कौनसा दोष है उसे गुरुजी,मुझे बताइये । वे दूसरो को तो ज्ञान बताते है परंतु स्वयं ज्ञान के प्रमाण से चलते नही है । उन्होंने पूर्व जनम मे कौनसा कर्म किया,कौनसा पाप किया,जिससे ज्ञान जानते हुये भी दुसरो को बताते और स्वयं उस ज्ञान से नही चलते ।।।१७५।।

बखाणे हे नाँव करे सुर सेव ।। किसे गुर कर्म न सूजे हे भेव ।।
हुवे तज साध गरिबी नाह ।। किस्या गुर कर्म धस्या उर मांह ।।१७६।।

और राम नाम का महत्व सभी को बताता है,परंतु स्वयं अन्य देवतावों की पूजा करता है तो उसे पूर्व जनम के कौनसे कर्म के कारण भेद नही सूझता है । हे गुरुदेवजी,यह सब मुझे बताइये । सब त्यागकर साधू हो जाता है परंतु उसके अंदर गरीबी नही है तो पूर्व जनम के कौनसे आकर उसके कर्म हृदय मे धँस गये कि उस कर्म से उसमे गरीबी नही रहती है ।१७६।

जको कर्म कियो तिका हुवे हाण ।। सबे मुझ छाँट बतावे हो आण ।।
अनेक तरे बिध कर्म उपाय ।। ऐ कुं कोहो छांट बतावो हो आय ।।१७७।।

जो–जो कर्म करनेसे उन कर्मोसे हानी होती है,तो ये कौनसे कर्म करनेसे कौनसी हानी होती है,वह सब मुझे वर्णन करके बताइये । अनेक तरह के अनेक विधी के कर्म उत्पन्न होते है वो सब अलग–अलग छाँटकर मुझे बताइये ।।।१७७।।

गुर वायक ।। दोहा ।।

सुण सिष मे तो कुं कहुँ ।। साच अरथ ओ जाण ।।

बिन भक्ति सब दोष रे ।। लगे जीव कूं आण ।।१७८।।

तब गुरुदेवजीने शिष्य को कहाँ कि हे शिष्य,तुम सुनो मै तुम्हें बताता हूँ । सच्चा अर्थ तो यह जानो कि,भक्ती किये बिना ये सभी कर्म जीव को आ–आकर लगते है ।।।१७८।।

तुं कहतो सब छाँट कर ।। निरणो करां बजाय ।।
पिण साच अरथ तो ओ सही ।। सुण सिष माने आय ।।१७९।।

तुम कहते हो तो ये सभी कर्म छाँटकर अलग–अलग करके इसका निर्णय करके मै तुम्हें समझाकर बताता हूँ परंतु सच्चा अर्थ यह है हे शिष्य,तुम मानते होगे तो आकर सुनो ।१७९।

कुंडल्यो ।।

भक्त बिना सब करम रे ।। उड़ उड़ लागे आय ।।
ज्युँ सिष सूना खेत में ।। मिरग ढोर चर जाय ।।१८०।।

भक्ती किये बिना ये सभी कर्म उड–उड्कर आकर लगते है । जैसे सुने खेत में याने रखवाले के बिना खेत में हिरण और ढोर आकर चर जाते है ।।।१८०।।

मिरग ढोर चर जाय ।। खेत सो जाय भरिजे ।।
निस दिन नेहचळ बास ।। हर्ष केळा नित कीजे ।।१८१।।

रखवाले के बिना खेत हिरण और ढोरो से भर जाता है । वे रात–दिन निश्चल होकर खेत में रहते तथा हर्ष से खेल क्रिडा नित्य करते है ।।।१८१।।

भजन रूखाळो जे रहे ।। मृग खेत नहीं खाय ।।
भजन बिना सब कर्म रे ।। उड़ उड़ लागे आय ।।१८२।।

इस शरीर मे भजन रहने पर कर्म नही लगते है । जैसे खेत में रखवालदार रहने पर हिरण और ढोर आकर खा नही सकते परंतु भजन किये बिना ये सभी कर्म उड–उड्कर लगते है।।।१८२।।

सिष वायक ।। दोहा ।।

हो गुरदेवजी साची कहीं ।। केहेण फेर नहिं कोय ।।
कोण करम को दोष हे ।। छाँट बतावो मोय ।।१८३।।

शिष्य ने गुरुदेवजी से कहाँ कि हे गुरुदेवजी,आपने सत्य कहाँ । कहने मे कोई अंतर नही रखा परंतु किस कर्म का दोष है वह मेरे प्रश्नों के अनुसार छाँटकर मुझे बताईये ।

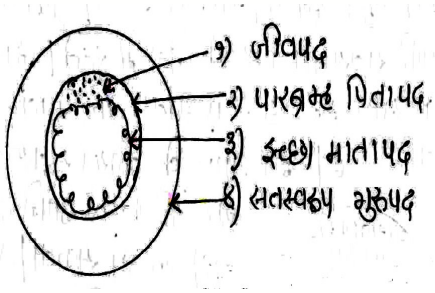

परापरी से चार पद है । ये चारो पद आदि से है । जीव,पारब्रम्ह,इच्छा ये तीनो किसी ना किसी प्रकारके सुखके चाहते है । ये जो सुख चाहते वे सुख ये तीनो अकेले अकेले या तीनो मिलजुल के भी खुदके बलबुते पे नही पा सकते । इनको जो भी छोटे से छोटा सुख चाहिये । हो तो सतस्वरुप इन तीनो को अपना सतस्वरुप विज्ञानका आधार जबतक नही देता

तबतक ये तीनो अकेले के बलपे या मिल–जुल के बल पे भी कितना भी उन सुखो के लिये प्रयास किया तो भी तरसते रह जाते परंतु वह सुख नही मिलता ।

सतस्वरुप गुरु को इन सभी को तृप्त सुख देने की चाहना रहती । तृप्त सुख सिर्फ

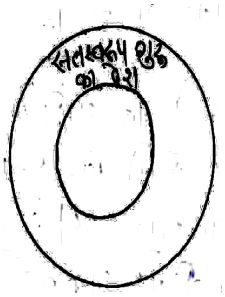

सतस्वरुप गुरु के देश में रहते । जीवके साथ मन और ५ आत्मा यह माया आदि से है । इन माया के कारण सतस्वरुप गुरु जीव को अपने देश नही ले जा सकता । जब तक सभी जीव सतस्वरुप गुरु के देश नही जाते तबतक इच्छा माता और पारब्रम्ह पिता भी पूर्ण विकार रहीत वैरागी विज्ञान स्वभावके नही बनते । वे भी पूर्ण सुखी नही बनते । वे भी जीव को उत्पन्न करना,बडा करना और मारके खाना इस माया काल प्रकृतीके बने रहते । इसलिये साई की सभी जीवो को अपने महासुख के पद मे ले जाना ये पहली जरुरत रहती । जीव मन और ५ आत्मा इस साथवाली माया के कारण सतस्वरुप गुरु के महासुखके देश जा नही सकता । इसलिये साई को जीवको मन और ५ आत्मा से मुक्त होने की विधी देने की महान अवर्णनीय इच्छा हुई । उस इच्छा के चलते सतस्वरुप गुरुने जीव को सहजमे सतस्वरुप गुरु के देशमे पहुँचनेके लिये लगनेवाली तथा जबतक सतस्वरुप गुरुके देश जीव पहुँचता नही तबतक निर्मल मायाके सुख लेते ऐसी होनकाली सृष्टी बनाई और जीव भी सतस्वरुप पहुँचे तबतक होनकाल मे माया का निर्मल सुख लेवे और सुख लेते सहज मे सतस्वरुप गुरु के देश निकल आवे ऐसा मनुष्य देह दिया । और हर जीव को सतस्वरुप देश की विधी तथा ज्ञान सहज मे मिले और हर जीव जल्दी से जल्दी सहज मे महासुख मे जावे इसलिये सतस्वरुप गुरु स्वयम् मनुष्यदेह मे प्रगट होता । जीव के लिये जीव मे ही माता–पिता गुण तथा गुरु गुण कैसे प्रगट होता यह समजेगे । जीव ही जीव का गुरु कैसे है तथा मनुष्य देह ही मनुष्य देह का गुरु कैसे यह समजेगे । ऐसा सतस्वरुप गुरु जीव मे आदि से कहाँ रहता और वह मनुष्य देह मे कैसे प्रगट होता जिसकारण वह जीव तथा उसका देह जगत मे सतस्वरुप गुरुके रुप मे बाजे जाता । सतस्वरुप पारब्रम्ह और होनकाल पारब्रम्ह जैसे जीवात्मा आदिसे है वैसे ये दोनो भी आदिसे है । जीवात्मा स्वयम् दो प्रकृती का है । जीवात्माका हंस ब्रम्ह प्रकृतीका और मन तथा ५ आत्मा माया प्रकृती की । सतस्वरुप पारब्रम्ह जीवात्मा से झिना है मतलब जीव के ब्रम्ह हंस प्रकृती से तथा मन और ५ आत्मा माया प्रकृतीसे झिना है इसलिये जीवात्माके हर अंशमे याने ब्रम्ह स्वभाव के हंस मे,मन मे और ५ आत्मा मे आदि से विराजमान है । होनकाल पारब्रम्ह यह जीव के ब्रम्ह प्रकृती के हंस से जड है और जीव के मन और आत्मा से झिना है इसलिये जीव के ब्रम्ह प्रकृती के हंस मे होनकाल पारब्रम्ह जरासा भी नही है तथा जीव के मन और ५ आत्मा मे ओतप्रोत है ।

सतस्वरुप पारब्रम्ह

१) जीवात्मा के हंस (ब्रम्ह) में ओतप्रोत है। इसके साथ है।
२) जीवात्मा के मन और ५ आत्मा में भी ओत प्रोत है।

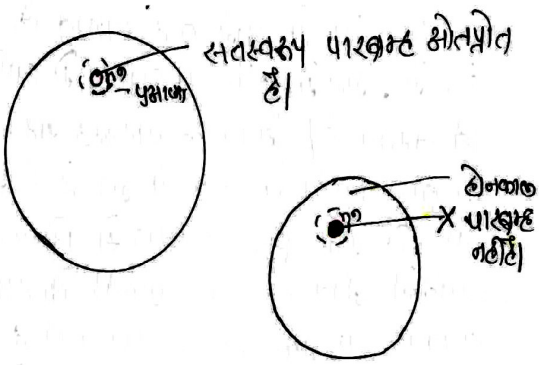

होनकाल पारब्रम्ह

१) जीवात्मा के हंस(ब्रम्ह)मे नेकभर भी नही । इसको छोड़के
२) सिर्फ जीवात्मा के मन और ५ आत्मा इस माया मे ओत प्रोत है।

ऐसा सतस्वरुप जीव मे आदि से बिराजमान है परंतु जीव के लिये माया भ्रम के कारण अप्रगट है । जैसे देह मे सतस्वरुप गुरु प्रगट हुवा मनुष्य देह मिलते ही जीव मे सतस्वरुप गुरु प्रगट हो जाता । यह सतस्वरुप गुरु याने ने:अंछर जीव मे प्रगट होते ही जीव के घट को यह सतशब्द खंड –ब्रम्हंड बना देता । खंड–ब्रम्हंड बनाके यह सतस्वरुप गुरु हंस के ६ पूरब के स्थान (कंठकमल,हदयकमल,मध्यकमल,नाभीकमल,लिंग स्थान,गुदाघाट)और ६ पश्चिम के स्थान (बंकनाल,मेरुदंड,त्रिगुटी,चिदानंद ब्रम्ह,शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह)पार करके हंस को दसवेद्वार ले जाता और हंस के साथवाली माया ५ आत्मा और मन नाभी मे और त्रिगुटी मे निकाल देता तथा हंस ने त्रिगुणी माया के साथ कर्मो के रुप मे कृत्रिम रुप से बनाई हुई माया दसवेद्वार मे पूर्णत: खतम् कर देता । इसप्रकार घट मे का निराकारी होनकाल पारब्रम्ह और जीव के साथवाली मूल निराकारी ५ आत्मा और मूल निराकारी मन नाश करके हंस और हंसका घट जैसा सतस्वरुप माया से मुक्त कोरा है वैसा पूर्ण कोरा सतस्वरुप बना देता । इसकारण मूल सतस्वरुप गुरु और जीव मे सतस्वरुप प्रगट होने के बाद माया मुक्त कोरा सतस्वरुपी हंस से और हंस के देह से बना हुवा सतस्वरुप गुरु ये दोनो के गुण सरीखे रहते ।

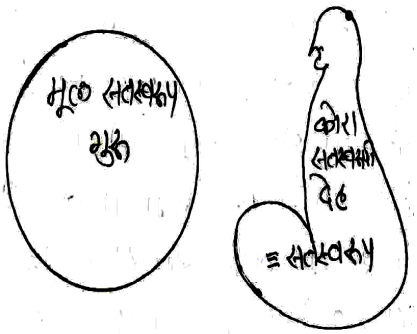

जीव मे प्रगट होनेके बाद माया मुक्त कोरा सतस्वरुप जीव का हंस और देह =सतस्वरुप गुरु

सतस्वरुप गुरु ये दोनो के गुण सरीखे रहते । जैसे सतस्वरुप आदि से सभी आत्मावो का तथा सभी सृष्टी का याने होनकाल और इच्छा माया का गुरु है वैसा हंस मे और हंस के देह मे प्रगट हुवावा सतस्वरुप भी वैसा का वैसा गुरु है कारण दोनो एक है ।

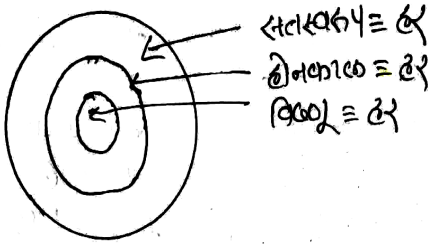

* हर याने क्या ? .

जगत मे सतस्वरुप को भी हर कहते,होनकाल को भी हर कहते तथा विष्णू को भी हर कहते । सतस्वरुप यह सभी का सुख देवाल परमात्मा है । गुरु के रुप मे है और पूर्ण

विज्ञान वैरागी है । उसमे माया जरासी भी नही है । होनकाल यह ब्रम्ह होकर माया का भोगी है और उत्पत्ती करता तथा समय के अनुसार दु:ख देवाल काल स्वरुपी है । विष्णू यह त्रिगुणी माया से निपजी हुई सतोगुणी माया है । जो महाप्रलयमे नष्ट हो जाती है याने प्रलयमे जाती है ।.आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने इस ग्रंथ मे जो हर बताया वह सभी का सुख देवाल विज्ञान स्वरुपी सतस्वरुप परमात्मा को बताया है । होनकाल पारब्रम्ह तथा माया से उपजे हुये विष्णू तथा विष्णू सरीखे मायावी देवता ब्रम्हा,शंकर को नही बताया ।

❊ आन याने क्या ?

आन याने सतस्वरुप परमात्मा देव छोड्कर जितने भी देव त्रिगुणी माया से निपजे है और महाप्रलयमे प्रलय में जाते है,उन सभी देवतावो को आन कहते है । आनमे दो प्रकार है । १) पुण्य करता–ब्रम्हा,विष्णु,महादेव अवतार तथा २)पाप करता–भेरु,क्षेत्रपाल, सितला, दुर्गा आदि । इस ग्रंथमे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने आन विशेष रुपसे बली मांगनेवाले देवता जैसे भेरु,क्षेत्रपाल,सितला आदि को कहाँ है ।

❊ गर्भ में का करार ❊

हे सांई,सिरजन हार आप सुनो,आप मुझसे दुसरे दु:ख जैसे चाहिये वैसे भुगतालो परंतु इस गर्भवास से बाहर लावो । अब तो मै हरी के पास रहूँगा और हर याने रामजी की भक्ती बहुत कड्क होके करुँगा । अब मेरा बाहर बसेरा करो,याने हे हर,मै रात–दिन आपका ही जाप करुँगा और अगर मै बाहर आया तो आपको कभी भी भुलूँगा नही । हर याने रामजी को छोड्के दुसरे देवी–देवतावों का ध्यान,भजन,पुजन नही करुँगा । हे हर,कृपा करके मुझे बाहर लावो। मेरे पहले किये हुये सभी दोष बक्षीस याने माफ कर दो।

❊ धर्मराय के दरबार का करार ❊

मै रामनाम मे रचमच होकर रामनाम की भक्ती करुँगा । तिर्थ,धाम,होम,यज्ञ,तपस्या तथा मायावी सभी भक्तीयाँ इन सभी से अलग रहकर सभी का त्याग करुँगा । आपसे जरासी भी ताली नही तोडूँगा । मै सभी मनुष्यदेह पकड्कर अन्य सभी ८४००००० योनी के दु:खीत पिडीत जीवोपर दया करुँगा । मुखसे मै सदा सत्य वचन बोलूँगा और सभी से सज्जन याने अपना बनके रहूँगा । मै नित्य सच्चे सतस्वरुप देव की सेवा करुँगा और दिल में जो कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा ऐसे सत्तदेव को देखूँगा । जो संसार में जीव है उन सभी जीवों के रुप को मै मेरे समान परमात्मा के ही जीव है इस रुपसे जानूँगा । मै रामजी के साधू की सेवा करुँगा और सिर्फ एक अनघड नाथ का भजन करुँगा तथा रामजी मिलाने की सभी शुभ शुभ बातें करुँगा । साहेब पाने की चाहना रखनेवाले दु:खीत–पिडीत को दान दुँगा । याने मेरेसे जितना जादा बनेगा उतनी तन,धनसे मदत करुँगा और ८४००००० योनीके निरअपराधी प्राणी मात्र को खाने–पिने

और रहने का दान करुँगा । मै आपके बताये मार्गपर नित्य चलूँगा । मै दुजो का द्वेष,निंद्या ये काम त्याग दूँगा । मै रामजी के भक्तों का लाड करुँगा और सभी तरह के मद और मगरुरी तथा सभी तरह का कड्वापन छोड दूँगा । मै सिरजनहार का नाम हर साँस में लूँगा । मै हर को हृदय में सदा के लिये रखूँगा । इसके अलावा अन्य किसी देवता की भक्ती नही करुँगा ।।।१८३।।

गुर वायक ।। छंद उधोर ।।

हे सिष अंध हुवे इण कर्म ।। गुर को रूप निंदे धर्म ।।
गुंगो होय हे इम जाय ।। गुरां सूं चबे सामो आय ।।१८४।।

जीवने सतस्वरुप परमात्मा गुरुसे मनुष्य देह मांगा । उस वक्त हे परमात्मा तेरी ही भक्ती करुँगा और कालकी फासी सदाके लिये काटूँगा यह जीव ने सतस्वरुप परमात्मा के दरबार में यमराज के साथ कड्वा करार किया । यमराज ने करार के अनुसार धरती पे मनुष्य देह देने पे भक्ती नही की तो इस गुनाह का परीणाम नरक रहेगा ऐसा खुल्ला खुल्ला जीव को समझा दिया । जीव मनुष्य देह में आने के पश्चात जिस मनुष्य देह में सतस्वरुप परमात्मा याने सतस्वरुप गुरु जिस घट में प्रगट हुवा वह जीव को पहचान में आवे और उस सतस्वरुप गुरु के शरण जीव आकर काल की फासी काटें इसलिये आँखे दी । ऐसा सतस्वरुप गुरु मिलने पे भी यह जीव उस सतस्वरुप गुरु को पहचान ने की पर्वा नही करता उलटा उस सतस्वरुप गुरु के रुप की निंदा करता, आलोचना करता । इस गुनाह के कारण जिस सतस्वरुप विज्ञान ने जीव को आँखो से देखने की जो माया दी थी वह माया उसने सतस्वरुप गुरु को आँखो से न पहचानने के कारण तथा सतस्वरुप गुरु की उलटी निंदा करने के कारण आँखो न दिखने की याने अंधा बनने की ऐसी उलटी माया उसमे प्रगट हो गई । जिसकारण अगले जन्मो में उसे आँखे होते हुये भी दिखाई नही दिया ऐसा अंधा बना । जीव को अंधा बनाने का काम सतस्वरुप परमात्माने नही किया । क्योंकी सतस्वरुप विज्ञान स्वयम् तो कही आता भी नही और जाता भी नही तथा कुछ करता भी नही परंतु जीव के चाहना के अनुसार वह बनता । इसीप्रकार जीव के चाहना के अनुसार सतस्वरुप परमात्मा ने जीव को सतस्वरुप गुरु पहचान मे आवे इसलिये आँखो से देखने का विज्ञान दिया था लेकिन जीवने सतस्वरुप गुरु को न पहचानने के कारण तथा अंधा बनके उलटी उनकी निंदा करने के कारण आँखो से देखने को दिया हुवा विज्ञान जीव ने ही उलटा दिया । इसका अपने आपसे परीणाम यह हुवा की जीव मे आँखोसे न दिखनेवाला याने अंधा बननेवाला विज्ञान खुद मे प्रगट हो गया । काल से मुक्त करानेवाले सतस्वरुप गुरु के मुख से ज्ञान न सुनते उसीके साथ मगरुरी से पेश होकर काल के मुख मे रखनेवाला माया के ज्ञान का चबर-चबरपना करता । सतस्वरुप

परमात्माने सतस्वरुप गुरुसे नम्रतासे पेश होकर अपनी काल के मुख में रखनेवाली माया की शंकाये,भ्रम निकालने के लिये सतस्वरुप परमात्मा याने सतस्वरुप गुरु ने मुख में बोलने की जो माया प्रगट करा दी थी वही माया जीव ने सतस्वरुप गुरु के मुख से ज्ञान न सुनने के कारण तथा उन्हीं के साथ उलटा मगरुरी से पेश होकर माया के ज्ञान का चबर–चबरपना करने के कारण मुख से न बोलने की याने गुँगा बनने की ऐसी उलटी माया उसमे प्रगट हो गई । जिसकारण अगले जन्मो में उसे मुख होते हुये भी बोल नही पाया ऐसा गुँगा बना । जीव को गुँगा बनाने का काम सतस्वरुप परमात्मा ने नही किया । जीव के चाहना के अनुसार सतस्वरुप परमात्मा ने जीव को सतस्वरुप गुरु से माया की शंकाये तथा भ्रम निकालने के लिये मुख में बोलने को विज्ञान प्रगट करा दिया था लेकिन जीव ने सतस्वरुप गुरु के मुखसे ज्ञान न सुनते उलटा उनके साथ मगरुरी से पेश होकर माया के ज्ञान का चबर–चबरपना करके मुख मे बोलने का दिया हुवा विज्ञान जीव ने ही उलटा दिया । इसका अपने आपसे परीणाम यह हुवा की जीव मे मुख से न बोलनेवाला याने गुँगा बननेवाला विज्ञान खुद मे प्रगट हो गया ।।।१८४।।

निंदे ग्यान कूं नर आय ।। बोळो हुवे जुग जुग जाय ।।
पंगो होय इण प्रकार ।। दर्शण जात बेसे हार ।।१८५।।

सतस्वरुप परमात्माने जीव को कान वैराग्य ज्ञान–विज्ञान सुनके,समज के धारन करने के लिये दिये थे । जीव ऐसा ज्ञान सुनके धारन न करते उस ज्ञान की निंदा करता । इस गुनाह के कारण सतस्वरुप परमात्मा ने जीव को सतस्वरुप वैराग्य ज्ञान–विज्ञान सुनके धारन करने के लिये कर्ण से सुनने की जो माया दी थी वह माया जीवने वैराग्य ज्ञान–विज्ञान धारन न करने के कारण और उलटा उस सतस्वरुप ज्ञान की निंदा करने के कारण कर्णो से न सुनने की याने बेहरा बनने की ऐसी उलटी माया उसमे प्रगट हो गई । जिसकारण युगानयुग ८४००००० योनीयो में कर्ण होते हुये भी सुनाई नही दिया ऐसा बेहरा बना । जीव को बेहरा बनाने का काम सतस्वरुप परमात्माने नही किया रहता । जीव के चाहनाके अनुसार सतस्वरुप परमात्माने जीव को सतस्वरुप वैराग्य ज्ञान–विज्ञान सुनके धारन करने के लिये कर्ण से सुनने का विज्ञान दिया था । परंतु जीव ने सतस्वरुप वैराग्य ज्ञान–विज्ञान सुनके धारन न करने के कारण तथा उस सतस्वरुप ज्ञान की उलटी निंदा करने के कारण कर्णो से सुनने का दिया हुवा विज्ञान जीव ने ही उलटा दिया । इसका अपने आपसे परीणाम यह हुवा की जीव में कर्णो से न सुननेवाला याने बेहरा बननेवाला विज्ञान खुदमे प्रगट हो गया । देह मे प्रगट हुये सतस्वरुप गुरु के दर्शन करने के लिये जाने निकलता परंतु सतस्वरुप गुरु जहाँ पे विराजमान है वहाँ तक न जाते रास्ते में ही माया के भ्रम में आकर या शरीर के आलसवश दर्शन की चाहना त्याग देता और रास्ते में ही हारकर बैठ जाता । इस गुनाह के कारण जिस सतस्वरुप परमात्मा ने जीव

को पैरो से चलने की जो माया दी थी वह माया उसने सतस्वरुप गुरु के दर्शन न जाते रास्ते में हारकर बैठ जाने के कारण पैरो से न चलने की याने लंगडा बनने की ऐसी उलटी माया उसमे प्रगट हो गई । इसकारण ४३२०००० सालतक पैर होते हुये भी चल नही सका ऐसा लंगडा बनकर दु:ख भोगा । जीव को लंगडा बनाने का काम सतस्वरुप परमात्मा ने नही किया रहता । जीव के चाहना के अनुसार सतस्वरुप परमात्मा ने जीव को सतस्वरुप गुरु के दर्शन करने जा सके इसलिये पैरोसे चलने का विज्ञान दिया था । ऐसा विज्ञान होते हुये भी जीव ने सतस्वरुप गुरु के दर्शन न जाते रास्ते में हारकर बैठ जाने के कारण पैरो से चलने का दिया हुवा विज्ञान जीव ने ही उलटा दिया । इसका अपने आपसे परीणाम यह हुवा कि जीव में पैरो से न चलने का याने लंगडा बननेवाला विज्ञान प्रगट हुवा । ।।१८५।।

हुवे हीण बुध युँ माय ।। निंदे धर्म अपनो जाय ।।
तिरिया बांझ हुवे इण पाप ।। निंदे भक्त हर को जाप ।।१८६।।

परमात्मा ने जीव को अपना धर्म समजने के लिये तेज बुध्दी दी थी । यह तेजबुध्दी

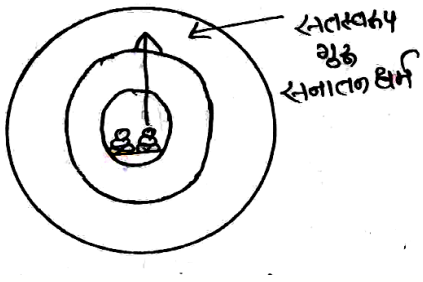

परमात्मा से मिलने पे भी जीव उस तेजबुध्दी सतस्वरुप गुरु से जीव का सनातन धर्म क्या है? यह सुननेके बाद भी धारन नही करता । वह जो जीव का अपना सनातन धर्म है उसीकी निंदा करता । इसकारण आगे युगानयुगातक ४३२०००० सालतक तेज न सोचनेवाली छोटी बुध्दी मिलती । महिला सतस्वरुप हर याने रामजीके भक्तों की तथा रामनाम का जाप करते उस जाप की निंदा करती वे महिला इस कुपाप से अगले जनम में बांझ होती । महिला ये संतो को जनम देनेवाली माता रहती । महिला कोई भी रही तो भी जगत का हर पुत्र उसके पुत्र जनम देने की विधी दी थी वही विधी से जन्मा । ऐसा जगत का कोई भी पुत्र संत बनके हरी का जाप करता है । उस संत की हर भक्ती मातागुण पाई हुई स्त्री उस संत की तथा हरीजाप की निंदा करती उससे वह स्त्री अगले जनम में बांझ बनती ।।।१८६।।

मारे बाल कुं बिष पाय ।। तां ते बांझ व्हे इम जांय ।।
तो तो होय इन सुं जाण ।। बोले मगज तेढी ही बाण ।।१८७।।

हर बालक गर्भ अवस्थामें परमात्मा से करार करता कि,मै तेरी ही भक्ती करुँगा । ऐसे बालको को संत बनने के पहले ही विष देकर जो माता मारती वह स्त्री माता बनने के लायक नही रहती । इसलिये वह स्त्री अगले जनममें बांझ बनती । कुद्रतने स्त्री को बालक की माता बनने का विज्ञान प्रगट करा दिया था । वह प्रगट हुवावा विज्ञान यह स्त्री माता बनने के बाद बालको को मारने मे प्रयोग करने से वह प्रगट विज्ञान युगानयुग के

लिये लुप्त हो जाता । इसकारण यह स्त्री का शरीर छुटने के बाद वह स्त्री ८४००००० योनी के कोई भी योनी में माता नही बन पाती । ऐसी वह स्त्री बांझ होती । मनुष्य तोतरा इसकारण हुवा कि सतस्वरुप गुरु जिस देह में प्रगट हुवा ऐसे गुरु के साथ मन मस्ती मे आकर मगरुरी से टेढी बात किया । ।।१८७।।

त्रिया परण मर मर जाय ।। पुरब पाप पहुँचे हे आय ।।
पुरब पाप सुण सिष एह ।। खादा ह दरब अर दुख देह ।।१८८।।

साई ने पुरुष को नितीसे,मेहनत से धन कमाने का धर्म दिया था । जो पुरुष नितीसे,मेहनत से धन नही कमाता वह अपने अबला स्त्री पे अनेक डर,बल बताकर अनेक दु:ख देकर उस स्त्री के मईकेसे धन मंगाकर धन खाता । ऐसे पुरुष की अगले जनम में आयी हुई पत्नी रोग–उपचारो में पती का धन लगाकर दु:ख देकर मरती । उसके मरने के पश्चात फिर वह विवाह करता वह भी मर जाती । फिर विवाह करता वह भी मरती । ऐसे दु:ख पड्ते ।।।१८८।।

बिकळी हि होय ईणे सुण करम ।। गुरां सुं अड़े छाडे हे धरम ।।
काणो पाप इण सुंह जाण ।। आतम देव निंदे आण ।।१८९।।

विकली याने गुरुसे ज्ञान सुनने के बाद भी सतस्वरुप ज्ञान और माया का ज्ञान इसका फरक जानकर गुरुज्ञान धारन करने की समझ नही ला पाता । ऐसा विकली होता । कारण पिछ्ले जनम में गुरु का धर्म मिलने पे भी गुरु से बताये हुये धर्म से अड्ता वह अपने विषय विकारो में रमता इसकारण विकली होता । आँखो से काना याने एक आँखसे अंधा इस–कारण होता कि सतस्वरुपी गुरु ने बताये हुये आत्मा का देव सतस्वरुप की निंदा करता ।।।१८९।।

बाड़ो करे हे इण पाप ।। निंदे हे नेण नरका हा आप ।।
हुवे मांजरो इण दोष ।। दुखिया देख नहिं दे पोष ।।१९०।।

बाड़ा याने तिरछा देखनेवाला इस पाप से बनता कि जगतके मनुष्योंके आँखो की निंदा करता । मांजरा याने बिल्ली जैसे आँखोंवाला इस पाप से होता कि,खुद के पास जरुरत से अति जादा होकर भी दु:खी जीवको आधार नही देता । साईने हर किसीको जरुरतसे जादा इसलिये दिया कि दु:खी जीव को देखकर आधार देवे और दु:खी जीव समजना चाहिये इसलिये आँख भी दी । यह मनुष्य अपने सुखके सामने दु:खी जीव जानता नही और दु:खी जीव न जानने के कारण दु:खी जीव को आधार भी देता नही इसकारण वह मनुष्य मांजरा होता याने जो गर्भमे करार किया था दु:खी जीव देखकर पोषण करुँगा वह दु:खी जीव देखने का विज्ञान गमा देता ।१९०।

नाजर होय हे ईम आण ।। तप में हे बिकळ इन्द्रि हि जाण ।।
खोजा होय हे इण कर्म ।। मैरी हि रूप निंदे धर्म ।।१९१।।

तपस्या करते समय इंद्रिया चलायमान होती इसकारण वह जीव अगले जनम मे नाजर होता मतलब नपुंसक बनता । स्त्री के माता बनने के धर्म की निंदा करता वह पुरुष अगले जनम में खोजा बनता । स्त्री नही रहती तो सृष्टी ही नही बनती थी और सृष्टी नही बनती थी तो संत नही निपजते थे । इतने भारी धर्म की जो मनुष्य निंदा करता । उसका अगले जनम में खोजा याने छोटा कद बनता ।।।१९१।।

ध्यावे हे आन बिषिया हा खाय ।। या बिध नीच कुळ में हे जाय ।।
दूजी हि जीव दया दिल नाह ।। ता ते नीच कुळ में हे जाय ।।१९२।।

सतस्वरुप देवता की भक्ती छोड्कर भेरु ,भोपा ,खंडोबा ,म्हसोबा ,सितला,दुर्गा,खेतपाल ऐसे पापकर्ते देवता की ध्यावना करता और नीच प्रकार से विषयरस भोगता । वह अगले जनम मे निचकुल में जनमता । जो मनुष्य निरअपराधी प्राणी पे दया न बताते मार-मारकर खाते तथा आन देवतावो को बली देता । वह मनुष्य नीच कुल में जनमता ।।।१९२।।

तीजो धर्म करणी हि नाह ।। ताते हीण कुळ मे हे जाह ।।
मंतर मूठ सीखे आय ।। जद ओ पड़े मिधम जाय ।।१९३।।

जिसका धर्म तथा संसार में रहने की करनी नीच है वह हिन कुल में याने जहाँ मनुष्य देह मिलने पे भी सतस्वरुप भक्ती नही मिल सकती ऐसे कुलमें जनमता । जो मूठ मारने सरीखी नीच विद्या सिखता वह भी नीच कुल में जनमता । सतस्वरुप विज्ञान की विद्या सिखने के लिये मनुष्य देह दिया था वह देह हिन मंत्रोमें लगाया । इसिलिये वह नीच कुल में जाकर पड्ता । जहाँ सतस्वरुप विज्ञान कभी नही मिलता ।।।१९३।।

कर्मा बिध नाना हि किन ।। लघु अब कहुँ गुर के लीन ।।
राखे गुरां सुं अण राय ।। जद ओ जीव नरका हां जाय ।।१९४।।

नरकमें ले जानेवाले नीच कर्मोकी विधी नाना प्रकारसे करता और सतस्वरुप के शुभ शुभ कर्म बतानेवाले गुरु को छोटा समजता और ऐसे गुरु से भिन्न भाव बनाके रखता इसकारण वह जीव नरक में जाकर पड्ता ।।।१९४।।

गुरां कुं मिनष जाणे हे कोय ।। इणे सुण दोष भरमे हे लोय ।।
सेली जाण ले गुरां सीख ।। जद सुण भर्म फेले बिष ।।१९५।।

जिस देहमें सतस्वरुप गुरु प्रगट हुवा है ऐसे गुरुको सतस्वरुप न समजते जगतके बराबर का मनुष्य समजता इस दोषसे वह मनुष्य अगले जनममें भ्रमीत रहता । जिस देहमे सतस्वरुप प्रगट हुवा है ऐसे गुरुके उपदेशको जगतके बराबरका साधारण उपदेश जानकर त्यागता वह अगले जनममे भ्रमीत रहता याने सच्चा क्या और झूठा क्या यह नही समझ पाता ।।।१९५।।

रखे कपट दर्शन जाय ।। इणे सुण दोष रोगी ही थाय ।।

मेहेमा करत जाणे कम ।। इणे सुंण दोष ओछा ह दम ।।१९६।।

गुरु के दर्शन को निर्मलतासे न जाते कपट से जाता इसकारण वह मनुष्य अगले जनम में रोगी बनता । सतस्वरुप ज्ञान बतानेवाले गुरु की महीमा सतस्वरुप के पराक्रम की न करते अन्य भेरु,भोपा ऐसे विकारी माया की संतो के पराक्रम से कम बताकर महिमा करते उसको अगले जनम में ७७७६००००० साँस से कम साँस का मनुष्य देह मिलता । मनुष्य देह मे समज आने के बाद सतस्वरुप गुरु की महिमा सतस्वरुप के समान न करते ना समज देह के समान करता इसकारण उस मनुष्य की आयु नासमज देहतक की बन जाती ।।।१९६।।

लागे तीन फेर सुण पाप ।। जे कम साध जाणे आप ।।
दुबध्या राख बंदे हे कोय ।। इणे सुण दोय बिकळी होय ।।१९७।।

जो मनुष्य सतस्वरुपी साधू को अपनी बुध्दी के समज से कम समजता । इसकारण वह मनुष्य अगले जनम मे विकली होता । याने सच्चा सतस्वरुप क्या और काल के मुख की झूठी माया क्या इस निर्णय लेने के क्षमता का नही रहता । दुबध्या याने बुध्दी से साधू को सतस्वरुप न समजते माया समजता और भेरु,भोपा समान माया समजके वंदना करता । इसकारण वह अगले जनम मे विकली होता । परमात्मा ने जो बुध्दी साधू समजने के लिये दी थी वही बुध्दी नीच प्रकृती से वापरता(इस्तेमाल करता)इसलिये वह मनुष्य अगले जनम मे विकली होता । ।।१९७।।

धारे साध सुं सुण धेष ।। या दोष सुं सुण बिटंबे भेष ।।
जन सुं मिल्या बोले नाह ।। इण सुण दोष गुंगो हुव जाय ।।१९८।।

जिस मनुष्यने काल छुटनेके लिये जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण यह वेष धारण किया और कालसे मुक्त करा देनेवाले साधूसे द्वेष करता। उसके जोगी,जंगम, सेवडा,सन्यासी, फकीर,ब्राम्हण इस भेष का अनादर होता वह मनुष्य ८४००००० योनीमें कठीण दु:ख भोगता। सतस्वरुपी साधू मिलनेपे जो मनुष्य बोलता नही। अहम के अकड मे रहता । इस पाप से वह मनुष्य अगले जनम में गुंगा होता ।।।१९८।।

हरजन देख मन रो साय ।। इणे सुन दोष नरकां जाय ।।
जन सुं बाद मांडे कोय ।। इण सुण दोष क्रोधी होय ।।१९९।।

हरीजन याने सतस्वरुप साधू को देखकर मन में रोष लाता । वह मनुष्य शरीर छुटते नरक में पडता । सतस्वरुपी संत से क्रोध लाकर विवाद करता वह मनुष्य अगले जनम में बात बात मे बुध्दी और सुध्दी जायेगी ऐसा क्रोधी बनता ।।।१९९।।

बाळक बोहोत हुवे इम जोय ।। तसकर पीव परहर होय ।।
सदा भूख रहे इण पाप ।। गुरा सुं पेल जीमे आप ।।२००।।

जिसने इसके पहले के मनुष्य जनम मे व्यभिचारीयो के स्वाधीन होकर अपने पती का

त्याग किया है उसे इस जनममें उसके कुक से पाल–पोष नही कर सकती इतने बालक जनमते है । गुरु याने सतस्वरुपी संत भोजन के लिये घर पे पधारे है और उनको प्रेम से भोजन करवाने के पहले ही घर का कोई सदस्य उन संत पे मन ही मन या उजागीरी से नाराज होता और मुझे भोजन के लिये कुछ बचेगा नही यह समजकर गुरु को भोजन करवाने पहले खुद भोजन कर लेता है । ऐसे हंसको अगले जनम मे पेटभर रोटी कभी नही मिलने से सदा भूक बनी रहती ।।।२००।।

काचा गिरे सुण ईण दोष ।। दीयो नहिं सरणे आया पोष ।।
बाळक जलम मर मर जाय ।। बांधे बेर ज्याँ त्याँ आय ।।२०१।।

सतगुरु परमात्माने माताको शरीरसे ही दो दुधके स्तन देकर पोषण करने का स्वभाव कुद्रती दिया है । ऐसी माताके शरणमें अबला स्थितीका बालक आता है और उसके पास बालक को पोषन करनेकी स्थिती होते हुये भी वह उसका पोषन नही करती है । इस गुनाहसे अगले जनममें उस माताको गर्भ रहता परंतु वह गर्भ पूर्ण शरीर धारण न करते कच्चेपनमें ही माता का शरीर त्याग देता । ऐसा दु:ख उस माता पे बार–बार पड्ता । जो स्त्री पहले स्त्री जनममें जहाँ वहाँ बेकसूर,अबला स्थितीके नर–नारीके साथ उनका कोई दोष न होते बेर बांधकर दु:ख देती । इस दोषके कारण अगले जनममें उस स्त्रीके कुकसे बालक जनमते,कुछ दिन उसके साथ रमते,मोह लगाते और मर जाते । इसप्रकार उस स्त्रीपर इस गुनाहका दु:ख पड्ता। ।।२०१।।

दलद्रि रहे हे ईण पाप ।। छाडे भक्त हर को जाप ।।
लछण पडे निरसा अेम ।। गुर सुं निरस दूजा प्रेम ।।२०२।।

सतस्वरुप की भक्ती समज ली और धारन भी की परंतु माया के लोभ वश रामजी की भक्ती त्याग दी और लोभ पूर्ण करने के लिये दुजी भक्तीयाँ धारन कर ली । इस पाप के कारण जब अगला मनुष्य देह मिला तब अती दरिद्री के दु:ख पडे । नर–नारी मोक्ष देनेवाले सतगुरु को ज्ञान से जानकर भी प्रेम नही करते उलटा निरस बनकर रहते और अन्य जगत के मायावी साधू तथा नर–नारी के साथ दिलसे प्रेम करते । ऐसे मनुष्य अगले जनम में दरिद्री सरीखे हलके लक्षण के साथ जन्म लेते । नर–नारी मोक्ष देनेवाले सतगुरु को ज्ञानसे जानकर भी उनसे प्रेम नही करते उलटा निरस बनकर रहते और अन्य जगत के मायावी साधू तथा नर–नारी के साथ दिल से प्रेम करते ऐसे मनुष्य अगले जनम में दरिद्री सरीखे हलके लक्षण के साथ जनम लेते ।।।२०२।।

लंपटी होवे हे इण पाप ।। सत्तगुर संगम निंदे आप ।।
अेसी रेहे दिल में जाण ।। उर मे ओर मुख कहे बाण ।।२०३।।

सतगुरु के संगत मे महिला तथा पुरुष दोनो भी रहते । अधिकतर सतगुरु के संग मे पुरुष से महिलाये अधिक रहती और महिलावो को भक्ती करने का भाव भी पुरुषो से अधिक

रहता । इसकारण वे सतगुरु के इर्द गिर्द याने नजदिक जादा रहते । ऐसे निर्मल महिलावो के प्रती निर्मल सतगुरुके साथ का निच भाव याने व्यभिचारी भाव जो मनुष्य मन मे लाता वह मनुष्य अगले जनम मे स्त्री लंपट ऐसा निरसा लक्षण लेकर जनमता । जो मनुष्य महिला संत के साथ हृदय मे व्यभिचारी प्रकृती रखता और उसे भरमाने के लिये मुख में अपने शिलपना की महिमा करता । ऐसे हृदय मे एक सोच और मुख मे अलग बात ऐसा मनुष्य अगले जनम मे स्त्री लंपट बनता ।।।२०३।।

ते सुण निपट लपटी होय ।। दुबध्या रहे गुरां बिच जोय ।।
उर मुख रखे निस दिन दोय ।। जब अंग कुबरो हुवे जोय ।।२०४।।

जिस मनुष्यके दिलमे कुद्रतीही व्यभिचारी स्वभाव होते हुये भी स्वयम्को शिलवान समजता और उसका गुरु कुद्रतीही शिलवान स्वभाव का है उनको व्यभिचारी स्वभाव का समजता । ऐसे द्वेतभाव रखकर सतगुरु के साथ बर्ताव करता । वह मनुष्य अगले जनम में भारी स्त्री लंपटी होता । सतगुरु के साथ बर्ताव करते वक्त जिस मनुष्य के हदय मे रात-दिन एक बात और मुख मे दुजी बात रहती वह मनुष्य अगले जनम में शरीर से कुबडा होता ।।।२०४।।

छंद मोती दान ।।

छुडावे हे नाम नाँ नाँ बिष सार ।। इण सुण दोष रंडीजे हे नार ।।
जना बिच ब्रोध लगावे हे कोय ।। इण सुण दोष मरे घर जोय ।।२०५।।

पुरुष संतको नाना प्रकार की विषय वासना मे मोहित कर उस संत पुरुष का रामनाम छुडाती वह स्त्री अगले जनम में विधवा होती । जो मनुष्य हर समय साथ में बैठनेवाले रामनामी संतो को एक-दुजे के प्रती भला-बुरा समजाके आपस में एक-दुजे के प्रती गैरसमज करा देता जिससे हररोज साथ मे उठ बैठ करनेवाले प्रेमी संतो मे विरोध निर्माण होता । इस दोष से उस मनुष्य की अगले जनम मे ब्याही हुई स्त्री जिससे उसे भारी प्रेम रहता वह मर जाती । ।।२०५।।

पडे सो ब्रोध सुणो इण पाप ।। जना कुं मोहो छोडावे हे जाप ।।
माइ सुण बाळ बिछो हो अेम ।। संता प्र ताव पडया सुं हुवे प्रेम ।।२०६।।

रामनाम लेनेवाले संतो का अपने मायावी ज्ञान मे कैसा मोक्ष है यह पटाकर मोहित करती है और उस संत का असली मोक्ष देनेवाले रामनाम का जाप छुडाती है । इस पाप से उस स्त्री को अगले जनम में पती-पत्नी करके नित्य साथमें रहते हुये भी अपने पती से भारी बेर तथा नाराजी रहती । जिस स्त्री को रामनामी संत पे ताप याने कष्ट पडने पे खुशी होती । इस पाप से अगले जनम मे उस स्त्रीसे उसके गोदसे जनमे हुये बालकका(जिससे उसे भारी प्रेम लगा था)बिछोडा हो जाता ।।।२०६।।

बंधी सो हो जीव पडे इण पाप ।। भुलावे हे नाम छुडावे हे जाप ।।

दवागण कर्म इणे सुं दुख ।। सदा प्रत द्रोह दियो नहिं सुख ।।२०७।।

जो मनुष्य या स्त्री होनकाल के बंदी में से छुटने के जरुरत से सतस्वरुपी नाम का जाप करता और ऐसे संत का जो कोई मनुष्य जाप भुलाता । ऐसा मनुष्य अगले जनम में गुलाम बनता । जिस स्त्री ने पिछ्ले जनम में हमेशा पती का द्रोह किया एवम् पती को कभी सुख नही दिया इस पहले पाप से वह स्त्री दवागण याने पती को नापसंद का दु:ख भोगती ।।।२०७।।

गुरा की टेल करें तहां जाण ।। तिका पर दोष लगावे हे आण ।।
इणे सुण दोष हुवे बिभचार ।। चाकर चुकर दासी हुवे नार ।।२०८।।

महिला हंस समय बेसमय जहाँ वहाँ अपने सतस्वरुपी सतगुरु की निर्मल तथा निजभाव से सेवा करती । ऐसे स्त्रीपर व्यभिचारीणी सरीखा जो स्त्री निच डाग लगाती वह स्त्री अगले जनम मे व्यभिचारीणी बनाई जाती या दासी,चाकर–चुकर बनके व्यभिचारीणी प्रकृती मे खिचे जाती । यह पाप उसे लगता ।।।२०८।।

गुन्हा सो क्रोड करें नर कोय ।। तबे सुण अवरत या गत होय ।।
पलटे पुरष हुवे ईम नार ।। भवानी जाप जपे संसार ।।२०९।।

जो पुरुष महिलावोके साथ महिलावो को बरदास्त नही होता ऐसी करोडो निच हरकते करता । इस गुनाहसे वह पुरुष अगले जनममे पुरुषका स्त्री बनता और उसने जो महिलावो के साथ बरदास्त न हो सकती ऐसे अनेक निच हरकते की थी वही हरकते उसे पुरुषका स्त्री बनने के बाद भोगनी पड्ती । इस संसार मे जो पुरुष भवानी का जाप करता है और पूर्णत: भवानी के स्वभाव से रहता वह पुरुष अगले जनम में पुरुष से पलटकर स्त्री बनता है ।।।२०९।।

तजे सुण नाँव न केवळ कोय ।। जप्या सुं जाप भवानी ही जोय ।।
मरे इण कर्म कुमीचां जाय ।। गुरां पत दोष लगावे हे आय ।।२१०।।

जो मनुष्य न केवल सतस्वरुप समजनेके बाद भी गुरुके धर्मको दोष लगाता और सतस्वरुप का न केवल नाम त्याग देता तथा सतस्वरुप से श्रेष्ठ भवानी को मानकर उसका जाप जपता और भवानी को निरअपराधी प्राणियो की बली देता इसकारण वह मनुष्य कुमौत याने बडे निच तरह मरता और कठीण भूत योनी सरीखे अती दु:ख के योनी में जा पड्ता ।।।२१०।।

गुरां सुं बाद उथापे ग्यान ।। इसे कर्म काग होवे नर आन ।।
भंगी इण कर्म हुवे सिष जोय ।। गुरां सुं रेण रखे भिन कोय ।।२११।।

सतगुरु के साथ कपट प्रकृती रखकर सतगुरुसे वाद–विवाद करके उनका सत्य ज्ञान उलटा देता वह मनुष्य अगले जनम मे कौअे के अती दु:खीत ऐसे कौअे योनी में जनमता और कठीण दु:ख भोगता । ८४००००० योनी मे जानेवाला हर जीव कौअे योनी मे जाता

परंतु यह वाद-विवादी कपटी मनुष्य उनके सरीखा ही कौऐ योनी में जरुर जाता परंतु अन्य कौओसे अती जादा दु:ख भोगता । जो जीव उच्च आचारी तथा ज्ञान के समजवान कुल में जनमने के बाद भी सतगुरु को हलके आचार का समजकर भिन भाव रखता । वह मनुष्य अगले जनम मे मैला सर पे उठानेवाला मेहतर बनता यह दु:ख झेलता । ।।२११।।

फुटे नर भाग सदा रेहे एम ।। गुरां का बेण उथापे हे नेम ।।
इणे सुण दोय डुमा घर घोड ।। गुरां कंहुँ टेहेल उदक न चोड़ ।।२१२।।

सतगुरु ने सतस्वरुप के बताये हुये नियमो से जो मनुष्य चलता नही वह मनुष्य अगले जनम मे भाग्यहीन बना रहता । सतगुरु के जीव उध्दार कार्य में टहल याने सेवा करना कबूल करता तथा उस कार्य मे कुछ वस्तू देना भी कबूल करता परंतु समय आने पे बडे हुशारी से वह वस्तू देना तथा सेवा देना यह टालता । वह मनुष्य अगले जनम में डोम

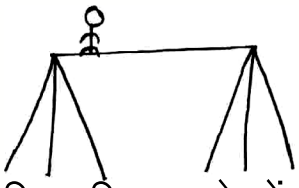

याने डोंबारी के घर का घोडा बनता । डोंबारी याने तार पे कसरत करनेवाले । उनके छोट बच्चे,सारा संसार का सामान तथा खटीया,मुरगा,बकरी,चल नही सकते ऐसे पिल्ले एक गाँव से दुजे गाँव बिना विश्राम से डोंबारी का खेल जगत को बताने के लिये तथा भार सहे नही जाता ऐसा अन्य सामान घोडे पे लाद कर जाते रहता । इस घोडे को कभी खाने को मिलता तो कभी नही मिलता । कभी पानी पिने को मिलता तो कभी नही मिलता । कभी विश्राम मिलता तो कभी नही मिलता । ऐसा भारी दु:ख भोगता ।।।२१२।।

भळे सुण दोष करे इण रीत ।। तजे हर नाम अलापे हे गीत ।।
कतारा ऊँठ इणे कर्म होय ।। गुरां बिच टेल भोळावे हे कोय ।।२१३।।

हरीनाम समजने के बाद भी हरी का नाम छोड देता और राग-रागीनी मे जगत के नर-नारीयो के मन को भायेंगे ऐसे माया के वासनिक गीत आलापता । साहेब ने कंठ मिठा दिया । ऐसे कंठ से हरी के गीत गाता तो अनेक नर-नारीयाँ काल के दु:ख से निकलने की चाहना करते थे परंतु ऐसा न करते अपना कंठ नर-नारीयो को माया के वासनिक गीतोमे रिझवाकर खूद के साथ अनेको के सांस भी मिट्टी में मिलाये । इसकारण डोम का घोडा बनता । सतगुरु किसी परिस्थिती वश कोई सेवा किसी मनुष्य से माँगता और वह सेवा वह खुद की क्षमता होते हुये खुद न करते चलाखीसे टालता और दुजोसे वह सेवा करने भोळाता । इसकारण वह मनुष्य कतारोका ऊँट बनता । कतारोका ऊँट याने अनेक ऊँट एक कतारमे एकके पिछे एक ऐसे बाँधे रहते । उनके उपर भारी माल एक गाँवसे अती दूर ऐसे गाँवमे पहुँचानेके लिये लादा हुवा रहता । वे ऐसे बांधे रहते की सभी उँट को साथ मे चलना पडता । इसमे कोई उँट बोझे के कारण तथा चलते चलते थक भी गया तो भी उसे चलते ही रहना पडता । कारण कतारके पहले उँटको एक मनुष्य

खिंचते रहता । इस कारण कतारके अन्य उँट एक-दुजेको खिंचते रहते । इसमे कोई थकावा उँट जरासा भी विश्राम लेना चाहा तो भी नही ले पाता । ।।२१३।।

भले ओ ऊंठ इणे कर्म जाण ।। अणभे हे ग्यान उथापे हे आण ।।
दसरावे मेहे की सुत मरे इण कर्म ।। जना हर घेर छुडावे हे धर्म ।।२१४।।

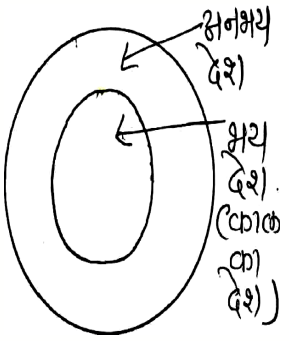

इसी प्रकार जो मनुष्य सतगुरु का अनभय देश का वैराग्य ज्ञान उलटा देता और ज्ञान चाहनेवाले हंसो को भी माया के ज्ञान में उलझाकर रखता ऐसा मनुष्य भी कतारो का उँट बनता । जो मनुष्य संतजनो को हेर कर घेरता और उसने धारन किया हुवा रामनाम का सनातन धर्म जबरदस्ती करके छोडने लगाता वह मनुष्य अगले जनमे दशहरेके दिन तड़प-तड़पके मारे जानेवाला भैंसा बनता । ।।२१४।।

रिषा घर गाय इणे कर्म होय ।। गुरां घर आय र भाव न कोय ।।
हटके टहल भिचकी देह ।। भळे बोहो भाँत दुखी बिन छेह ।।२१५।।

महिला सतस्वरुपी गुरु के घर आती है परंतु मन मे गुरु के प्रती तिरस्व सरीखा कुभाव रहता तथा कोई गुरु की टहल कर रहा होगा या होगी उसे बिचका देती,भड्का देती,डरा देती वह स्त्री ऋषीके घरकी गाय बनती। ऋषी अनेक बार समाधी में जाते और कई दिनोतक समाधी में रहते। ऐसे ऋषी के समाधी समय में गाय की देखभाल करनेवाला ऋषी समाधी में जाने से कोई नही रहता। इसकारण वह गाय एक जगह बंधी रहती। उसे प्यास लगती परंतु पानी पिलानेवाला कोई नही रहता। उसे भूक लगती परंतु उसे चारा(घास)डालनेवाला कोई नह रहता। धूप,बरसात में अपने किये हुये गंदगीमें बिमारीयो के साथ अंत नही होता ऐसे अनेक प्रकार के दु:ख भोगते जीती ।।।२१५।।

हुवे सो स्वान इणे कर्म आय ।। गुरा के हे पास अग्या बिन खाय ।।
बालदां बेल हुवे अेहे दोष ।। उथापे हे टेल चले मन जोस ।।२१६।।

सतगुरु के साथ रहता और सतगुरु के लिये खाने के लिये आयी हुई चिजे सतगुरु को भनक भी न लगने देते बिना आज्ञा से खाते रहता। वह मनुष्य अगले जनम में भूख के कारण रोटी के लिये घर-घर भटकनेवाला कुत्ता बनता। उसे इतना जगह जगह भटकने के बाद भी पेटभर रोटी नही मिलती और भूख लगनेके कारण भारी तड़पते रहता । ऐसा दु:ख भोगता। सतगुरुने काम बताया उस बताये हुये कार्य को अपने मनके जोशमें आकर उथाप देता और सतगुरुके चाहनासे निराले उलटे कार्य करता। इसकारण बालदाका बैल बनता। इस बैल पे एक देश से दुजे देश भेजनेवाली भारी बजनदार मालकी बोरीयाँ लादते । उस बैलको माल जल्दी पहुँचानेके लिये एकसरीखा भूखा,प्यासा चलते रहना पड्ता । वह बैल भारी थक जाता,बिमार पड जाता फिर भी जल्दी माल पहुँचानेके लिये उसे अविश्राम भागते रहना पड्ता ऐसा दु:ख भोगता। ।।२१६।।

किसबण होय अेहे प्रकार ।। जके पत निंदे सरावे जार ।।
गुरा घर काम रखे अंग कोय ।। गाडे तीहिं बैल इण कर्म होय ।।२१७।।

जो स्त्री पूर्व जनम मे अपने शिलवान पती की निंदा करती और व्यभिचारी यारो की शोभा करती वह स्त्री वेश्या बनकर अनेक दु:ख भोगती। जो पुरुष सतगुरुके घर काम करने में पुरी मेहनतसे न करते अंग चुराके करता वह पुरुष अगले जनममें पांचालके गाडीका बैल बनता । पांचालका काम करने का एक गाँव नही रहता । उसे पेट भरनेके लिये गाँव–गाँव जाकर काम खोजना पड्ता । इसकारण पांचाल अपना पूरा संसार गाडी यही घर समजके लादता । वह गाडी जिस बैल को जूते जाती उसे पांचाल का बैल कहते । इस बैल को आराम कभी नही मिलता । उसे पांचाल के जरुरत के अनुसार भूखा,प्यासा,बिमारी में गाँव–गाँव गाडी पीठ पे लेकर ढोनी पड्ती ।।।२१७।।

प्रकमा धर्म उथापे हे आण ।। तेली केहे बेल इणे कर्म जाण ।।
भळे सुण दोष बताऊँ ल्याय ।। गुरां सुण ठाम नखे नहीं जाय ।।२१८।।

सतगुरुको शिष निवानेसे शिष्यके बडे बडे कर्म गल जाते है । इसीप्रकार सतगुरु को प्रदक्षिणा डालने से बडे बडे कर्म गल जाते है । ऐसा बडे कर्म गलाने का प्रदक्षिणा का धर्म जो पुरुष उथाप देता है वह पुरुष तेलीके घाणीका बैल बनता है । उस बैल को रात–दिन बिना विश्राम चलते रहना पड्ता है। समय पे पिने को पानी नही,खाने को चारा नही, थकान पे विश्राम नही इसप्रकार दु:ख भोगता रहता । इतना फिरने पे भी तेली को बैल खूप चला यह लगता नही क्योंकी बैल जहाँ बांधा उतने ही अंतर पे छुटता । इसकारण तेली की समज बैल जरासा ही चला यही बनी रहती । सतगुरु को रहने को आग्रह करता और आग्रह वश गुरु रुक भी जाते परंतु वह मनुष्य गुरु के पास बिलकुल जाता नही इस दोष से वह मनुष्य अगले जनम में (अपमानीत होने का दु:ख) भोगता ।।।२१८।।

किसबण कर्म इणे सुं हुँ जाण ।। गुरा पत निंद सरावे हे आन ।।
भळे ओ कर्म करे इण रीत ।। जना कुं दोष देहे बिन प्रीत ।।२१९।।

सतगुरु के सतस्वरुप धर्म की निंदा करती और शक्ती माया से बली उपजे हुये निरअपराध प्राणी के बली देने सरीखे निच धर्म की महीमा करती। इसकारण वह स्त्री अगले जनम में वेश्या कर्म में लगती। सतगुरु के सतस्वरुप धर्म की निंदा करती और शक्ती मायासे बली उपजे हुये निरअपराध प्राणीके बली देने सरीखे निचधर्म की महीमा करती । इसकारण वह स्त्री अगले जनम में वेश्या कर्म में लगती । संत से सतस्वरुप समजकर निर्मल प्रेम तो नही करती उलटा निर्मल संत जगत के व्यभिचारी मनुष्य सरीखा समजकर ये संत भी व्यभिचारी सरीखे निच कृत्य करते यह दोष लगाती इसकारण अगले जनममे वह स्त्री वेश्याकर्म में लगती ।२१९।

नारी के बस इणे कर्म जाण ।। गुरां कुंहुँ सीस निच्यो नहीं आण ।।

दुजो सुण दोष बताऊँ हुं तोय ।। गुरा सत्त बेण बिदुखे कोय ।।२२०।।

जो पुरुष सतगुरु को तो मस्तक निवाता नही उलटा सतगुरुके साथ मगरुरीसे बर्ताव करता इस पापसे वह पुरुष अगले जनममें नारीके वश हुवा रहता। तथा जो पुरुष सतगुरु के सतस्वरुप के सच्चे भयरहीत देश के बाणी को काटता वह पुरुष भी अगले जनममें नारीके वश रहता ।।।२२०।।

तिजो सुन फेर भळे ओहो होय ।। भवानी हि सेव अलापे हे जोय ।।
होवे नर भूत इण प्रकार ।। जना सुं हुँ क्रोध बिचारे हे मार ।।२२१।।

जो पुरुष सतस्वरुप को शरण न जाते भवानी के शरण में रहकर निजमन से दिन-रात भवानी की सेवा करता तथा भवानी के गुणगाण अलापता वह पुरुष भी अगले जनम में स्त्री के वश रहता। जो मनुष्य संतो से बैर करता और बैर रखकर जान से मारने का बिचार करता वह मनुष्य अकाली मौत मरता और मरने पे अती दु:ख पडनेवाले भूत योनी में जाता ।।।२२१।।

भळे सुण भूत इणे सु हुँ होय ।। प्रभु निंदे आन सरावे हे कोय ।।
हरि कोहो नॉव बिखोड़े हे कोय ।। निंद्या कर भूत जुगे जुग होय ।।२२२।।

जो मनुष्य सतस्वरुप प्रभू की निंदा करता और खेतपाल,भैरु,खंडोबा सरीखे बली लेनेवाले देवतावों की बली दे-देकर सराहना करता वह मनुष्य भी मृत्यू पश्चात भूत के दु:खी योनी में जाता । मोक्ष देनेवाले हरी के नाम का द्वेष तथा निंदा कर-करके हरी का नाम लेनेवाले संतो के निजमन में हरी के नाम के प्रती घृणा ला देता वह मनुष्य युगानयुग दु:ख भोगनेवाला भूत बनता ।।।२२२।।

होवे इण कर्म चुड़ेली ही नार ।। जना सुं हुँ चब बिखोडे बार ।।
भळे सुण दोस बताऊँ हुँ तोय ।। बिडारे हे बाल बिषो पीहि जोय ।।२२३।।

बच्चोको विष पिला-पिलाके मार डालती वह स्त्री इस दोषसे मरनेके पश्चात चुड़ेलीन बनती । ।।२२३।।

इसा फेर कर्म करे संसार ।। गुरां पत बिष बिचारे हे मार ।।
होवे इम पित्तर मोगा ही जाण ।। एको कोहो धर्म न धाऱ्यो हे आण ।।२२४।।

सतगुरु को विषयो में डालकर गुरु का शिल गवा देती और गुरु को विष पिलाके मारने का भी बिचार करती वह स्त्री अकाली मौतसे मरती तथा चुड़ेलीन बनती । जो मनुष्य पूर्व जनम में सभी सृष्टी का एकमात्र जो सतस्वरुप धर्म है वह धारन नही करता उलटा निरअपराध प्राणी की बली लेनेवाले आनधर्म दिल से धारन करता वह मनुष्य अकाली मृत्यु पाकर मोगा तथा पित्तर बनता और अनेक दु:ख भोगता ।।।२२४।।

भळे सुण कर्म बताऊँ हुँ तोय ।। बिखोड़े धर्म सनातन जोय ।।
रहे सुण मन मत्ते मग जाय ।। उथापे हे नाँव न केवळ आय ।।२२५।।

आदि से चलते आ रहा है ऐसा सभी आत्मावोका तथा सृष्टी का सनातन धर्म अपने मन मतसे धर्मका झूठा अर्थ निकालकर सनातन धर्मका सच्चा तत्व बिघाड देता है तथा मन मत से विकारी मायाको ही ज्ञान समजके मगरुरीमे आकर जिसमे माया का जरासा भी अंश नही ऐसे माया रहीत निकेवल याने वैराग्य विज्ञान का धर्म जोर लगाकर उथाप देता है ऐसा जीव भी अगले जनमे अकाली मृत्यु होकर मोगा,पित्तर बनता है और अनंत दु:ख भोगता है ।२२५।

करे सुण कर्म हजारूं हुँ लोय ।। तबे सुण पित्तर मोगा हा होय ।।
उंधे सुण शीस रहे इण कर्म ।। हरि बिन ग्यान बके बिन धर्म ।।२२६।।

इसतरह से सनातन धर्म के हजारो तरह के निचकर्म करके उथापते जायेगा वे लोग अगले जनम मे मोगा तथा पित्तर बनते और युगानयुग अनंत न सहनेवाले दु:ख भोगते । हरी का सनातन धर्म समजने के बाद भी सनातन धर्म के हरी के ज्ञान बिना अन्य मायावी ज्ञान डिंगल पिंगल करके जगत मे बकते वे जीव अगले जनम में सिर निचे और पैर उपर ऐसे पेड बनकर जल नही मिलेगा ऐसे कठीण जगह जनम लेकर सालो गिणती जल के लिये तरसते तथा सालो गिणती न सहे जानेवाली गरम हवा सहते ऐसे सालो गिणती दु:ख भोगते ।।।२२६।।

भळे सुण कर्म बताऊँ हुँ पाप ।। कहे मुख ग्यान न साझे हे आप ।।
होवे इण दोष सबे बन राय ।। गुरां सुं घात बिचारी हे आय ।।२२७।।

जो ज्ञानी जगतमे समय बेसमय मुखसे सनातन धर्मका ज्ञान कथता और सनातन धर्मसे कपट रखकर स्वयम् मात्र पाप कर्मी देवतावोकी आराधना करता । इस निच कर्मसे सालो गिनती प्याससे तरसनेवाला तथा तुफानी बहनेवाली गरम हवासे व्याकुल हुवावा पेड बनता। इसीप्रकार सनातन धर्मका ज्ञान बतानेवाले गुरु अती कष्टमे पडेो ऐसा गुरुसे घात करनेका बिचार करता इस पापसे वह मनुष्य अगले जनममे सालो गिनती जलके लिये तरसनेवाला तथा तुफानी बहनेवाले गरम हवा से व्याकुल हुवावा पेड बनता ।।।२२७।।

होवे जड पाहण ईसी बिध जोय ।। गुरां कुं देख न ऊभा होय ।।
रखे दिल गर्भ निवे नहिं कोय ।। रहे मुख झूट सरावो हो मोय ।।२२८।।

काल से मुक्त करा देनेवाले गुरु को देखकर खडा होकर नमन न करते मगरुरी मे आकर निगरगठ्ठ के समान गुरु अपमानीत होगे ऐसा बैठे रहता वह मनुष्य अगले जनम मे जगह से न हिलनेवाले ऐसा जड पत्थर बनता। इसीप्रकार जो मनुष्य काल के मुख मे रखनेवाले माया के बलबुते पे अपने दिल मे गर्व गुमान मे आता और माया मोह के परे के सुख देनेवाले सतगुरु की सराहना शिष्यो से सुनकर दु:खीत होता और उस सतगुरु की सराहना न करते अपनी सभी ने सराहना करनी चाहिये यह चाहना रखता और वैसे प्रयास भी करता वह मनुष्य अगले जनम में जगह से न हिलनेवाला जड पत्थर बनता

।।।२२८।।

इसो सुण कर्म करे फिर अेह ।। पखा लेहे पाहणे बिखोडे हे देह ।।
भळे सुन दोष इणे सुं हुँ जाण ।। बड़ा पुरष पूज बिखोडे हे आण ।।२२९।।

जो मनुष्य पत्थरको देवता बनाके उसकी पुजा करता तथा उस पत्थरके देवको निरअपराधी प्राणीयोंका वध करके प्रसाद चढाता वह जीव अगले जनम में उस पत्थर के समान जड पत्थर बनता। इसीप्रकार जो मनुष्य प्रथम सतस्वरुप के महापुरुष की पुजा सेवा करता और आगे चलके जगतमें उस महापुरुष में दोष बताते फिरता वह मनुष्य अगले जनम मे जगह से न हिल सकनेवाला जड पत्थर बनता ।।।२२९।।

सदा अंग रोग रहे इण कर्म ।। जना बिच ब्रोध उपावे हे भर्म ।।
भळे सुण जीव हते बिन खून ।। चडावे हे मांस भटी पर छून ।।२३०।।

आपस के प्रेमी संत जनोके बीचमें भ्रम डालकर याने एक संतकी दुजे संतके प्रती अपचुगली करके संतोमें आपस मे प्रेम के जगह बैर पैदा करता वह मनुष्य अगले जनम में शरीर से सदा रोगी बनता । ऐसा दु:ख भोगता तथा जो मनुष्य जिसने किसीका बुरा नही किया,किसीपर अन्याय नही किया तथा किसीको नुकसान नही पहुँचाया ऐसे निरअपराधी प्राणीयों का वध करके उसका मास भट्टीपर चढाता,पकाता और खाता वह मनुष्य अगले जनम मे सदा रोगी रहता ऐसा दु:ख भोगता ।।।२३०।।

इसा सुण दोष भळे बोहो होय ।। एकु कोहो छाट बताऊँ हुँ तोय ।।
होवे इम धूब कुबो इण पाप ।। देहि तन निर्ख उथापे हे जाप ।।२३१।।

ऐसे ऐसे और भी बहुत दोष है। उनमें से कुछ अलग अलग करके तुम्हें बताता हूँ। जो मनुष्य जिस संतने अपने तनमे सतस्वरुप पाया है उसे हलका समजता और अपना तन बारबार देख-देखकर मगरुरीमे आकर फूलते रहता वह मनुष्य अगले जनममें कुबडा-घुबडा बनता । ।।२३१।।

सदा दु:ख हार रहे रण कर्म ।। अग्या लेहे नीच उथापे हे धर्म ।।
गुरां सुं बोध रहे मुरडाय ।। अग्या कूं लोप कर मन भाय ।।२३२।।

जो मनुष्य विज्ञानी संतो से विज्ञान धर्म चलाने की आज्ञा लेता और आगे चलके उन्ही संतो से द्रोह करता,ऐंठा रहता,अकडा हुवा रहता और संतोने धर्म चलाने की जो आज्ञा दी उसका उल्लंघन करके अपने विकारी निच मन को भाँता उस तरह से निचप्रकार से संतो के विज्ञान धर्म को चलाता । इस पाप से वह मनुष्य अगले जनम मे हमेशा दु:खीत रहता तथा संसार मे उसकी जहाँ तहाँ हार होती ।।।२३२।।

जम्यो नहिं राज इणे कर्म जान ।। गुर हर निंद बखाने हे आन ।।
भळे सुन दोष इण सुं हुँ हार ।। गुरां सुं बिणज ठगे बोपार ।।२३३।।

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती इन आन देवतावोकी सराहना करता और उन्होंने वेदमे बताये

हुये विधीसे तप करता जिससे उसे अगले जनममे राज मिलता परंतु जैसे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इनकी सराहना करता वैसे ही साथ साथ ब्रम्हा,विष्णु,महादेव जिसके आधार पे तप करने पे तपी को राज देते वही आधार याने सतस्वरुप गुरु और रामजी की वह तपी निंदा करता इसकारण तपी को तप से मिला हुवा राज हर और सतगुरु की निंदा करने से जरासा भी जमता नही । राज न जमने से राजाकी प्रजासे जगह जगह भारी निंदा होती ऐसा दु:ख पाता । मनुष्य गुरु के साथ व्यापार करता परंतु कपट निती से गुरु को बेपार मे ठग लेता । इस पाप कर्म से भी तप करके जीव को मिला हुवा राज जमता नही उलटा जगह जगह हार होने से दु:खीत रहता ।।।२३३।।

न मान्या हे भेद दिया गुण ताह ।। कियो तप मन मते मुरडाय ।।
अंहुँ बळ संत बिदुख्या हे जाण ।। इणे कर्म राज जमे नहिं आण ।।२३४।।

जिस संतने राज मिलने के लिये तप करनेका भेद दिया उनकाही उपकार नही माना और अहम के बल पे अपने ही मन के मत से तप करके पांचो इंद्रियो को तपाया और साथ मे भेद देनेवाले गुरुज्ञान की तोड्मरोड करके निंदा की और गुरुसे अकड्ा हुवा रहा । इसकारण उस मनुष्य को तप का फल याने राज मिला परंतु गुरुसे अकडे रहने के कारण तपसे मिला हुवा राज नही जमा ।।।२३४।।

भळे तुज सोज बताऊँ हुँ जोय ।। पाँचु तप माह सजी नहिं कोय ।।
घणी सुण रीस इणे प्रकार ।। प्रसादी हि भिन उपाई हे लार ।।२३५।।

राज मिलनेके चाहनासे पांचो इंद्रियोको तपाता और राज प्राप्त भी करता पंरतु पांचो इंद्रियो को तपाके राज मिलने पे राज जमना चाहिये ऐसा पांचो इंद्रियो को नही तपा पाता। इसकारण मिला हुवा राज नही जमता यह और भी राज नही जमने का कारण खोजकर तुम्हें मै बता रहा हूँ । सतगुरु की प्रसादी लेने मे भिन्न भाव उठा और उस भिन्नभाव के कारण सतगुरु के प्रसादी लेने में प्रिती आने के जगह ग्लानी उत्पन्न हुई और क्रोध आया इसकारण अगले जनम में भारी क्रोधी स्वभाव मिला ।।।२३५।।

होवे पढ पिंडत रीस अपार ।। जिणे यो कर्म कियो सुण लार ।।
गुरां को हो ताव सेहयो नहिं कोय ।। उचाऱ्या हा बेण स बेमुख होय ।।२३६।।

और विद्या सिखकर पंड़ित हो गया तथा उसके अन्दर अपार क्रोध है,तो उसने पूर्व जन्ममे यह ऐसा कर्म किया था,कि गुरूका ताप सहन नही किया और गुरूसे बेमुख होकर,वचन उच्चारण करने लगा,तो इस पूर्व जन्मके कर्मसे,पंड़ितको बहुत क्रोध आता है । ।। २३६ ।।

जोगी सो हो जोगन पावे हे एम ।। हरि गुर ग्यान उथाप्यो हे प्रेम ।।
भळे सुण दोष बताऊँ हुँ तोय ।। गुरां सुं बिरचर न्यारो होय ।।२३७।।

जोगी ने पिछ्ले जनममे गुरुने दिया हुवा हरी का ज्ञान उलटाया । गुरुसे और हरीसे

अप्रीती की और गुरुसे बदलकर याने गुरु की मर्यादा त्यागकर अलग हो गया और अपने मन मतसे जगत को जोग सिखाया । इस विकारी कर्मसे इस जनम मे जोगी जोग साधने का हर प्रयास करता परंतु जोगी से जोग जरासा भी साधे नही जाता ।।।२३७।।

किया सो बाद बिबाद अनेख ।। हरि सत नाँव उथाप्यो हे देख ।।
भळे सुन दोष घणा जुग माय ।। कहाँ लग तोय बताऊँ हुँ आय ।।२३८।।

जोगीने पिछ्ले जनममे निजनामी गुरु के साथ अनेक प्रकार से वाद-विवाद किया और हरी का सतनाम सदा उलटाते रहा इसप्रकार के विकारी कर्म से भी इस जनम मे जोगी ने जोग साधने का हर प्रयास करने पे भी जोगी से जोग साधे नही गया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य को कहते है कि इस जगत मे गिनके बताते नही आ सकते ऐसे अनेक दोष है वे सभी दोष मुझे तुम्हें बताना संभव नही है ।।।२३८।।

इणे दु:ख साध संतोष न कोय ।। हण्यो मे गुर माल उदासी होय ।।
कहुँ सिष तोय भळे इण कर्म ।। सराया हे आन बिषे सब धर्म ।।२३९।।

साधूने पिछ्ले जनम मे निजनामी गुरु का माल हरण किया और वापीस लौटाने मे उदासी बतलाई इसकारण इस जनम में साधू की साधना कर साधू बना परंतु साधू ने संतोष लक्षण नही पाया उलटा जगत के लोभी लोगो के समान लोभ का स्वभाव प्रगट हुवा और असंतोष रहने को दु:ख पाया । इसीप्रकार साधू ने पिछ्ले जनम में पांचो विषयो मे डालनेवाले अन्य सभी धर्मो की सराहना की और वैराग्य मे पहुँचानेवाले धर्म से अप्रीती की इससे इस जनम मे पचपचकर साधू बना परंतु साधू बनने पे भी असंतोषी रहने का दु:ख पाया ।।।२३९।।

रटे निज नाव नहिं इतबार ।। तिणे सिष दोष कियो ओ हो लार ।।
हण्यो गुर देव बिचारी हे घात ।। दुखि तन देखन बूजी हे बात ।।२४०।।

पिछ्ले जनममे निजनामी गुरुके साथ कपट खेलके परमात्मा के निजनाम को नुकसान पहुँचाया इस पाप दोष से इस जनममे संत ने निजनाम का रटन किया पंरतु निजनाम का याने परमात्मा का विश्वास नही आया । इसीप्रकार पिछ्ले जनम मे निजनामी गुरु का शिष्य बना परंतु गुरु के निजनाम पे विश्वास नही रखा और कपट खेलकर दुजे शिष्योके मनमे भी गुरु के निजनाम के प्रती अविश्वास निर्माण किया । इस दोषसे भी इस जनममे उसी शिष्यने विश्वाससे निजनाम रटने का प्रयास किया परंतु उसे निजनाम रटने पे भी निजनाम पे विश्वास नही आया। यह दोष लगा। इसीप्रकार पिछ्ले जनममे कालके जुलूमो से दु:खी बना हुवा साहेब को चाहणेवाला तन देखकर भी जो मनुष्य उसका दु:ख नही पुछ्ता ऐसे मनुष्यको भी इस जनममे निजनाम रटन करनेके भारी प्रयास करने के पश्चात भी निजनाम पे विश्वास नही आता ।।।२४०।।

भळे सुण दोष बंध्यो सिर एह ।। गुरा घरा बिषे बिचाऱ्यो हे नेह ।।

इणे दु:ख खेत कमावे हे भेष ।। उथाण्या हा ग्यान जना सुं ह धेष ।।२४१।।

जो साधू निजनामी गुरु के घर मे गुरु के पत्नी के साथ स्नेह करके विषय वासना मे खिचने का प्रयास करता वह साधू अगले जनम मे वैरागी साधू बनके भी पेट भरने के लिये गृहस्थीयो के सरीखा खेती मे कसता। इसीप्रकार साधू बनके संतो का ज्ञान उथापता और संतो का द्वेष भी करता वह साधू अगले जनम मे वैरागी साधू जरुर बनता परंतु साधू बनने पे पेट भरने पुरता भी अनाज नही मिलने कारण तकलीफवाला खेती का काम करता ।।।२४१।।

ओरूं फेर तोह बताऊँ हुँ सिष ।। तजे घर बार पियो मन बिष ।।
जना की टेल न किवी हे हेत ।। इणे कर्म साध कमावे हे खेत ।।२४२।।

पत्नी,बच्चे ऐसा घर बार तज के वैरागी साधू बनता और वैरागी साधू बनने पे अपने मन मे आवे ऐसे विषय भोग भोगता । इस दोष से खेती बहनेका कष्टीक काम करता । मोक्ष देनेवाले केवली संतो से प्रिती भी नही करता और उनकी जरुरतवाली सेवा भी नही करता। इस दोषी कर्म से वह जीव अगले जनम मे वैरागी साधू बनता परंतु उदर निर्वाह के लिये किसानो के सरीखा खेती करता ।।।२४०।।

न सुजे हे अर्थ इणे प्रकार ।। गुरां सुं छीप पियो बिष लार ।।
रखे मन द्रोह किया सुभ कर्म ।। डेहकाया जीव बताया ह भर्म ।।२४३।।

और इस कारण से अर्थ दिखाई नही देता है,कि गुरू से छिपकर,गुरू के पीछे,विषय रस का भोग किया । तो पहले के इस कर्म के कारण,ज्ञान का अर्थ नही सूझता है । और अच्छे कर्म करके मन मे द्रोह रखता है और जीव को धर्म से बहका देता है और जीवों को दूसरा कोई भी भ्रम बताकर,जीवों को भ्रम मे ड़ाल देता है ।।२४३ ।।

कथे सो हो ग्यान न सूझे हे भेद ।। तके गुण मेट करी गुर खेद ।।
भळे सुण दोष लग्यो सिर एह ।। बिडारी ही नार बिखोड़ी देह ।।२४४।।

और पहले के इस पाप से,वह ज्ञान कथन करके ,जीवको बताता है । परन्तु खुद स्वयं को, उस ज्ञान का भेद नही सूझता है,कि उसने गुरू का दिया हुआ भेद नही माना और गुरू को कष्ट दिया। और गुरू ने ज्ञान दिया,तो उस गुरू का गुण(उपकार नही माना),तो इस दोष से वह ज्ञान का कथन करता है,परन्तु उसका भेद उसको ही दिखाई नही देता है। बिडारी हि नार बिखोड़ी हे देह। बिड़ारी स्त्री को छोड़ दिया,मार दिया। देह को बिखोड़ी मारा या निन्दा किया । ।। २४४ ।।

नहिं पतिं दोष इणी सुं जाण ।। बिखोड़ी हे आतम देहे बखाण ।।
कऱ्या अे पाप पिछाड़ी सिष ।। बध्या पण भांज लगाया हे बिष ।।२४५।।

और इस दोष से पत नही आता है,कि पूर्व जन्म मे आत्म देह का बिखोड़( )हे शिष्य,पूर्व जन्म मे यह पाप किया ।( ) ।। २४५ ।।

भळे सुण दोष इणे प्रकार ।। तजे गुरू मोहो कियो संसार ।।
भळे गुरू धर्म इणे कर्म नाह ।। दियो दू:ख संत समागम जाह ।।२४६।।

और भी दोष इस प्रकार के है,उसे सुनो । गुरू को छोड़कर संसार का मोह किया । इस पहले के कर्म से गुरू धर्म नही रहा । संतो के साथ मे जाकर संतो को दु:ख दिया,तो इस पूर्वजन्म के कर्म के कारण,गुरू धर्म रहता नही है । ।। २४६ ।।

हरे द्रब ग्यान दगे सुं आय ।। इणे कर्म धर्म बधे नहि जाय ।।
सबे अंग लछ इणे कर्म नाह ।। बिदुख्या हे जीव बिखोडया हे माय ।।२४७।।

और कोई संतो के पास जाकर,उनका ज्ञान और द्रव्य हरण किया,तो इस पहले के कर्म से, उसका धर्म नही बढ़ता है । और सभी(अच्छे)लक्षण इस कर्म से नही रहते है,कि जीवो का विध्वंस किया और आत्मदेव का बिखोड़या(------)। इस कर्म से अच्छे स्वभाव और अच्छे लक्षण नही रहते है । ।। २४७ ।।

ओरां कुं ग्यान न साजे हे आप ।। तिके ओ कर्म कियो सुण पाप ।।
कैया मुख बेण सदाई झूट ।। रैयो अध बिच गुरांसुं रूठ ।।२४८।।

और दूसरो को ज्ञान बताता है,परन्तु वैसा स्वयं नही चलता है,तो उसने पिछले जन्म मे ऐसा पाप किया था,कि उसने सदैव मुँख से झूठ ही झूठ बोला था और बीच मे ही गुरू से रूठकर बैठ गया । इस पाप से दूसरो को ज्ञान बताता है,परन्तु स्वयं उस ज्ञान के प्रमाण से चलता नही है । ।। २४८ ।।

भळे सुण कर्म कियो हो लार ।। हरि गत जान मिल्यो संसार ।।
बखाणे हे नांव करे सुर सेव ।। तके ओ कर्म कियो सुण भेव ।।२४९।।

और भी सुनो । उसने पूर्व जन्म मे यह कर्म किया था,कि हरी की गती समझकर,फिर संसार मे जाकर मिल गया,इस पापसे वह दूसरोको ज्ञान बताता है,परन्तु स्वयं वैसे नही चलता है । और राम नामकी बखान(शोभा)करता है और अन्य देवताओं की सेवा करता है,तो उसने पूर्व जन्म मे,ये ऐसे कर्म किए थे,उसे सुनो । ।। २४९ ।।

हथ्यो निज संत उथापे हे ग्यान ।। इणे करम जड़ सेवे सुर आन ।।
अजुं फिर दोष बंध्यो सिर एह ।। जनागत जान उथापे हे देह ।।२५०।।

उसने पूर्व जन्म मे निज संत को मारा और उस संत के ज्ञान को उलट दिया(खण्ड़न किया), तो इस पहले के पाप के कारण,पत्थर की मूर्ती की पूजा करता है । और अन्य देव की सेवा करता है। और भी उसके सिर पर ऐसा दोष बांधा गया,की संत जनो की गती जानकर,(इस संत जन को बड़ा समझकर),उनके ज्ञान को खण्ड़ित करके,उनका ज्ञान उलट देता है ।२५०।

पियो बिष मद संता पेहे जाय ।। जना की मेर न मानी हे आय ।।
रख्यो नहिं कारण कुरब लगार ।। अहुँ गुरू निंद झक्यो सेंहेसार ।।२५१।।

और संतो के घर जाकर विषय रस का मद पिया,तथा उस संतजन की कुछ भी मर्यादा नही मानी(रखी)और संतो का कुछ कारण भी नही रखा और उस संत जन का कुरब (मान मर्यादा) भी बिल्कुल भी रखा नही और अहंकार से गुरू की निन्दा किया । संसार मे बकते हुए फिरता रहा,इस ऐसे पहले के पाप से,जड़ पत्थर के देवता की पूजा करने लगा ।(और राम नामको छोड़कर)अन्य देवो की पूजा करता है ।। २५१ ।।

होवे तज साध गरीबी नाय ।। जका गुर ग्रास न पायो हे जाय ।।
भख्यो अेमख जनाको हो होय ।। इण कर्म नाह गरीबी जोय ।।२५२।।

और सब छोड़कर साधू हो जाता है,परन्तु गरीबी नही रखता है,पहले के इस पाप से,कि उसने जाकर गुरूकी शीत प्रसादी नही लिया । इस कर्म से साधू होकर,गरीबी नही रहती है । और कोई संतजन का शिष्य बनकर,मांस भक्षण करता है,तो इस कर्म से भी,साधू मे गरीबी नही रहती है । ।। २५२ ।।

भळे सुण दोष घणा जुग होय ।। छुछम सा छांट बताया हे तोय ।।
हमे सुण तोही कहुँ जम लोक ।। जाहा जड़ जीव भुगते हे दोक ।।२५३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य को कहते है कि,इस जगत में और भी दोष है। उनमे से थोडे से दोष छाँट कर तुम्हे बताया है। अब मै तुम्हे यमलोक का वर्णन करके बताता हूँ। जहाँ ये जड बुध्दी जीव अपने किये हुये कर्मो का दोष भोगते रहते है । ।।२५३।।

अठे करे पाप तके कर्म लार ।। उठे जम घेर दिरावे हे मार ।।
करावे हे सोज सबे सत्त न्याव ।। रतिसो चूक न चाले हे चाव ।।२५४।।

यहाँ इस मृत्युलोक में जीव जो पाप करते है वे कर्म जीव के साथ में चलते है । उस कर्म के प्रमाण से यम उसे घेरकर मार देते है । वहाँ इसके किये गये कर्मो को खोज–खोजकर उसका सत्य न्याय कराते है । वहाँ रत्तीभर भी चूक या चाव नही चलता है ।।।२५४।।

कहा रंक राव त्रिलोकी हि जाण ।। करे हे न्याव बराबर आण ।।
इसो जम दूत जोरावर होय ।। धुजे जम लोक त्रिलोकी हि जोय ।।२५५।।

यमलोक में कोई रंक हो या राजा हो या फिर त्रिलोकी का कोई भी जीव हो सभी का बराबर याने उचित न्याय करते है। वह यमराज ऐसा जबरदस्त है कि उससे सारा यमलोक और स्वर्गलोक,मृत्युलोक,पाताललोक ये तीनों लोक धूजते है याने काँपते है। ।।२५५।।

जमा को हो रूप कहुँ मै आण ।। सुण अस्तूल बरणू जाण ।।
तेरे द्रिगपाल गहे अस्तूल ।। तिको सब जम जमा को हो मूळ ।।२५६।।

इस यम का स्थूल रुप कैसा है यह मै तुम्हें वर्णन करके बताता हूँ । तेरह दृगपाल को पकड्कर जो बल बनता है(पृथ्वी के नीचे शेष और शेष के नीचे कछुवा और उस कछुवा

को पकड्कर रखनेवाले सिर्फ दस दृगपाल है)उतना अकेले ही जबरदस्त बल यम का है और वह यम सभी यमों का मूल है ।।।२५६।।

बड़ा बिक्राल करूपी देह ।। नहिं घर गाँव भवे जग एह ।।
चवदे क्रोड तणो प्रवाण ।। तिका में हे एक बड़ो सत्त जाण ।।२५७।।

उसका देह याने शरीर बडा कुरुप और बडा विकराल है । उन यम के दूतों का रहने के लिये घर या गाँव कोई भी नही है । वे रात–दिन जगत मे चक्कर मारते है । (ये यमदूत भी पाप कर्मी मनुष्य को ही यमदूत बनाते है वहाँ पर पापी मनुष्य को ही यमदूत किया । फिर वे अपने पाप कर्मो का दु:ख यमदूत बनकर भोगते है । उस यमदूत को बैठने के लिये जगह या रहने के लिये घर नही है । वह रात–दिन जगत में चक्कर मारते रहता है जिससे उस यमदूत को बहुत दु:ख होता है ।)इस तरह ये चौदह कोटी गिनती में है । इन चौदह कोटी यमदूतों के उपर उनका एक बडा मालिक रहता है ।।।२५७।।

लडे इऊँ जम जमासुं जोय ।। चवदे क्रोड न जीते हे कोय ।।
इसो जमराण भमे जग माय ।। घणा कर्म कीट जहाँ चल जाय ।।२५८।।

यदि चौदह कोटी यमदूत उस एक यम से लडने लगे तो वह अकेले चौदह कोटी यमदूतों से भी नही हारेगा । वे चौदह कोटी यमदूत उस अकेले यम को जीत नही सकते है । ऐसा यमराज संसार में चक्कर मारते रहता है । जो बहुत ही बुरे कर्म का जीव होगा तो यह यमराज वहाँ चला जाता है ।।।२५८।।

देख्यां सुं ताव न झेले हे कोय ।। काया झट छोड चले हंस जोय ।।
इसा जमदूत सुणो सिष ओर ।। तिकारी पोंच बताऊँ हुँ ठोर ।।२५९।।

ऐसे यमराज को देखकर उस जीव से उसका ताप सहन नही होता है । उसे देखते ही वह हंस झट से शरीर को छोड्कर चल देता है । हे शिष्य और भी ऐसे यमदूत है उसे सुनो । उनकी पहुँच याने पराक्रम और जग मै तुम्हे बताता हुँ ।।।२५९।।

चवदे हे फेर बडा जमराण ।। एक एक क्रोड़ तिकां बस जाण ।।
तके जम जीव गिरे हे जाय ।। बोहो बिध मार दिरावे हे आय ।।२६०।।

इनमे चौदह बडे यमराज है । एक यमराज के वश मे एक कोटी यमदूत है । ये यम जाकर जीवो को धरते है और ये अनेक तरह से जीवो के उपर मार देते है ।।।२६०।।

सुणो सिष फेर जताऊँ हुँ तोय ।। इसा करवाँ के आवध होय ।।
सिला गुरज फास क्याहि कर धूँत ।। इना सुं मार करे जीव सूत ।।२६१।।

हे शिष्य और भी तुम्हे मै जताकर बताता हूँ। उनके हाथो में आयुध याने शस्त्र है। शिला याने बडा पत्थर,गुरुज और जीवो को पकड्ने के लिये फाँसी,घूंत(घुसा)इनसे मारकर जीवो को सीधाचट कर लेते है याने सिधा कर देते है ।।।२६१।।

भळे सुण आँकस फेर अनेक ।। चोरासी हि लक्ष सबे सत्त पेख ।।

जिसो करे कर्म तिसी दे मार ।। सुणो सिष जमा तणो बौहार ।।२६२।।

और सुनो,उनके पास अनेक अंकुश भी है । इसतरह से चौरासी लक्ष प्रकारके सभी शस्त्र है। जीवो ने जैसे जैसे कर्म किये होगे वैसे ही उन जीवो को वे यम मार देते है । हे शिष्य सुन,उस यम का ऐसा व्यवहार है । ।।२६२।।

बडे सुण जम जीवो में आय ।। दूजी सुण देह बणावे हे जाय ।।
करे जम झेर ईसी बिध मार ।। गुरजां घमघोर पड़े सिर तार ।।२६३।।

उनमे से यम आकर जीवोमे घुसता है और दुसरी देह बनाता है वो सुनो । वे यम उस जीव को घेरकर उसके सिरपर इसतरह से मारते है । गुरुजसे घमघोर मारनेका लगातार एकतार लगा देते है ।।।२६३।।

बावे घण धूत बजावे दांत ।। डडके हे नाल तोडे नल खाँत ।।
होवे जम लार काया सुं काड ।। केइ एक दोड खावे जम बाड़ ।।२६४।।

कोई घन मारता तो कोई घूंत याने घूंसा मारता है और कोई अपने दात बजाकर डराता है । कोई यमदूत धडसे गलेकी नस तोड्कर खाता है। इसतरह से देहमें से जीव को निकालकर जीव के पिछे लग जाते है। उनमे से कैक यम उस जीव को पकड्कर दाँतो से तोड–तोड्कर खाते है ।।।२६४।।

गहे जम जीव इसी बिध आण ।। न खावे हे फास करे बंधिवाण ।।
जडे नव ताक धसे तन मांय ।। गृहे जम जीव बखेटे हे घाय ।।२६५।।

इसतरह से वे यम उस जीव को आकर पकड्ते है । जीव के उपर फाँसी डालकर उसे कैद करते है । उसके शरीर के नौ ही दरवाजे बंद करके शरीर में धँसते है और उस जीव को पकड्कर खदेड्कर निकाल लेते है ।।।२६५।।

एको दम लेण न पावे हे कोय ।। झट के छोड़ चले हंस जोय ।।
रहे सब लार हेतु जग माय ।। जमा संग जीव अकेलो जाय ।।२६६।।

फिर वह जीव एक भी साँस ले नही सकता है। झटके से कुडी(देह)छोड्कर हंस निकल जाता है। उसके हेतु याने हितैषी संसार में पिछे ही रह जाते है । उस यम के साथ मे जीव को अकेले ही जाना पड्ता है ।।।२६६।।

तको सुण भेद बताऊँ हुँ तोय ।। हवे सोहो गेल इसी सो होय ।।
बिकटा हा घाट बड़ा बन पाड़ ।। रूंखा सुं रूंख अडया बोहो झाड़ ।।२६७।।

उसका मै तुम्हे भेद बताता हूँ। अब इस यम लोकका रास्ता ऐसा है। वह बहुत बिकट घाट,बडे–बडे बन,बडे–बडे पहाड ऐसे है। पेडोसे अडा हुवा पेड ऐसे पेड बहुत प्रकारके रहते है ।२६७।

बहे नदी बिचे इसी अदभुत ।। जहाँ होय जीव चलावे हे दूत ।।
मांहि जळ आग सरोबर जाण ।। वहाँ हम जीव बकारे हे आण ।।२६८।।

उस रास्ते में एक ऐसी अद्‌भूत नदी बहती है । उस नदी में से जीव को वे यमदूत चलाते है । उस नदी मे पानी आग के जैसा है । वहाँ जीव से वे यमदूत पूछते है ।।।२६८।।

कहे मुख बेण इसा जम राण ।। कीवी कुछ टेल उदको हो आण ।।
ज्यूँ तुज आँच न लागे हे कोय ।। इसा जम बेण सुणावे हे जोय ।।२६९।।

वह यम मुँख से उस जीव से ऐसे वचन बोलते है कि तुमने संतो की कुछ टहल याने सेवा की होगी या किसी को दान दिया होगा तो वह बतावो। तुने किया होगा तो याद कर जिससे आग के जैसी उस पानी की आँच तुम्हें नही लगेगी। इसप्रकार से यमदूत उस जीव से कहते है।(यह यमलोक याचनिक है। वहाँ यमलोकमें मनुष्य अपने मनुष्य शरीर से किये गये कर्म माँग लेगा तो ही उसे वो मिलेंगे। जीव के अच्छे कर्म किये होंगे और उसने मुँह से कहकर माँगा नही तो वह उस जीव को नही मिलता। क्योंकी यमलोक के जीवों की देह याचनिक है। वहाँ किये हुये कर्म माँगने पर मिलते है। माँगे बिना अच्छे कर्मो के फल अपने आप नही मिलते। इसलिये वे यमदूत कुछ किया होगा तो माँग लो ऐसा कहते है।) ।।२६९।।

करो कुछ याद किया उपकार ।। नहीं तो प्राण पडे सिर मार ।।
बेहे जळ लाल रगत सा जोय ।। तले तल कांटा खिलास होय ।।२७०।।

साथ के यमदूत उस जीव से कहते है कि तुमने कोई उपकार किये होगे तो उसकी याद करो नही तो तुम्हारे प्राण के सिरपर मार पडेगी । उस नदी मे रक्त के जैसा लाल पानी बहता है और उस नदी के तल मे कील की तरह काँटे होते है ।।।२७०।।

सुणो सिष घाट अबखा हा ओर ।। आंतो तुझ सेल बताई हे ठोर ।।
काहां लग फेर कहुँ मै हे तोय ।। बिषमी गेल जमाकी ही होय ।।२७१।।

हे शिष्य,उस यमलोक के अवघड घाट और भी सुनो। ये तो तुम्हें सहज आसान ठिकान मैने बताया है। अधिक मै तुम्हे कहाँ लग बताऊँ। इस यमलोक का रास्ता बहुत ही बिकट है । ।।२७१।।

शिष वायक छंद मोती दान ।।

कहो गुरू देव कुण्डा प्रवाण ।। किसे किण दोष पड़े जीव आण ।।
जमा को हो रूप बतावो हो मोय ।। पुरी किण रंग कठीने हे होय ।।२७२।।

शिष्य ने कहाँ कि हे गुरुदेवजी,अब नर्ककुंड का प्रमाण बताईये। कौनसे दोषसे किस नर्ककुंड मे जीव आकर पडते है और यम का स्वरुप मुझे बतावो। यह यमपुरी कौनसे रंग की और किधर है ।।।२७२।।

कहिजे हे आप सबे बिस्तार ।। किसे कर्म कोण पडे वा मार ।।
कहो गुरूदेव सबे बिध मोय ।। जमा का रूप किसी बिध होय ।।२७३।।

उसका सारा विस्तार आप मुझे बतावो । कौनसे कर्मसे वहाँ कौनसी मार पडती है ।

गुरुदेवजी,यह सारी विधी आप मुझे बताईये। उस यम का स्वरुप किस तरह का है । ।।२७३।।

गुरू वायक ।। दोहा ।।

कर्म बिध सब सोझ के ।। कहुँ सकल बिध तोय ।।
एक भजन बिन आत्मा ।। जद दुख पावे जोय ।।२७४।।

गुरु शिष्य से बोले कि,हे शिष्य कर्मो की सभी विधी मै तुम्हें बताता हूँ । एक सतस्वरुप परमात्माका भजन किये बिना यह आत्मा जब-तब दु:ख भोगता रहता है ।।।२७४।।

छंद ।। मोती दान ।।

कहुँ सिष कुण्ड चोरासी ही होय ।। तिकांरा नाँव बताऊँ हुँ तोय ।।
अहुँ अहंकार अले जन अख ।। बिषे बिरियान चुहली हि चख ।।२७५।।

हे शिष्य,अब तुम्हें मै चौरासी तरह के नर्ककुंड बताता हूँ । उन नर्ककुंडो के अलग अलग नाम मै तुम्हें बताता हूँ । वो इसप्रकार से है -१) रौख २) सुकर ३) रोध ४) ताल ५) विशासन ६) महाजाल ७) तप्तकुंभ ८) लवण ९) लोहित १०) रुधीराम्भ ११) वैतरणी १२) कृमिश १३) कृमीभोजन १४) असित १५) पत्रवन १६) कृष्ण १७) लाभक्ष १८) दारुण १९) पूयवह २०) पाप २१) वन्हीजाल २२) अध:शिरा २३) सन्दंश २४) कालसुत्र २५) तमस २६) अविचिश्वभोजन २७) अप्रतिष्ठ २८) अप्रचि २९) अहं ३०) अहंकार ३१) आलेजन ३२) आख ३३) विषे ३४) विरियाण ३५) चहुली ३६) चक ।।२७५।।

सिला गुळ पाख अभिचर कुण्ड ।। माहा भवे भाण कटुंबी हि झुण्ड ।।
अगोचर द्रष्ट अदिटर भंग ।। निगोदर फास बिष मी हि झंग ।।२७६।।

३७) शिला ३८) गुड्पाक ३९) अभिचार ४०) महाभव ४१) भाण (सुर्य) ४२) कुटुंबी ४३) झुंड ४४) अगोचर ४५) द्रष्ठ ४६) अदितर ४७) भग ४८) निगोद ४९) फास ५०) विषमी ५१) झंग ।।।२७६।।

महाखि भिष्ट रगत र जेर ।। सिला रह जंत्र अधुकण केर ।।
अमूजी हि भीड़ बिडारण भर्म ।। लोहागर कूंपस अंध फिर गरम ।।२७७।।

५२) महापी भ्रष्ट ५३)रक्त जहर ५४) शिला ५५)रहयंत्र ५६)अधुकण (जलती हुई आग) ५७)कहर उमोजी ५८)भीड ५९)विधारण६०)भ्रम ६१)लोहागर(लोहे का पानी बना हुआ) ६२) अंधकूप (अंधेरा कुआँ) ६३) गरम कुँआ आदि ।।।२७७।।

सबे कुण्ड नाँव इसी बिध होय ।। अबे तुज दोष बताऊँ जोय ।।
जनापर हात चलावे कोय ।। तिको बिष नरक पड़े नर लोय ।।२७८।।

सभी कुंडो के नाम इसतरह से है । अब मै तुम्हें कौनसे दोष से कौन-कौन से कुंड में यह जीव आकर पड्ते है वह बताता हूँ । कोई संतजनो के उपर हाथ चलाता है वह मनुष्य विष याने जहर नर्क में पड्ता है । (जहर ऐसा है-वहाँ बिच्छू का जहर,बिच्छू डंक मारता है तो एक गूंज का हजारवाँ-हजारवाँ हिस्सा जहर शरीर मे जाता है । उस उतने जहर से

शरीर मे कितनी आग होती है,वह जिसे बिच्छू ने काटा होगा वही जानेगा । तो ऐसे बिच्छू के जहर की अपेक्षा हजार पट तेज उस विषकुंड का जहर है । ऐसे जहर से भरे हुये कुंड में संत जनो के उपर हाथ चलानेवाले जीव को डाल देते है ।)।।२७८।।

हरिजन देख धरे अभिमान ।। तके अहुँ कुण्ड पडे नर जान ।।
जना बिच ब्रोध उपावे हे कोय ।। तिके भिष्ट कुंड पडे नर जोय ।।२७९।।

कोई केवली हरीजनो को देखकर अभिमान करता है वह अहं नर्ककुंड में पडता है और कोई मनुष्य केवली संतजनो में विरोध उत्पन्न कर देता है वह मनुष्य भ्रष्टकुंड में पडता है ।।।२७९।।

छोडावे हे नाम हरे बिध आय ।। तिको नर नरक निगोदाँ हा जाय ।।
अनेकुं हुँ जिग करे सिष लोय ।। छोडाया हा नाम न माने हे कोय ।।२८०।।

कोई स्त्री–पुरुष रामनाम लेता होगा और ऐसे स्त्री–पुरुष का रामनाम लेना कोई मनुष्य हर तरह से छुडा देगा वह मनुष्य निगोद नर्ककुंड में पडेगा। हे शिष्य,रामनाम छुडानेवाले मनुष्य ने अनेक यज्ञ किये तो भी उसकी बात नही मानेंगे और उसका दोष नही छुटेगा । ।।२८०।।

डरावे हे नरक निगोदाँ हा माय ।। एके इण खून सबे सुख जाय ।।
सुणो सिष नॉव झिलावे हे कोय ।। अनेकुं हुँ खून सबे रद होय ।।२८१।।

उस रामनाम छुडानेवाले जीव को निगोद नाम के नर्ककुंड में यमदूत ले जाकर डराते है । सिर्फ इस एक ही गुनाहसे उसके दुसरे सुकृतोंके जो कुछ भी सुख होंगे वे सभी सुख जल जाते है । जैसे–घरमे आग लग जाने से घर का सारा सामान जल जाता है । यदि कोई दुसरे किसी को रामनाम लेने के लिये प्रेरित करेगा तो ऐसे मनुष्य के गुनाह रहे तो भी उसके सभी गुनाह रद्द हो जायेगे ।।।२८१।।

इसो हरि नाँव दिया फळ जाण ।। माहा कर्म दुष्ट न लागे हे आण ।।
इसो सुण अर्थ बिचारे हे कोय ।। तिको नर आप निरंजण होय ।।२८२।।

ऐसा हरी नाम दूसरेको लेने लगाया तो उसका फल यह होता है। दूसरोंसे राम नाम कहलाने वाले का बड़ा दुष्कर्म रहा तो भी वे कर्म उसे नही लगते है और ऐसा हरी नाम वह दूसरो को देते रहा,देते रहा तो वह स्वयं निरंजन याने सतस्वरुप साहेब का पद पाता । ।।२८२।।

हवे तुज और बताऊँ हुँ दोख ।। बिना हरि नाँव नहि गत मोख ।।
करे सो कर्म इतो जग माय ।। भुगते हे जीव जमा घर जाय ।।२८३।।

और भी मै तुम्हें दोष बताता हुँ । इस हरीके नामके बिना गती या मोक्ष कोई भी नही होता है । यहाँ इस जगतमें जीव जो कर्म करते है वे यमके घर जाकर किये गये कर्मो के फल भोगते है । ।।२८३।।

जना सुं बेर रखे दिल कोय ।। तिको नर नरक पड़े घुम जोय ।।
उथापे हे ग्यान चले मन जोर ।। तिको नर खंभ बंध्यो उन ठोर ।।२८४।।

कोई संतजन से मन मे बेर रखेगा वे मनुष्य धुम्र नाम के नर्क मे जाकर पडेगा । संतजन काल के मुख से निकलने का सतस्वरुप ज्ञान बताते । ऐसा ज्ञान को उलटाकर जो मनुष्य अपने ही मन के जोर से काल के मुख मे रखनेवाले माया के अनेक तरह के धर्म से चलते है । वह मनुष्य यमलोक में तप्त खंभे मे ले जाकर बांधे जायेंगे ।।।२८४।।

जना गत जाण लेहे जग साथ ।। तिको नर नरक निगोदा हा जात ।।
होवे नर लीन मिले जग माय ।। सावे नर नरक निसास्या हा जाय ।।२८५।।

सतस्वरुपी संतजन की गती जानता है(उनका संग बहुत अच्छा है ऐसा मनमें जानकर)भी जान –बुझकर निचकर्मी जगतका संग करता है वह मनुष्य भी निगोद नामके नर्कमें जायेगा और कोई मनुष्य संतजन से लीन होकर बाद में वह मनुष्य संसार में मिल जायेगा तो वह निसास्या (जिस में साँस नही आती)ऐसे नर्क में जायेगा ।।।२८५।।

अग्या ले फेर अफूटो होय ।। तके भर्म कुण्ड पडे नर लोय ।।
भळे सुण मार पड़े इण जात ।। भरे मुख भिष्ट बढावे हे हात ।।२८६।।

सतस्वरुपी संत का शिष्य बनकर याने संत को धारन करके उस संत का धर्म छोड देता तथा संतसे बदल जाता और जिन देवतावो को बली चढती है ऐसे देवतावो का विकारी निच माया का धर्म धारन करता है । इसकारण वह भ्रम नाम के नर्क कुंड में पड्ता है और अधिक इस जातीका भार उसपर पड्ता है कि उसके मुख में विष्टा भरकर उसके हाथ काटते है ।।२८६।।

तजे हरि नाम गहे सुर जाप ।। तका शिर मार देहे हरि आप ।।
भळे सुण नरक न खावे हे जोय ।। मैला मल मंत्र सीखे हे कोय ।।२८७।।

हरनाम जपना छोड्कर दुसरे देवताका याने पापकर्मी देवताका जाप करेगा तो उसके सिरपर हरी कालके द्वारा मार देगा और उसे नर्कमें ड्लवायेगा। और यहाँ कोई मलकट मैले मंत्र सिखेगा ।।।२८७।।

करे बस देव मंगावे हे माल ।। तिकारी हि जम कढावे हे खाल ।।
जना सुंखेद करे जग माय ।। तके नर कुंभी नरका जाय ।।२८८।।

ये ऐसे मैले मंत्र सिखकर मैले देवो को वश मे करके उस मैले देव से माल याने वस्तू मँगा लेता है तो उसकी चमडी यम निकालेगा और कोई संसार में संतजन को तकलीफ देगा तो वह कुंभी नाम के नर्क मे जायेगा।(कुंभी नर्क यानी उसका घडे के मुख इतना मुख और अंदर चार कोस लंबा तथा चार कोस चौडा और चार कोस गहरा। इतना गहरा नर्ककुंड होकर उसका मुख सिर्फ घडे के इतना होता है। उसमे पहले से अनंत जीव पडे हुये रहते है और उसी मे इस संत को तकलीफ देनेवाले मनुष्य को डाल देते है ।)।२८८।

एकु कोहो दोस बताऊँ हुँ तोय ।। भळे सुण खून अनेकुं होय ।।
सबे तुज खून बताऊँ लाय ।। जमी पे पाव न मेल्यो हो जाय ।।२८९।।

हे शिष्य मैने तुम्हे एक-एक अलग-अलग दोष बताये । और भी अनेक तरह के दोष है । यदि सभी दोष लाकर तुम्हें बताऊँ तो जमीन पर पैर भी नही रखा जायेगा ।।।२८९।।

तुजै मै छाट बड़ा कहुँ लाय ।। जका कर नरक अवसां जाय ।।
क्युँ हि कर खून मिटे नहि कोय ।। तिके सुण दोष बताऊँ हुँ तोय ।।२९०।।

अब मै तुम्हें जो बडे दोष है वो बताता हूँ । उन बडे कर्मो से अवश्य वे नर्क में जाते है । उन बडे दोषोका गुनाह कुछ भी करनेसे नही मिटता है । ऐसे वे बडे दोष मै तुम्हें बताता हूँ ।२९०।

गुरां को खून न मिटे हे कोय ।। अनेकुँ हुँ धर्म उपाया हाँ होय ।।
भळे सुन नाँव लेवारी हि होय ।। तिकारा खून न छूटे हे कोय ।।२९१।।

एक गुरुका किया हुवा गुन्हा कुछ भी करने से मिटता नही। अनेक धर्म तथा अनेक उपाय किये तो भी गुरुका गुन्हा छुटता नही। अधिक नाम लेनेवाले संत है उनका किया हुवा अपराध छुटता नही ।।।२९१।।

आगा होय फेर धसे जग माय ।। तके सुण खून कहुँ नहि जाय ।।
भळे अे तीन बडा सुण होय ।। तके सुण खून बताऊँ हुँ तोय ।।२९२।।

और संतोके पास से शब्द लेकर भक्ती करने लगा । फिर बादमें संतोने बताई भक्ती छोड्कर संसार में धँसकर(घुसकर)संसार जैसे विकारी कर्म करनें लगा । यह गुनाह कही भी गया तो छूटेगा नही । शेष सभी गुनाहो में से ये तीन गुनाह बहुत बडे है । मै तुमको और बताता हूँ । ।।२९२।।

दोहा ।।

सुण सिष मै तो कुं कहुँ ।। बड़ा दोष इम होय ।।
फेरे कहे तो दोष रे ।। सरब बताऊँ तोय ।।२९३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य से कहते है कि,हे शिष्य,मै तुम्हें जो बताता हूँ वे बडे दोष इसतरह से है । ओर भी यदी कहोगे तो सारे दोष तुझे मै बताऊँगा ।।।२९३।।

सिष वायक ।। दोहा ।।

हो गुरदेवजी बड़ा दोष किम छूटसी ।। सो मुझ कहो उपाय ।।
ओर कर्म मै काहा सुणूं ।। जे हर भजियाँ जाय ।।२९४।।

शिष्य ने गुरुदेवजी से कहाँ कि हे गुरुदेवजी,यह बडे दोष कैसे छूटेंगे?इसका उपाय मुझे बताईयें और दुसरे कर्म मै क्या सुनूँ जो गुनाह रामनाम के भजन करने से मिट जाते है।२९४।

गुरू वायक ।। छंद मोतीदान ।।

बड़ा सुण कर्म गळे इम जाण ।। गुरां कूं सीस निवावे हे आण ।।

सबे सुण दोष इमे गळ जाय ।। गहे हर नाँव गुरापे आय ।।२९५।।

गुरु ने कहाँ हे शिष्य,ये बडे कर्म इस प्रकार से गल जाते है । वे बडे कर्म सिर्फ गुरु के आगे सिर झुकाने से ही कट जाते है । दुसरे सारे दोष ऐसे गल जाते है । सतगुरु के पास जाकर रामनाम धारन किया तो सभी दोष मिट जाते है ।।।२९५।।

कर्म अनेक न लागे हे कोय ।। होवे सब रद कियोड़ा हा होय ।।
परमेसर नाँव अपरम्पार ।। लगे दुष्ट कर्म रहे सब लार ।।२९६।।

सतगुरु के पास जाकर हर नाम धारन कर लेने के बाद दुसरे कोई भी अनेक कर्म जो होंगे वो कर्म कुछ भी नही लगेंगे । और पहले के जो किये गये कर्म है वे गुरु के पास जाकर हरनाम धारन करने से रद्द हो जाते है । परमेश्वर का नाम अपरंपार है । जो दृष्ट कर्म लगे है वो पिछे छूट जाते है ।।।२९६।।

सिष वायक ।। छंद मोतीदान ।।

कहे सिष फेर सुणो गुरूं देव ।। भक्त बमेख बतावो हो भेव ।।
बिना तुम ओर कहे कुण आय ।। निरणा बिन भर्म सबे नहिं जाय ।।२९७।।

शिष्य ने कहाँ कि,हे गुरुदेवजी और सुनिये। भक्ती का विवेक और भक्ती का भेद मुझे बताईये । हे गुरुदेवजी,आप के सिवा मुझे दुसरा कौन आकर बतायेगा?और आपके निर्णय किये बिना मेरा भ्रम नही जायेगा ।।।२९७।।

हवे जम लोक कहो गुर देव ।। केते प्रवाण कटीने हे भेव ।।
कहिजे आप सब बिध कर्म ।। धीरज ग्यान कहो बिध धर्म ।।२९८।।

हे गुरुदेवजी अब वह यमलोक मुझे बताईये । उसका क्या प्रमाण है? वह यमलोक किस तरफ है?आप सभी विधी के कर्म बताईये । उसका धीरज ज्ञान बताईये और उसकी विधी और धर्म यह सब मुझे बताईये ।।।२९८।।

गुरू वायक ।। छंद मोतीदान ।।

सुणो सिष भेव बताऊँ हुँ तोय ।। बा मे कर लोक जमा को हो होय ।।
चोड़ो सुण जोजन सेंस हजार ।। ऐतो हिं लांबो ऊँचो बिस्तार ।।२९९।।

गुरु शिष्य से बोले,कि हे शिष्य,मै तुम्हें भेद बताता हूँ उसे सुनो । बाये हाथ की ओर यम का लोक है । दस लाख योजन चौडाई है और इतना ही लंबा और उँचा उस यमलोक का इतना विस्तार है ।।।२९९।।

चहुँ दिस पोल्याँ एकी की हि होय ।। तिकारा भेव बताऊँ हुँ तोय ।।
पूरबी पोळ तके नर जाय ।। घणा सुख संपत माय समाय ।।३००।।

उस इतने बडे यमलोक की चारो दिशावो में चार दरवाजे है । (एक पूरब की ओर,दक्षिण की तरफ एक तथा पश्चिम को ओर एक और उत्तर की ओर एक इस तरह से चारो दिशावो में चार दरवाजे है) । उसका भेद मै तुम्हें बताता हूँ । पूर्व दिशा के दरवाजे से जो जन जाते है वे बहुत से सुखो में और संपत्ती में जाकर मिलेंगे ।।।३००।।

करे सुण लील बिलास अनेक ।। चाय मन भोग सबे सुख पेख ।।
भळे सुन उत्तर पोळ बखाण ।। ज्याँ हां सुर राज घणा सुख जाण ।।३०१।।

पूर्व दिशासे जानेवाले वहाँ अनेक तरहकी लीला और अनेक तरहके विलास करते है । उनके मन को लगे वो भोग और सभी सुख वे वहाँ देख सकते है । और भी सुनो । उत्तर की और के दरवाजे का वर्णन करता हूँ । वहाँ देवतावों का राज्य है और वहाँ बहुत तरह के सुख है । ।।३०१।।

अनंता हिं नाद घुरे घम घोर ।। सुखि बोहो जीव हुवे ऊण ठोर ।।
इच्छा मन माय जके फळ खाय ।। सुणो सुख पार अपारूं हि मांय ।।३०२।।

वहाँ अनंत प्रकार के नाद का घनघोर शब्द गरजते रहता है । उस स्थानपर सभी जीव बहुत सुखी होते है । उनके मनमे जो इच्छा होती है वे फल वो खाते है । वहाँ के सुखोका पार नही । वहाँ अपार सुख है ।।।३०२।।

पिछमी पोल कोऊं नर जाय ।। घणा जुग सुख भुगते मांय ।।
लंकाऊ पोळ ताहाँ जम लोक ।। बोहो दु:ख मार पडे गल तोख ।।३०३।।

और पश्चिम की ओर के दरवाजेसे जो भी स्त्री-पुरुष जाते वे वहाँ बहुत युगोतक सुख भोगते और दक्षिण की तरफ यमलोक है । वहाँ बहुत दु:ख है । दक्षिण की तरफ जानेवाले जीवोपर बहुत मार पडती है और उनके गले में तोख जकड बंद करते है ।।।३०३।।

कहयो मै लार सुणो बिध भाग ।। तके सब दुख पडे इण जाग ।।
कहाँ लग भेव बताऊँ तोय ।। महा दु:ख मार जमाकी होय ।।३०४।।

उस यमलोक का मैने पिछे वर्णन किया ही है उसकी सभी विधी पिछे बताई ही है । उस स्थानपर पिछे कहे गये दु:ख जीवोपर पडते । उसका भेद कहाँ तक तुम्हें लाकर बताऊँ । वहाँ महादुख यम की मार है ।।।३०४।।

कयाँ बिध बेतन आवे हे कोय ।। हुकम हुकम तिहुँ लोक में होय ।।
सुणो सिष दुख तणा नहिं छेह ।। छुछम सा सोज कया हे एह ।।३०५।।

वह बताने से उसकी विधी और विचार नही आता है । हुकम-हुकम तिहूँ लोक मे होय याने तीनो लोको मे यम के हुकूम के प्रमाण से होता है । सभी जन यम के हुकूम को मानते है । वहाँ के दुखो का कोई अंत नही है। फिर भी मैने थोडासा खोजकर बताया है । ।।३०५।।

सिष वायक ।। दोहा ।।

हो गुरूदेवजी जम लोक च्यारूं दिशा ।। चार पोळ अे होय ।।
किस बिध न्यारा छांट के ।। जाता हे नर जोय ।।३०६।।

शिष्यने कहा,कि हे गुरुदेवजी,यमलोकके चारो दिशावोमें चार दरवाजे है । इन चारो दरवाजो में से मनुष्य किसतरह से अलग-अलग करके जाते हुये दिखाई देते है ।।।३०६।।

गुरू वायक ।।

हे सिष जेसी करणी जो करे ।। मृत लोक के मांय ।।
तिण कारण जम छाट के ।। पोळ पोळ ले जाय ।।३०७।।

गुरु ने कहाँ,कि हे शिष्य,ये जीव इस मृत्युलोकमे जैसी करनी करते है उन करणीयोंके कारण यम उसमे से अलग-अलग चुनकर उन उन दरवाजो से ले जाते है ।।।३०७।।

सिष वायक ।।

हो गुरूदेवजी कुण करणी कर जीव ओ ।। पिच्छम पोल कूं जाय ।।
न्यारी न्यारी छांट के ।। च्यारूं कहो बजाय ।।३०८।।

शिष्यने कहाँ हे गुरुदेवजी,कौनसी करनी करके ये जीव पश्चिम दरवाजेसे जाते है । ये अलग-अलग छाँटकर चारो दरवाजो के भेद मुझे बताईये ।।।३०८।।

गुरू वायक ।। छंद मोती दान ।।

सुणो सिष भेद बताऊँ तोय ।। करे जिग जाग पुन्यारथ लोय ।।
भळे उपकार दया घट मांय ।। जके नर पूरब पोळया जाय ।।३०९।।

गुरु ने कहाँ,कि हे शिष्य,इसका भेद मै तुम्हें बताता हूँ । कोई यज्ञ करता है और होम करता है तथा पुण्यारथ करता है वे लोग तथा जो जीवो पे उपकार करते है और जिनके घट में दया है ऐसे मनुष्य पुरब के दरवाजे से जाते है ।।।३०९।।

कथे नित ग्यान सुरां सुभ सेव ।। भजे अवतार तीनुं सत्त देव ।।
करे तप त्याग जोरावर आय ।। तके नर उत्तर पोळयां हां जाय ।।३१०।।

और जो मायाका ज्ञानका कथन करते है। शुभ-शुभ देवोंकी सेवा करते है। रामचंद्र, श्रीकृष्ण ऐसे अवतारों को भजते है तथा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन तीन देवोंको सत्त मानते है और बडी कठिन तपस्या करते है,जबरदस्त त्याग करते है ऐसे मनुष्य उत्तर दरवाजे से जाते है ।३१०।

रटे निज नाँव न केवळ नित्त ।। धरे उर माहि अफूटो हो चित्त ।।
पुरा गुर धार करे नित सेव ।। बिना हर ओर न माने हे देव ।।३११।।

और कोई हमेशा नि कैवल्य नामका रटन करता है तथा हृदयमे चित्त उल्टा धरते है, (चित्त मे आये उसके विरूद्ध बाते करते),ऐसी धारणा रखते है। और पूर्ण गुरू धारण करके,उस गुरू की नित्य सेवा करता है तथा हर के अलावा दूसरे देव को नही मानता है। ।। ३११ ।।

सजे सत्त जोग काया घट माय ।। जके सुण पिछम पोळयां हाँ जाय ।।
करे सो कर्म बोहो बिध आय ।। तके सुण दखिण पोळया हाँ जाय ।।३१२।।

और इस शरीरसे साधकर,इस घटमे ही सत्य योग की साधना करते है । वे पश्चिम दरवाजे से जाते है और दूसरे अनेक तरह के बुरे कर्म बहुत से करते है,वे दक्षिण के दरवाजे से जाते है । ।।३१२।।

स्वर्ग अे पोळ कही सब सुध ।। बोहो बिध रीत सम झले बुध ।।

हवे सुण सिष इऊँ अे होय ।। सिंभु सा बेण सुणाया हे सोय ।।३१३।।

स्वर्गके सभी दरवाजे खोजकर मैने तुम्हें बताया । वह बहुत तरह के विधी की रीती मन और बुध्दीसे तुम समझ लो और भी हे शिष्य सुनो,ये ऐसे जरासे वचन मैने तुम्हें बताया हूँ ।३१३।

शिष वायक ।। दोहा ।।

हो गुरूदेव जी धिन्न आप हो ।। धिन्न मेरो अवतार ।।
तुम सरणे मै आय के ।। पायो भेव अपार ।। ३१४ ।।

शिष्य ने कहाँ,कि हे गुरुदेवजी,आप धन्य हो और मेरा अवतार भी धन्य है । आपकी शरण में आकर मैने अपार भेद पाया ।।।३१३।।

मेरे मन अबलाख हे ।। अेक ओर गुरू राय ।।
जिण जिण पोळयाँ पोंचिया ।। याँ किम जाणी जाय ।।३१५।।

हे गुरुराय,मेरे मन मे एक और अभिलाषा है कि,यहाँ मनुष्य मरते है तो वे कौन किस दरवाजे से गया यह यहाँ कैसे समझा जायेगा ? ।।३१५।।

याँ किम जाणी जाय ।। भेद यां को मुज दीजे ।।
कृपा कर गुरूदेव ।। छांट निरणा सब कीजे ।।३१६।।

यह जीव किस दरवाजेसे गया है यह यहाँ कैसे समझमें आता है इसका भेद मुझे दिजिये । हे गुरुदेवजी,कृपा करके उसका सब अलग-अलग करके निर्णय किजीये ।।।३१६।।

गुरू वायक ।। छंद मोतीदान ।।

हे सिष या सुण युँ गम होय ।। तिका को मै भेव बताऊँ तोय ।।
काया सो हो हंस तजे तिण बार ।। भेदी जन आण लखे संसार ।।३१७।।

गुरु ने कहाँ,कि हे शिष्य,इसकी यहाँ ऐसे जानकारी होती है उसका मै भेद तुम्हें बताता हूँ । इस काया को यह हंस जिस समय छोड्कर जाता है इस संसारमे जो भेदी जन है वे यह जीव किस दरवाजे से गया वह जान लेते है ।।।३१७।।

खुले सो काया कंवळ जाण ।। तहाँ होय हंस बिछुटे हे आण ।।
वहाँ की पोळ याहाँ यह होय ।। खण्डे पिण्ड राम बणाई हे जोय ।।३१८।।

हंस निकलता है उस समय शरीर के जो कमल खुलते है उसी में से यह हंस निकला ऐसा समझना चाहिये। वहाँ का दरवाजा है वैसे ही यहाँ का है। रामजी ने खंड की हकीकत सारी पिंड में बनाई है उसे देख लो ।।।३१८।।

वहाँ जिण पोळ ले जावे जम ।। याहाँ तिण घाट कडावे दम ।।
सुणो सिष भेव इमे यह होय ।। वाहाँ यहाँ रीत कहिं मै तोय ।।३१९।।

वहाँ जिस दरवाजेसे यम जीव को ले जाते है यहाँसे उसी घाटसे साँस निकाल लेते याने साँस के साथ जीव निकाल कर ले जाते है । हे शिष्य,इसका भेद यह ऐसा है । वहाँ की और यहाँ की रीती मैने तुम्हें बतायी ।।।३१९।।

सिष वायक ।।

पुरब पोळ तके हंस जाय ।। याहाँ को घाट खुले गुरू आय ।।
इना को भेव कहो सब बाट ।। किसी वाहाँ पोळ किस्यो याहाँ घाट ।।३२०।।

शिष्य ने गुरुदेवजीसे कहाँ कि हे गुरुदेवजी,पूरबके दरवाजेसे जो हंस जाते है तो यहाँ उनका कौनसा घाट खुलता है?इसका सभी भेद और इसके सारे रास्ते मुझे बताईये । वहाँके जिस दरवाजेसे जीवको ले जाते है तो यहाँ जीवको ले जाते समय कौनसा घाट खुलता है? ।३२०।

गुरू वायक ।।

सुणो सिष तोय बताऊँ घाट ।। पुरबी पोळ याहाँ मुख बाट ।।
भळे सुन घ्राण स दम खुलाय ।। जके हंस उत्तर पोल्या जाय ।।३२१।।

गुरु ने कहाँ कि हे शिष्य इसका घाट बोलकर बताता हूँ वह सुन । वहाँ जिस जीव को पूरब दरवाजे में से ले जाते है उस जीव को यहाँ मुख के रास्ते से निकालते है और जहाँ नाक में से जिसका साँस याने जीव निकालते है उस जीव को नाक के दरवाजे में से निकालते है वहाँ वह जीव उत्तर के दरवाजे से जाता है ।।।३२१।।

खुले चख नैण सुणो इण देह ।। तके हंस पिछम पोळस नेह ।।
गुदा लिंग घाट याहाँ यह जाण ।। वहाँ सुण दक्षिण पोळ बखाण ।।३२२।।

और जिस देह में जिसकी मरते समय,आँखे खुली रहती है,उस हंस को पश्चिम के दरवाजे में से ले जाते है । और यहाँ गुदा के रास्ते और लिंग के रास्ते से,जिस जीव को ले जाते है,उस जीव को वहाँ दक्षिण के दरवाजे में से ले जाते है ।।।३२२।।

कहे सिष फेर सुणो गुरू आय ।। दिसे नहिं हंस काहाँ होय जाय ।।
किसी बिध जाण पड़े गुरूदेव ।। तको मुज सोज बतावो हो भेव ।।३२३।।

शिष्य ने कहाँ हे गुरुजी और सुनिये। यह हंस जाते समय कहाँ से गया यह तो कुछ दिखाई देता नही फिर हे गुरुदेवजी यह कैसे जाना जाता है?इसका खोजकर मुझे भेद बताईये ।३२३।

याहाँ होय हंस गयो ते तीक ।। तिका गुरू मोह बतावो हो लीक ।।
सुणो सिष फूल खुले सोई जाण ।। ताहाँ होय हंस बिछुटो हो आण ।।३२४।।

यह यहाँ से जल्दी से हंस गया है तो गुरुजी उसके गये हुये रास्ते की लीक याने चिन्ह मुझे बताइये । गुरु ने कहाँ हे शिष्य,जीव निकलता है तब जो फूल खुला उसमे से यह जीव गया ऐसा समझ लो ।।।३२४।।

कहे सिष फेर सुणो गुरूदेव ।। अे तो हद च्यार बताया हे भेव ।।
हवे ओ भेव कहो गुरू आय ।। मिले जे मोख काहाँ होय जाय ।।३२५।।

शिष्य ने गुरुदेवजी से कहाँ,गुरुजी और भी कहता हूँ उसे सुनिये । ये तो आपने हद के ही चारो दरवाजो का भेद बताया । तो गुरुदेवजी,यह भेद आप मुझे बताईये कि जो मोक्ष में

जाकर मिलते है वे यहाँ किस रास्ते से जाते है ।।।३२५।।

तकांरो भेव कहयो नहिं मोय ।। वहाँ परम मोख यहाँ काहाँ होय ।।
सुणो सिष अेह अटे सेनाण ।। त्रबेणी शीश बैकुण्ट बखाण ।।३२६।।

तो मोक्ष किस तरफ से जाते है इसका भेद आपने मुझे बताया नही। वहाँ परममोक्ष मे जाते है वे यहाँ इस शरीर मे से कहाँ से निकलते है। गुरु ने कहाँ कि हे शिष्य सुनो, इसका यहाँ यह सेनान याने चिन्ह है । त्रिवेणी के उपर बैकुंठ है ।।।३२६।।

भळे तुज बाट बताऊँ हुँ जोय ।। वाहाँ की गेल याहाँ आ होय ।।
दशमो द्वार खुले जब आण ।। तबे सुण मोख पहुँते हे जाण ।।३२७।।

और भी तुम्हें मै रास्ता बताता हूँ वहाँ का रास्ता यहाँ है। जब दसवाँद्वार यहाँ खुलेगा तभी वह हंस मोक्ष में जायेगा ।।।३२७।।

याहाँ ओ घाट जड़यो रहे जोय ।। तहाँ लग हंस न पहुँतो हे कोय ।।
बड़ी याहाँ पूंछ पराक्रम जाण ।। दशमो द्वार न खुल्यो हे आण ।।३२८।।

जब तक दसवाँद्वार यहाँ न खुलकर बंद रहेगा तब तक कोई हंस मोक्ष में पहुँचा नही। यह दसवाँद्वार खोलने की बडी पहुँच और बडा पराक्रम है। जबतक दसवाँद्वार खुला नही । ।।३२८।।

ताहाँ लग फेर धरे अवतार ।। काहाँ सिध साध पीर संसार ।।
दशमो द्वार खुल्या बिन देव ।। सदा उर आस करे यह सेव ।।३२९।।

तब तक पुन: जनम धारन करना ही पडेगा। चाहे सिध्द हो या साधू हो। चाहे संसार में पीर हो या संसार में कोई भी हो दसवाँद्वार खुले बिना याने दसवेंद्वार की विधी धारन किये बिना ब्र.वि.म.इन देवोकी सेवा करते है और यह देव इस जीवकी आशा करते है।।३२९।।

।। इति ग्रभ चितावणी ग्रंथ संपूरण ।।